जैनतीर्थयात्रा

बाबू प्रभुदयालु और ज्ञानचंद्र कृत

जिस को

बाबू ज्ञानचन्द्र जैनी ने छपवाया

JAIN RELIGIOUS TRACTS SERIES
No 37.

सन् १९०१

मूल्य ।।।) मिलने का पता:—

बाबू ज्ञानचंद्र जैनी, मालिक दिगंबर जैन
धर्म्म पुस्तमालय लाहौर

पन्जाब एकोनामीकल प्रेस लाहौर में छपी।

नोटिस

यह पुस्तक लाला प्रभुदयालु साहिब सब-ओवरसियर पुत्र लाला भजनलाल सिंगल गोत्री अग्रवाल जैनी मुकाम रामपुर जिला सहारनपुर निवासी और हमने बनाई है ॥

चूंकि लाला प्रभुदयालु जी ने भी अपनी कृति का हक़ हमको दे दिया है इसलिये यह पुस्तक हमने अपने नाम से रजिष्टरी कराई है और कोई न छापे ॥

बाबू ज्ञानचन्द्र जैनी,
मालिक दिगबर जैनधर्मपुस्तकालय लाहौर

॥ भूमिका ॥

यहसर्व जैनीजानतेहैकि सिद्धक्षेत्रादि तीर्थों की यात्रा अशुभकर्म्म रूपी बन्धन के काटने को बड़ी तेज छैणी है और खास कर श्रीसम्मेद शिखरजी की यात्रा तो जो एक बार भी शुद्ध भाव से कर लेता है उसकी तो ४९ भव के अन्दर अन्दर निश्चयसे ही मुक्ति होजाती है इसलिये हमारी मुद्दतसे यह अभिलाषा थी कि हम श्रीसम्मेद शिखर व गिरनार जी की तरफ की यात्रा करके एक ऐसी पुस्तक बनावें कि जिसके पढ़ने से हर एक जैनी हिन्दुस्तान की सर्व यात्रा एक बार सफरकरने सेही करआया करें क्योंकि अकसर करके जैनी भाईजब यात्रा

को जाते हैं तो रास्ते का ठीक हाल न मालूम होने के कारण यह विचारते रहते हैं कि

१ हम को कौनसे रास्ते से सफरकरनाचाहिये।
२ रास्ते में कहां कहां रेल बदलेगी ॥
३ स्टेशनों पर सवारी मिलेगी या नहीं ॥
४ स्टेशन से जाकर किस जगह उतरना होगा
५ वहां कोई जैनमन्दिर और धर्मशालाहैयानहीं
६ वहांपूजनऔरखानेकासामानमिलेगायानहीं
७ कौनकौनसातीर्थ किसकिस नामसेमशहूर है
८ रास्ते में कोई यात्रा रह न जावे ॥

इस प्रकार का बहुतसा फिकर किया करते हैं और रास्ते का पूरा हाल मालूम न होने के कारण बीच में कई एक यात्रा रह भी जातीहैं, और बहुत तकलीफ उठानी पड़ती है सो इस तकलीफ के दूर करने के वास्ते लाला प्रभु

दयालु जी ने यात्रा करके यह पुस्तक हमारे पास बनाकर भेजी थी परन्तु उन्होंने केवल तीर्थों और मार्ग का ही हाल लिखाथा सोहम ने इस पुस्तकको बढाकर इसके पांच अधिकार बनाये हैं प्रथम अधिकारमेंयात्रा करने की विधि सेहत हिफाजत के कायदे और यात्रा को जाने समय क्या क्या सामान साथ ले जाना चाहिये यह सब कुछ लिखा है। दूसरे अधिकार में जो पुस्तक लाला प्रभु दयालुजी ने भेजी थी, वह छापीहैचूंकि श्रीसम्मेदशिखरआदिपूर्वदिशा और दक्षिण देश की यात्रा हम ने भी करीहुई हैं इसलिये जो जो बात मुनासिब जानी अपनी यादगारी से या-दूसरे यात्रा करे हुए भाइयों की सहायता से उस में और भी बढ़ाई हैं ॥ तीसरे अधिकारमेंचूंके बहुत से भाइयों को दर्शन

पाठ नहीं आते इसलिये उनके वास्ते कुछ द-र्शन स्तोत्र लिखे हैं। चौथे अधिकार में चूंकि बाजेबाजे यात्री सिद्धक्षेत्रों पर जाकर पूजा क-रना चाहते हैं और बाजे वकत पूजाकी पोथी मुयस्सिर नहीं होती इसलिये कुछपूजा लिखी है पाञ्चवें अधिकार में चूंकि परदेश में जाकर कच्चा पक्का खाना पड़ता है इसलिये कुछ हाजमा बगैरा की दवाई लिखी हैं॥

सो जो जैनी भाई तीर्थ यात्रा को तशरीफ ले जावें उन्हें चाहिये कि यह पुस्तक साथ ले जावें और इस अनुसार प्रवरतें॥

जैनतीर्थयात्रा

प्रथम अधिकार

अब हम यह लिखते हैं कि यात्रा को जाने के समय कौन कौन वस्तु साथ लेजानी जरूरी हैं रास्ते में किस प्रकार अपनी तन्दुरस्ती और धन की रक्षा करें और यात्रा किसप्रकार करें ॥

१ जब लोग तीर्थ यात्रा को जाते हैं तो बाजे बाजे मनुष्य रुपये नेवलीयों में भरकर कटी में बांध कर लेजाते हैं जिस से हरवकत कटी में बोझ बंधारहने से मारे बोझ के रात को नींदनहीं आती पेडूभिंचा रहने से बाजे वकत पिशाव रुक ने लगता है स्नान करती दफे नेवली उतार

कर रखने से कई बार ठग वगैरह लेजातेहैं यदि गठड़ी में बांध करया संदूकड़ी में भरकर लेजावें तो चोरादिकों केसंदूकों पर पडने काभयरहता है इस लिये इन सब तकलीफों से वचने के वास्ते सब से आसान तरीका रुपयों की जगह नोट और पौंड साथ ले जानेका है पौंड अठन्नी समान सोने का सिक्का होता है जो १५ रुपये में बड़े शहरों में डाकखाने सरकारी खजाने या सराफों से मिलसकता है मोतबिर जगह से खरीदो ताकि खोट न निकले ॥

२ छोटा नोट ५) या १०) या २०) का खरीदो बड़ा मत खरीदो बगैर जमानत के नहीं बड़ा विकता सो परदेश में कौन ज़ामिन बनता है ॥

३ छोटा नोट या पौंड एक आना तथा दो

पैसे बट्टे से हर शहर में बिक सकता है खतरे और तकलीफ से बचने के वास्ते थोड़े से नुकसान की परवाह नहीं करनी चाहिये ॥

४ नोटों को या पौंडों को किसी मजबूत पाकट (जेब) में डाल कर तागे से सींदो जब जरूरत हो तागा उधेड़ कर निकाल कर बाकी को फिर उसी तरह सींदो ताकि सोते वक्त या हल ते चलते निकल न पड़ें ॥

५ जिस कपड़े की पाकट में नोट या पौंड डालो उसके ऊपर और वस्त्र पहनना चाहिये ताकि ठग वगैरह जेब न काट सकें ॥

६ जब कभी वह कपड़ा निकालना पड़े तो उठाकर मत रक्खो अपनी स्त्री पुत्र पुत्री बहन आदि को या मोतबिर आदमी को सौंपदो और उसको कहदो कहीं रक्खे नहीं खबरदार रहे या

संदूक में रख कर संदूक चौकस सपुर्द करदो ॥

७ सारा धन केवल अपने पासही न रक्खें थोड़े थोडे रुपये अपने कुटंबियों के हर एक के पास होने चाहिये क्योंकि बाजी दफे रेल में बहुत मुसाफिर होने के कारण और रेल छोटे स्टेशनों पर जरा सी देर ठहरने के कारण आदमी रह भी जाता है जब उसके पास कुछ दाम नहीं होता तोवह सख्त तकलीफउठाता है

८ जहां तक हो अपने साथ असबाब कम लेना चाहियेजियादा असबाबसाथ होने से रेल में चढ़ती उतरती दफे बड़ी तकलीफ होती है और रेलके कर्मचारी बहुत तंग करते हैं ॥

९ रास्ते में बाजेबाजे इलाकों में स्टेशनों पर खाना मोलनहीं मिलता यदि मिलताभी है तो बहुत ही खराब । इसलिये रसोई बनाने के वास्ते

बर्तन अपने साथ जरूरही लेजाने चाहिये जब यात्रा को जाना हो तब नजदीक वालेशहर से हलके हलके नए बर्तन खरीद लेने चाहियेंताकि भारी बर्तनों का बहुत बोझा उठाए उठाए न फिरना पड़े बर्तन इतने हों थाली, लोटा, तवा, करछी, चमचा, चिमटा, गिलास कटोरी कटोरदान जिस में दो तीन वकत का खाना आसके घी के वास्ते ऐसा बर्तन जिस का मुंह बंद करसकें ताकि रास्ते में घी न गिरे हर जगह अच्छा घी नहीं मिलता जरूर कुछ साथ रखना पड़ता है ! बाटी आटा गूंधने को यदि घरके कई मनुष्य हों तो एक लोहे का चूल्हा और एक जरासी कढ़ाई एक जरासी झरी भी जरूर ही साथ लेनी चाहिये ताकि जहां चाहें झट से आग बाल कर पूरी पकालें दाल

तरकारी पकानेके वास्ते देगची पतीली भगोणा वगैरा खटाई रखने को काठ या पत्थर या रांग की कटोरी यदि घर के कई आदमी साथ में हों तो एक लोहेकी अंगीठी भी साथ ले लेनी चाहिये यदि पान खाने की आदत है तो पानदान भी साथ ले लेना चाहिये यदि छोटा बच्चा गोद में हो तो उस को दूध पिलाने को तूंती चमचा वगैरहः भी साथ लेना चाहिये॥

१० एक लालटैन हरीकेन यानी गोल जरूर साथ लेनी चाहिये बैल गाड़ी के सफर में और मकान में रात को जलाने की जरूरत है॥

११ आग जलाने को दीवासलाई की डिबिया जरूर साथ लेनी चाहिये॥

१२ कुछ कार्ड लिफाफे कागज कलम दवात चिट्ठा पत्री लिखने को जरूर साथ लेनी चाहिये

१३ तरकारी भाजी फुलफुलेरी बनारने को एक चक्कू भी जरूर साथ लेना चाहिये ॥

१४ एक तालाभीजरूरसाथलेजानाचाहिये क्योंकि जब कहीं ठहरना पड़ता है तो बाहिर जाने के समय मकान में असवाबरखकरताला लगाने की हाजत होती है ॥

१५ पानी खेंचने को डोरी खूब लंबी लेनी चाहिये क्योंकि वाजे वाजे कुवों में पानी बहुत नीचे होता है॥

१६ पानी छानने को छलना जरूर साथ लेना चाहिये जो भाई छान कर पाणी नहीं भी पीते उन को यात्रा में तो जरूर पानी छानकर पीना चाहिये क्योंकि यह हमारा श्रावक पने का चिन्ह है अपना चिन्ह छोड़ना योग्य नहीं दूसरे दक्षिणदेश के पानी में नारवाजानवर होता

है जिस के पियेजाने से नारवा निकल आता है इस लिये यात्रा में पानी छान कर ही पियो छान कर ही रसोई में लगाओ परन्तु इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि जब तक नलके का पानी मिल सके कूवे का नहीं पीना क्योंकि कूवे के पानी में अनेक बीमारी उत्पन्न होने के कारण मिले हुए रहते हैं नलके का जल साफ करके छान कर नलकों में भेजा जाता है ॥'

१७ कुछ छोटी बड़ी कोथलियां भी सिलवा कर जरूर साथ ले जानी चाहियें क्योंकि यात्रा में आटा चांवल दाल वेसन चीनी नमक मिरच वगैरा खरीद कर साथ लेजाना होता है ॥

१८ रास्ते में मसाला कूटना साफ करना कठिन होता है इस लिये कुछ मसाला भी साफ कर के कूट कर साथ लेना चाहिये ॥

१९ रास्ते में कच्चा पक्का खाने में आता है इस लिये कोई दरद रफे करने की हाजमा की व दसतावर दवाई भी साथ लेनी चाहिये सरद हवा में स्नान करने से सरदी होजाने का भय रहता है इस लिये कुछ चाय और लौंग सूण्ठ पीपल बादाम अजवैन वगैरा भी साथ लेनी चाहिये यदि स्त्री की गोद में छोटा वच्चा है तो उस के वास्ते जन्मघूटी मुंह आया हुवा आछा करने की दवा दुखती हुई आंखें अच्छी करने को जिसत वगैरा भी जरूरसाथ लेलो ॥

२० सूई तागा भी जरूर साथ लेना चाहिये यदि साथ में स्त्री भी है तो कुछ कपड़ा कतरने वगैरा को कैंची भी साथ लेनी चाहिये ॥

२१ कपडे इस प्रकार साथ लेने चाहियें ॥

१ विसतर मामूली क्योंकि दक्षिण में बहुत सरदी नहीं पडती ॥

२ फी मनुष्य चार पांच जोडे कपड़ों के हों क्योंकि कपडे रास्ते में धुलवाने का खास खास स्थानों के सिवाय कहीं मौका नहीं मिलता ॥

३ विसतर के इलावे एक मामूली दरी या कोई और कपड़ा दोरड़ा लेवा वगैरा भी जरूर साथ लेना चाहिये ताकि जब कहीं उतरो तो उस को जमीन पर विछाकर उस के ऊपर असवाब रखो बैठो जब चलो उस में विसतर बांधदो ताकि विसतर मैला नहो ॥

४ पहाड पर चढ़ने के समय कमर में बांधने को पेटीयें या साफे साथ लेने चाहिये

ताकि उन को कमर में बांध कर कमर
कसी रहने से थकावट के सबब यात्रा
करने में परनाम व शरीर सिथलनहो
५ फी मनुष्य दो दो तीनतीन जोड़े कोरे
मौजों के सूती जरूर साथ लेने चाहियें
ताकि पहाड से उतरने के वकत पहन
लिये जावें जिस से पैर न जलें और
परिक्रमा में पहन कर चलने से पैरों
में कंकरी न चूभें क्योंकि नंगे पैरों
चलने से पैरों के तलवों में छाले पड-
जाने से दूसरी यात्रा करने की सामर्थ्य
जाती रहती है परन्तु यह मौजे पवित्र
रखने चाहियें जूतों से नहीं लगें ॥
६ एक विसतर बंध या बिसतर बांधने
को रस्सी जरूर लेनी चाहिये ॥

७ पहाड़ पर सामग्री लेजाने को जितने मनुष्य कुटम्ब के जावें उतनी वागलियां जरूर सी कर साथ लेजानी चाहिये क्योंकि पहाड पर और वस्तु तो यात्रि क्या साथ लेजावे आपही कठिनताई से जाना पडता है॥

८ यदि स्त्री की साथ गोद में बच्चा भी है तो उस के बहुत से पोतडे और पहनाने के कपडे। कपडे धोने को सावन की टिकया भी साथ लेजानी चाहिये॥

९ हर मरद को दो धोती दो डुपट्टे हर स्त्रा को दो लहंगे दो चदर पवित्र साथ लेने चाहियें जो नहा धो कर पहाड़ आदि पर दर्शनों को जाने के वकत पहनने चाहियें॥

२२–स्त्रियों को चाहिये कि यात्रा में रंग बरंगे जडाऊ गोटे ठप्पे जरी वगैरा के काम के कपडे न लेजावें तीर्थों के दर्शनों को सज धज कर जाना योग्य नहीं सादे लिवास में वैराग्य रूप परणामों से यात्रा करनी चाहिये ॥

२३ निशियों पर सामग्री चढाने को छोटी छोटी रकाबियां और जाप करने को माला भी साथ ले लेनी चाहिये ॥

२४ रास्ते में स्वाध्याय के वास्ते कोई जैनग्रंथ भी साथ लेना चाहिये ग्रन्थ जहांतक हो आध्यात्मिकहोयदि ग्रन्थनहीं पढ सकते तो कोईस्त्रोत्र पाठकी पुस्तकतो साथ जरूर लेनीचाहिये तीर्थों में जाकर जटल्लें मारनेकानामयात्रा नहींहै वहां ऐसेकथन पढ़ने व सुनने चाहियेंकि जिनके सुन ने व पढने से वैराग्य उत्पन्न हो ॥

२५ जितने दिन तीर्थ यात्रा में खरच हों प्रति दिन कुछ सामायिक जरूर करनी चाहिये यदि सामायिक न कर सको तो नोकार मंत्रादि का एक दो माला तो जरूर फेरनीचाहियें ॥

२६ कुछ पाई या पेसे भी जरूर साथ लेजावो सिद्ध क्षेत्रो पर अनेक दुःखित भूखित अंधे लूले लंगडे कोढ़ी वगेरा भिक्षुक होते हें यात्रा करके पहाड़ से उतरने के समय उन को अपनी तोफीक के अनुसार जरूर दान वांटनाचाहिये पुण्यउपार्जन का नाम ही यात्रा है पत्थरगाहने का नाम यात्रा नहीहै जो गृहस्थीसिद्धक्षेत्रोंपरजाकर कुछ दुःखित भूखितोंको नही बांटते उनका तीर्थकरन निष्फल है ऐसे पुरुष गोया समुद्र में डूबी मार कर रत्नों की जगह मुट्ठी में रेत लाते हैं ॥

२७–यात्रा को गमन करने के समय अपनी

बांह में स्वर्ण का अनन्त या बाजू या अंगुली में छल्ला या मुन्दरी जरूर पहन जानी चाहिये क्योंकि वाजे वकत परदेश में अकेले रहजाने के समय वा चोरी हो जाने पर इस को बेचने से निर्वाह होजाता है वरने ऐसी हालत में बड़ी तकलीफ उठानी पड़ती है ॥

२८–जो तुम आप यात्राकोजाओ तो स्त्रीको भी जरूर साथलेजावो यदि तुमही उसको यात्रा नहीं कर वाओगे तो फिर उस का उद्धार कौन करेगा मर्दकाधर्म स्त्रीकी रक्षा करणा उसकेहाथ से दान पुण्य करवाना है क्योंकि स्त्री मर्द का आधा शरीर होतीहै और उसके आधीन होतीहै यदि अपने पास सारे कुटम्ब को यात्रा कर वाने लायकधन नहींहै तो बाल बच्चेतो जब जवान होंगे अपनी कुमाईमें यात्राकर सकेंगे लेकिनस्त्री

कोतो फिर अवसर प्राप्त होना नमुमकिनहै इस लियेअपनीस्त्रीकोसाथलेजानाबहुतजरूरी है।

२९ यदि अपने शुभ कर्म के उदय से अपने पास कुछ धन की सामर्थता हे तो यदि कोई अपने रिशतेदार विधवास्त्री या धनरहित सुहागन या गरीब भाई या माता पिता सलामत हों तो उन को भी यात्रा करवा देनी चाहिये उन को यात्रा करवा देने से अपना भी महान् पुण्य का बन्ध पडता है और दूसरों का भी जीवन सुधरता है पहिले जमाने में अैसे धर्मात्मा जैनी होते थे जो अनेक जैनियों को अपने खरच से यात्रा करवा कर लाते थेसो वह पुरुष तो अब कलयुग में बहुत कम हैं परन्तु अपने रिशतेदार और कुटम्बियों का तो धन के होने परउपकार जरूर करना चाहिये ॥

३० यदि अपने पास खूब धन है और सफर में तकलीफ उठानी नहीं चाहते तो बजाय तीसरे दरजे की रेलगाडी में सफर करने के डोढे दरजे में सफर करो इस में टट्टी पिशाब के लिये पखाना भी होता है डाक की साथ हवा की तरह जाती है स्टेशनोंपरभेड बकरीकी तरह मुसाफिर खानोमेंबन्दहोना नहीं पडता अनाज कीबोरियों कीतरह रेल में मुसाफिरनहीं भरेजाते इसदरजे वाले के वास्ते बड़े स्टेशनें पर अलग रस्ते होते हैं गाडी में सोने के वास्ते तखते लगे रहते हैं। मुसाफिर रात को खूब सोते हैं॥

३१ यदिस्त्री पांचछे मासकी या इससे जियादा दिनों की गर्भवती है या बच्चा पैदा हुए तीन माससेकम हुएहैं तो उसकोसाथ नहीं ले जाना चाहिये क्योंकि पहाड़ों पर ऊंचे नीचे पैर पडने

से बहुतकुछ खराबी होने काअन्देशा होता है ॥

३२ रास्तेमें किसीके हाथका पान या खाना मत खाओ अनेकठग अमीरोंकेभेस में रहते हैं और मुसाफिरों को जहर देकर मारदेते हैं ॥

३३ सम्मेदशिखर व गिरनारजी आदिक के जो नकशे मिल सके तो उन को साथ लेजाओ ताकि पहाड़ पर चढकर यह मालूम होजावे कि यह निशी फलाने तीर्थङ्कर की हैऔर फलाना कल्याणक यहां हुवा है ॥

३४ यदि तुम अंग्रेजी जानते हो या संग में कोई भी अंग्रेजी जानता है तो रेलवे गाईड खरीद कर साथ लेलो ताकि किराया व वकत रेल का हर स्टेशन का देख सको क्योंकि रेल का वकत बदलता रहता है और किराया भी कम जियादा होता रहता है ॥

३५–जब रास्तेमें थोड़े समय के वास्ते किसी शहर की सैर करने को उतरना हो तो सारा असबाब साथ मत ले जाओ क्योंकि असबाब को साथ लिये लिये फिरने से बड़ी तकलीफ होती है ठीक सैर नहीं हो सकती दूसरे चूंगी के कर्म चारी बड़ा दिक करते हैं इज्जतदार से इज्जतदार की भी तलाशी लेतेहैं चूंगी मांगते हैं इस लिये इन तकलीफों से बचने के वास्ते अपने कुल असवाव के वंडल गठड़ी बना कर स्टेशन मास्टर की सपुरद करजाओ जब आओ उतने ही अदद उस से गिनकर लेलो जितने अदद हों उतने आने फी दिन उसको किराये क देदो ऐसा होने का रेलका कानून है ॥

३६ यदि सफर करने के समय अपने क्लास जियादा असवाब होतो वंडल बनाकर तुलवा

कर स्टेशन पर पारसल बाबू की सपुरद कर दो अपना टिकट उस को दिखाकर तीसरे दरजे में अपना १५ सेर और डौढे में वीससेर और विसतर के इलावे बधोतरी का उस को किराया देकर उस से रसीद लेलो जहां जाकर उतरोंवहां वह रसीद देकर अपना असबाब लेलो यदि उस शहर की केवल सैर करनी है तो असबाब उतरती दफे मतलो शहर की सैर कर के वापिस आक रलो ॥

३७ यदि यात्रा करते हुए या शहरो कीसैर करते हुए रास्ते में कुछ असबाब खरीदो तो यदि वह बहुत है तो एक सन्दूक में बन्द कर के रेलद्वारे माल में या पारसल में जिस में किराया कम खरच हो घर को भेजदो यदि थोड़ासा भेज नाहो तो यदि डाकखाने में थोड़ा महसूल

लगता जानो तो डाककी मारफतपारसल भेज दो ताकि रास्ते में उठाए उठाए न फिरना पड़े ओर खोए जाने व खराब होनेया टूटन फूटने से भी बचजावे॥

३८ किसी स्थानपर घर से खबर मंगानी होतो यह लिख भेजो कि फलाने शहरके डाक खाने में यह चिठी जमा रहे जब फलाने नाम का मनुष्य फलाने नगर का निवासी आवे तो उसे मिले सो उस डाकखाने से अपना नाम बताकरचिठ्ठी मांगलानी चाहिये॥

३९ यदि पहाड़ के ऊपर चढकर बहुत दूर दराज के मुकामों की सैर करनी है तो एक उमदा सी दूरबीन साथ लेतेजाओ पहाड़ पर चढ़कर उस से दूर के शहर वा जंगल देखो यदि हारमोनियम वजाना आताहै तो हारमो-

नियम भी संग लेजाओ तीर्थक्षेत्रोंपरभगवान्के प्रतिबिंबों के सामने वजा कर बीनती पूजन पद गाओ यदि फोटो उतारना आता है तो फोटो उतारने का कैमरा साथ लेजाओ सर्व क्षेत्रों का फोटो उतार लाओ नगर में पहुंच कर उन की अनेक कापी बना कर मन्दिरों या धर्म्मात्मा जैनियोंको बांटो। नौकरके लेजाने की तोफीक है तो साथमेंनोकर लेजाओ यदिकई यात्रीमिल कर अपने खरच पररसोई या औरखिदमतगार साथ लेजावेंतोयात्रामें बड़ा आराममिलता है॥

४०–रास्ते में जो शहर आवें उन की भी सैर जरूर करनी चाहिये क्योंकि सैर करने से अकल और तजरवा बढ़ता है इस प्रकार करने से एक पन्थ दो काय्र्य होजाते हैं सैर की सैर और तीर्थ का तीर्थ॥

४१–जिस मुकाम पर ठहरो यदि उस नगर या ग्राम जंगल वन आदिकमें कोई जिन मन्दिर है तो उन केदर्शनजरूर करने चाहियें ॥

४२–यात्रा में परस्त्री परधन की इच्छा मन वचन काय कर छोड़ देनी चाहिये बलकी सप्त व्यसन का त्याग करके चलना चाहिये यदि हमेशा के वास्ते सप्त व्यसन का त्याग नहीं कर सकते तो जितना समय यात्रामें खरच करो उतनेदिन तक तो जरूर ही सप्त व्यसन का त्यागकरना चाहिये ॥

४३ जब तीर्थक्षेत्रपर पहुंच जाओ तो जिस दिन जिस पहाड़ या क्षेत्र के दर्शन करने का इरादा हो तो उस से पहले दिन यदि धोती या डुपट्टा विलायत का धोया हुवा या धोबी का धोया हुवा है तो उस को पवित्र पानी से धोकर

जरूर सुकालो और सामग्री की वस्तु तैयार करलो अगले दिन के वास्ते खाने पीने की समाग्री लाकर रखलो क्योंकि अगले दिन जब पहाड़ से हारे थके घबराये हुवे आओगे तब कुछ भी नहीं कर सकोगे ॥

४४ जो कुछ पैसे पाई वगैरा या चांदी का सिक्का पुण्य करने को लेजाना हो पहले दिन भुना कर धोकर पूंछकर रख छोड़ो क्योंकि खबर नहीं वहकिस किस बूचर चमार मेहतर कोढ़ी वगैरा के छूए हुवे या अपवित्र वस्तु से ल्हिसे हुवे नीचों के मुंह में डाले हुवे हैं ॥

४५ यदि डोली की जरूरत है या गोदिये की जरूरत है या रास्ता बतलाने वाले भील की जरूरत है तो शाम को मुकरिर कर छोड़ो लालटैन में तेल भरकर वती वगैरा ठीक कर

छोड़ो जिस सिद्धक्षेत्र के दर्शन को जाना हो उस की पूजा और जो वरतन दरकार हो भंडारी से ले छोड़ो और सब काम तैयार करलो॥

४६ दर्शनोंको जानेकेदिन बहुत सुभेही उठो टट्टी वगैरा शरीर की क्रिया से फारिग होकर यदि गरम जल से स्नान करना है तो गरम करवा कर या करकेनहीं तो सरद जलसे स्नान करो फिर सारा वदन किसी साफे से पूंछ कर मरद पवित्र धोती डुपट्टा स्त्री पवित्र लहँगा चद्दर जो यात्रा करने के लिये धो सुका कर रखेंहैं उन्हें पहन कर सामग्री तैयार करके एक वस्त्र में या वागली में डाललो उसी में रकाबी डाल लो पूजनकी पुस्तक निशियोंका नकशा एक कपड़े में कमर से बांध लो हाथ में लाठी लेलो जिस के सहारे से टेक टेक कर प-

हाड़पर चढ सको एक पेटी या साफा कमर में कस कर बांध लो ताकि पहाड़पर ऊंचे चढते हुए बहुत दम न थक जावे कुछ पाई पैसे दुवन्नी चवन्नी आदिक अपनी सामर्थ के मुताबिक साथ लेलो दान केवल अपने ही हाथ से नहीं करना चाहिये बलके अपने बाकी कुटम्बियों के हाथसे भी करवाना चाहियेऔर इतने सुभ पहा-ड़पर चल दो जो पहली निशीपर दिन निकलने से पहले जा पहुंचो ॥

४७ यदि स्त्री की गोद में बच्चा है तो एक भील बच्चा गोदी में साथ ले जाने वाला लेलो उस को बच्चा सौंप दो और बड़ा सारा कपड़ा उसेदेदो ताकि यदि बच्चा रास्ते में मैला कर देवे तो वह उस कपड़े से बच्चे को साफ कर के कपड़ा लपेट लेवे और एक कपड़ा वच्चा

लकोने को उसे दो क्योंकि सुभेही पहाड़पर स-
खत ठंडी हवा चलती है ताकि बच्चे को सरद
हवा न लगे स्त्री को बच्चा मत दो यदि रास्ते
में उस के ऊपर मूत दिया या मैला कर दिया
तो उस केकपड़े अपवित्र होजाने से उसकीयात्रा
में विघ्न पड़जावेगा ॥

४८ यदि तुम्हारे शरीर में कुछ ताकत हैतो
जहां तक हो सके पहाड़ पर पैदल जाकर
दर्शन करो यदि पैदल नहीं चल सकते तो
डोली में बैठ लो एक भील रास्ते का वाकिफ
लेकर रास्ता दिखाने को उस के हाथ में लाल
टैनदेकर सुभेही पहाड़पर चल दो नोटया पौंड
पवित्रजाकटमें सीवकर पहनजावो यानेवली में
डाल कर बांध ले जावो ताकि तसल्लीरहे यात्रा
में फिकर पैदानहो और धनहिफाजत से रहे ॥

४९ रास्तेमें नौकारमंत्र पढतेहुए जिनेन्द्रदेव के चरणों में अपना मन रखते हुए जिस क्षेत्र के दर्शन करने जाते हो उस का नाम लेकर जय जय शब्द उच्चारते हुए चलेजावो यदि साथमें वृद्धपरुष हैं या कम जोर स्त्री हैं तो उन को जरा जरा बिठा कर आराम देकर साथ ले- जावो यदि साथ में दूध पीने वाला बच्चा भी है तो बच्चे की माता उसे दो दो तीन तीन घंटे बाद दूध पिलाती जावे ताकि बच्चे का कण्ठ खुश्क न हो जावे॥

५०–यदि किसी के शरीर में ऐसी गडबड है कि वार वार टट्टी आती है और यात्रा में बडा वकत लगता है रास्ते में टट्टी जाने का भय है तो ऐसी हालत में जब पहाड पर दर्शनों को जाने लगे शरीर की क्रिया से फारग हो कर

स्नान करनेसे पहिले दो चावलभर अफीम खाले ताकि रास्ते में टट्टी न आवे और जो अफीमी हैं उन को अफीम खाकर जाना चाहिये औरजो शरीर के कमजोर या बृद्धहैं यदि पहाड़पर जा कर उन को सखत पियास लगजावे कण्ठ खुश्क होने लगे तो यदि उपर बावली में निर्मल जल है तो छान कर जरासा जल पी लेवें कुछ डर नहीं गृहस्थी का परिणाम शरीर रखने से ठीक रहताहै परिणाम ठीकहोनेसे यात्रावगैरह धर्मकार्य्य ठीक होते हैं परिणामों में कलुषता पैदा होनेसे धर्म कार्य्य में शिथिलता याविघ्न होजाता है ॥

५१ जबपहिली निशीपर पहुंचो तो अपने को ऐसा खुशनसीब समझो कि गोया नौनिधिऔर आठ सिद्धी से भी बढ़ कर नियामत मिली हैं

अर्थात् जन्मजीत लिया है देखते ही जय जय कार शब्द उच्चारो निशीके साम्हने माथा टेक कर साम्हने बैठ जावो जब जरा दमकी थकावट कम होकर होश आवे तो मन बचन काय कर यह कहो कि धन्य है यह घड़ी और मनुष्य जन्म जो मुझे भी यह दर्शन नसीब हुए और कहो कि हे स्वामी धन्य हैं आप जो इस क्षेत्र से कर्म काट सिद्धपद को पधारे हो वह दिनमुझ को भी नसीब करो जो इसी प्रकार दिगम्बरी दीक्षाधार मैं भी तपकर कर्मों से रहित हो सिद्ध पद पाऊं हे स्वामी मुझे और किसी बात की इच्छा नहीं है सिरफ यही वरदान मांगताहूं कि ऐसा मौका मुझे भी मिले जो आप समान बन जाऊं इस प्रकार मनोरथ कर फिर कोई न कोई जैसा आता हो दर्शनस्तोत्र पढ़ सामग्री चढ़ादो

वा यूंही नमस्कार करलो फिर तीन परिक्रमा दे कर नमस्कार कर के चल दो इसी प्रकार सब निशियोंके याप्रतिबिम्बों केदर्शनकर जब आखिर की निशिपर आवो तो इसी प्रकार दर्शन कर यदि कोई पूजा करने की सामर्थ है तो पूजा करो वरने आखरी प्रार्थना यह करोकि हे श्रीजीफिर भी दर्शनदियो नमस्कार कर के डेरेकोचल दो रास्तेमें जोदुःखित भुखित खडेबैठेरहतेहैंउनको कुछ न कछ देते हुए डेरे पर चलेआवो इस प्रकार यात्रा करके कपडों को अलहदे रखदो ताकि फिर यात्रा के काम आवें ॥

५२ यह मत करो कि एक दिन पहाड़ के दर्शन कर के भागआवो नहीं वलकि कई दिन तक धर्म्मशाला में ठहर कर कई यात्रा करनी चाहियें कम से कम तीन वार तो पहाड़पर अ-

रूर जाकर दर्शन करने चाहियें चलने से एव
रोज पहिले पहाड़की परिक्रमा देनी चाहिये प-
रिक्रमा में पैरों में कपडे के जुते या मौजे पहिन
लेने चाहियें ताकि पैरों में छाले न पडें क्योंकि
पैरों में छाले पड़जाने से दूसरे तीर्थों की यात्रा
करनी कठिन होजाती है पैरो में तकलीफ होने
से यात्रा करने की हिम्मत टूटजाति है परिक्रमा
कर के दूसरे तीर्थों की यात्रा को चलदो इसी
प्रकार सर्व यात्रा करो परन्तु वापिस चलने से
पहिले हर एक तीर्थपर कुछ चावल अनाजक-
पडे. अपनी श्रधा अनुसार गरीबों को जरूर
बांटो गृहस्थ अवस्था में पुण्य बदून तीर्थ व्रत
बृथा हैं ॥

५३ बाजे जैनी यात्रा के समय भागे दौड़े
चले जाते हैं और जब निशि परपहुंचते हैं तो

झट से उस के ऊपर दो चावल के दाने फैंक जय बोल आगे चल देते हैं इसी प्रकार भागे भागे सब निशियों पर चावल फैंक कर झटसे पहाड़ से उतर आते हैं एक पैसा तक किसी को खैरात नहीं करते सो यह यात्रा नहीं है कोई निशीजी को चावलों की इच्छा नहींहोती या वह कोई खेत नहीं होता जो झट से उस में चावल फेंक कर चले आवें यह यात्रा नहींहै केवल पत्थर गाहना है यात्रा मन वचन काय कर भाव सहित स्थिरता के साथ बन्दना कर ने से व पुण्य दान करने से होती है इस लिये ऐसा करना योग्य नहीं ॥

५४ जिस प्रकार हिन्दुवों के तीर्थों में ब्राह्मण लोग जमा रहते हैं और यात्रियों से धन लेते हैं इसी तरह उन की देखम देखी हमारे स्थानों पर

भी बड़ी बड़ी बहियां धरे छपी हुई रसीदें लिये सजे धजे बहुत से पुरुष बैठे रहते हैं जो कहते हैं कि भाईजी कुछ भंडार में भी जमाकरावो जिन को भोले भाई पुण्य समझ कर बहुत कुछ देते हैं सो हम अपने भाइयों को समझाते हैं कि हमारे भगवान् तो परिग्रह रहित हैं उन को धन की इच्छा नहीं जो धन तीर्थों पर बहीखाते वालों को दिया जाता है वह मुफत में जाता है कुछ भी पुण्य नहीं सब जैनी लोग खाजातेहैंजिनके पास वहजमा होता है इतने उनका कामचलता रहता है इतने वह क्षेत्र की पुञ्जीगिनी जाती है जब उन का काम विगडता है वह उन का ही द्रव्य हो जाता है कोई भी वापिस नहीं देता यदि देवे भी तो हमारे भगवान् ने पूंजी क्या करनी है इस लिये उन के भंडारो में धन जमा

करने की एवज वह धन सिद्धक्षेत्रों पर दुःखित भुखितों को बांटो यदि उन में जमा ही करना है तो यह तुम्हारी इच्छा है परन्तु दुखित भुखितों को जरूर चावल अनाज कपडे पैसे थोडे बहुत अपनी श्रद्धा अनुसार बांटने चाहियें ॥

५५ जो जैनी क्षेत्रों पर जाकर जैनी यात्रियों को गिंदोडे बांटते हैं यह बिलकुल फजूल है क्योंकि अव्वल तो वह अपनी नेकनामीके लिये अपनी धनाढयता प्रगट करने को बांटते हैं दूसरे धनवानों को दान देने से कुछ भी पुण्य नहीं हो सकता पुण्य दीनों को देने से होता है सो जो जैनी यात्रा करने को जाते हैं वह दीन नहीं हैं भिखारी नहीं जो उन को दिया जावे इस लिये यह सर्व रुपया बरबाद करना है यदि ऐसी ही पुण्य करनेकी सामर्थ्य होवे तो गरीब

स्त्री या मरदों को अपने खरच पर लाकर यात्रा करवानी चाहिये ताकि दानी का दान हो दूसरों का उद्धार हो और यदि पुण्यकेही अर्थ बांटते हैं सो जो जैनी सिद्धक्षेत्रों पर जाकर पुण्य का माल लेकर खाते हें गोया वह अपनी यात्राही डबो आते हैं यह धन निर्माल्य है क्योंकि पुण्य करने वालेने क्षेत्रपर जाकर गोया क्षेत्रपर चढाया है या दान बांटाहै दानका खाना गृहस्थी के वास्ते योग्य नहीं फिर सिद्धक्षेत्रपर जा कर जहां आप दान करने को जाते हैं क्या वहां उलटा दान लेकर खावें कितना अफसोस है यह बड़ा अयोग्य कार्य्यहै हरगिज नहीं लेना चाहिये यदि कुछ भण्डार में देना है तो बतोर सराय के कराये के देदो परन्तु इस में पुण्य मत समझो हां यदि कुछ क्षेत्र की मरम्मत करवानी

है तो जो कुछ लगासको दिलखोलकर लगा दो यात्रियोंके लिये रास्ता बनानेकाबड़ा पुण्यहै ॥

५६ जहां यात्रा को जावो बूढे भीलादिक से इस बात का पता लगालिया करोकि यहां कोई और भी तीर्थ है या कभीपहले थाजो तुमनेसुना हो या देखा होजहां आज कल कोई नहीं जाता इस प्रकार पता लगाने से अनेक पुराणी यात्रा ओं का भी पतालगजाताहै जैसे गिरनारजीपर सब से परली निशि पर जहां पहले जैनी जाते थे अब सैकड़ों वर्ष से वहां कोई भी नहींजाता यदि होसके ऐसी जगहके दर्शनभी करो ऊपर जानेका ठीकरास्ता नहीं होतो ऊपर मतजावो नीचे खड़े होकर ही नमस्कार करलो ॥

५७–जब अन्यमतियोंने जैनियोंका संहारकिया-थातबउन्होंनेबहुतसेस्थानहमारे छीनकरउनपर

अपनेमन्दिर वगैरावनालिये थे जैसेपांवागढ़पर ऊपरला स्थान आप लेकर अपना मन्दिर बना लियावलकिहमारी प्रतिमाअपनीदिवारों मेंईंटों की जगह लगा रखी हैं सिद्धवरकूट पर अपना ओंकारजी वना रखा है इसी प्रकार अनेक जगह दावी हुई हैं सो ऐसे स्थानों को भी देख आवना चाहिये उनको भी सिद्धक्षेत्र की जगह समझ करउस स्थानकोमनमें नमस्कारकरनीचाहिये ॥

५८ जब दक्षिण में जावो तो वहां के जैनी यों से मुनो की बावत दरयाफत करते रहो यदि कहीं ठीक पता लगजावे कि फलाने मुकाम में मुनिमहाराज हैं तो रहा वह कितनी ही दूरहो उन के दर्शन जाकर जरूर कर आवो ॥

५९ जिस जगह निशि बनी हुई है यह मत समझोकि खास यही सिद्धक्षेत्र है नहींउस सारे

पहाड़ को ही सिद्धक्षेत्र जानो क्योंकि बाजेबाजे पहाड़ोंसे करोड़ों मुनि मुक्तिको गए हैं सो वह सर्व एक जगह से नहीं गए कोई कहीं से कोई कहीं से दूसरे लाखों करोड़ों वर्ष की बात हो जाने से यह नहीं होसकता कि सदैव से यह निशि यहां ही बन रही है इनमें अनेक बनावटी भी हैं जैसे सम्मेद शिखरपर आदिनाथ वास पूज्य नेमिनाथ और महावीर की हैं क्योंकिवह तो कैलाश चंपापुर गिरनार पांवापुरसेमोक्ष को गएहैं इसलिये निशि पर दर्शन पूजनस्तोत्र पाठ पढ़ने का तो केवल व्यवहार है वरने वह सारा क्षेत्र ही पूजनीक है इस कारण से सिद्धक्षेत्र पर जाकर किसी जगह भी थूको मत और किसी प्रकार की अनुचित क्रिया मत करो उस क्षेत्र को सारे को ही पूज्यमानो ॥

६० यदि किसी मुकाम में १३ पंथ आमना यकी प्रतिमा नहीं हैं२० पंथ की हैं तो उनको भी बराबर नमस्कार करो किसी कलयुगीकेबहकाए मत लगो तिर्थंकर या मुनिराज का पैर कीच में भरने से वह अपूज्य नहीं हो जाते इसी प्रकार केसरकी टिक्की लगाने से प्रतिमा अपूज्य नहीं हो सकती और फूल चढ़ाने में कुछ दोष नहीं यह सर्व पक्षपात है तुम चढ़ाओ या मत चढ़ावो परन्तु जिस प्रतिमाजी पर फूल चढे हुए हों उस को अपूज्य मत मानो वह सर्व पूज्य हैं बराबर उन के दर्शन और पूजा करो ॥

६१ रास्तेमें जो तीर्थ अन्य मतियों के आते हैं उन से नफरत मत करो उनकी भी सैर करनी चाहिये दूसरों के मत की कार्रवाई देखने से अपने मत की पुष्टताई होती है मसलन

जब तुम हरिद्वार पर जावोगे तो देखोगे कि ब्राह्मण किस प्रकार बिचारे हिन्दुओं की मूच्छा दाहड़ी मुढवा किस तरह से उन से टके वसूल करते हैं जगन्नाथ में सब का जूठा खिलाते हैं गयाजीमेंमरे हुवों का हाथ बता पिण्डदिवाते हैं ऐसी ऐसी बातों की सैर देखने में आती है कि जिसको देख करबड़ीही अजब कैफियतमालूम होती है इस लिये हमने रास्ते में आनेवाले हिन्दुओंके तीर्थ व कुछबड़े शहर भी शामिलकर दिये हैं सब की सैर करते हुए अपने देश को लौट आवो ॥

— —

रेल के कायदे।

६२ रेल में सिवा इतवार के प्रतिदिन पार-

सल लेने देने का वकत ७ बजे सुभे से ५ बजे श्याम तक है ॥

६३रेलमेंवजाय बारह बारह रातदिन केभिन्न भिन्नगिनने के आधिरात से शरू कर के दूसरी आधीरात तक २४ घंटे गिनते हैं मसलन जो रेल श्याम के छै बजे रवाने होती है उसे १८ बजे कहते हैं ॥

६४ यदि रेल के स्टेशन के अन्दर मुसाफिर गाड़ी के आने या जाने के समय कोई जाना चाहे तो दो पैसे का पलेटफारम टिकट खरीद कर अन्दर जा सकता है॥

६५ तहसीलदार या तहसीलदार से जियादा रूतबेवाले गबरमिंटऔफिसर वगैर पलैटफार्म टिकट खरीदनेके स्टेशनके अन्दरजासकतेहैं ॥

६६–तीसरे दरजेका कियायापौनपैसेसे एक

पैसा फी मील तक है डौढे दरजेकाएकपैसा फी मील से डेढ पैसा फी मील तक है दूसरे दरजे का दो पैसे फी मील से तीन पैसे फी मील तक है पहले दरजे का एक आना फी मील से डेढ आना फी मील तक है॥

६७ पहले और दूसरे दरजे के सोते हुए मुसाफिर को कोई रेल का कर्मचारी जगा नहीं सकता॥

६८ तीन वर्ष से कम उमर के बच्चों का किराया नहीं लिया जाता॥

६९ तीन वर्ष से १२ वर्ष तक के बच्चे का किराया आधा लिया जाता है॥

७० बारह बरष तक का लड़का स्त्रियों के साथ जनानी गड़ी में जा सकता है॥

७१ मुसाफिर इस बात का जिम्मेवार है कि

जब टिकट लेवे उस को अपना टिकट पढ़लेना चाहिये या पढ़ालेना चाहिये और जो किराया दिया हो वह रकम टिकट पर देख लेनी चाहिये कि टिकट देने वाले बाबू ने गलती से किसी दूसरे स्टेशन का तो नहीं देदिया ॥

७२ जो मुसाफिर रेल में सवार हो दूसरे मुसाफिरों की रजामन्दी से हूका पी सकता है जबरदस्ती नहीं ॥

७३ चलती हुई रेल का दरवाजा खोलने वाला मुसाफिर कानूनी मुजरिम है ॥

७४ जो मुसाफिर टिकट खरीद कर रेल में जगह न होने के कारण न सवार हो सके वह तीन घण्टे के अन्दर स्टेशन मास्टर से अपना किराया वापिस ले सकता है या उस के बाद जाने वाली गाड़ी में जा सकता है ॥

७५ जिस दरजे का टिकट खरीदा जावे यदि उस दरजे में जगह न होने के कारण मुसाफिर कम दरजे में भेजा जावे तो बाकी का दाम रेल वालों से वापिस मिल सकता है ॥

७६ यदि कम दरजे का टिकट खरीद कर फिर बड़े दरजे में जाना चाहे तो बाकी का फरक वाला दाम देकर बड़े दरजे का नया टिकट खरीद कर बडे. दरजे में जासकता है ॥

७७ यदि मुसाफिर टिकट खरीद कर सफर करने से पहिले विमार होजावे या कोई ऐसा अमर लाचारी होजावे कि जिस के कारण वह सफर न कर सके तो स्टेशन मासटर को फौरन इतला देनेसे और स्टेशन मास्टर की काफी इतमीनान (तसल्ली) कर देने पर स्टेशनमास्टर उस का किराया वापिस दे सकता है ॥

७८ जिस स्टेशन का टिकट खरीद कर मुसाफिर रेल में सवार होवे यदि उसी गाड़ी में आगे जाना चाहे तो जा सकता है स्टेशन पर पहुचने से पहिले रास्ते के स्टेशन पर गार्ड को कह देना चाहिये गार्ड उस को आगे का टिकट खरीद देवेगा ॥

७९ जिस दरजेमें कोई मुसाफिर जा रहा है यदि रास्ते में उसमें से उतर कर उस से बडे दरजे में जाना चाहे तो गार्डसे कह कर बाकीके सफरका बडे दरजेके हिसाब से बाकी के फरक का दाम देकर बड़े दरजे में जा सकता है ॥

८० हर एक मुसाफिर फी सौ मील एक दिन रास्ते में जहां जहां चाहे ठहर सकता है मसलन जिस ने ५०० मील का टिकट लियाहो वह रास्ते में पांच दिन किसी स्टेशन पर ठहर

कर उसी टिकट से सफर कर सकता है परन्तु रवाने होनेवाले स्टेशनसे जितने मील बीचमें उ-तरनेवालास्टेशनहो वहांउतनेदिन ठहरसकेगा।

८१–हर एक मुसाफिर तीसरे दरजे का२०० मील से जियादः दूरी का. टिकट खरीद कर डाक गाडी में सफरकर सकता है। परन्तु यह इजाजत हर जगह व हरलाईन में नहीं किसी लाईन में है किसी में नहीं और अैन-डबल्यू रेल (पञ्जाब लेन) में १०० मील से ऊपर का टिकट लेकर डाक-गाड़ीमें सफर कर सकता है॥

८२ ड्योढे दरजे का मुसाफिर रेल गाड़ी में जगह की गुञ्जायश होने पर थोडे से फासले के वास्ते भी डाक गाड़ी में आ सकता है॥

८३ यदि किसी मुसाफिर के स्टेशन पर प-हुंचने से पहिले रेल चलीजावे तो यदि उस को

जानाजरूरी है तो आनेवाली मालगाड़ीके ब्रेक में अव्वल दरजेका महसूल देकर जासक्ता है॥

८४ यदि गाड़ी में जगह की गुञ्जायश न होने के कारण तीसरे दरजे का और डौढे दरजे का टिकट नहीं मिलता तो मुसाफिर दूसरे दरजे या अव्वल दरजे का किराया देकर टिकट खरीद कर जा सकता है ॥

८५ तीसरे दरजे का मुसाफिर अपने साथ अपना बिस्तर या असबाब कुल्ल १५ सेरवज़न तक ले जा सकता है। परन्तु डौढे दरजे का मुसाफिर अपने साथ २० सेर असबाब और बिसतर लेजा सकता है यानि यह २० सेर तो असबाब और असबाबके इलावे बिसतर अलग लेजा सकता है इस का बिसतर असबाब के वजन में नहीं गिना जाता॥

८६ अनपढ़ मुसाफिर को अपना टिकट आप खरीदना चाहिये क्योंकि बहुत से ठग उन के दोस्त बनकर उन को यह कह कर कि लावो में तुम को टिकट लादूं, उन से दाम ले कर थोडे से फासले का टिकट खरीद कर उन के हवाले करते हैं बाकी का दाम उडाकर चल देतेहैं जब उसका टिकट चैक होताहै तोउसको उस स्टेशन पर उतरना पडता है जिस का वह टिकट होता है या और बाकी किराया देकर अपने मुकाम को जाना पडता है ॥

८७ रास्ते के स्टेशन पर या मुकामी स्टेशन पर उतरने वाला मुसाफिर यदि अपना असबाब अपने साथ न लेजाना चाहेतो वह स्टेशन मास्टर से रसीद लेकर अपना असबाब उस के सपरद कर सकता है ऐसा करने से जितने

उस के असबाब के अदद हों उस को फी अ-
दद एक आना फी दिन के हिसाब से किराया
देना होता है परन्तु पहिले दिन के वास्ते फी
अदद ≠) देना होता है, यह कायदा हर एक
स्टेशन पर नहीं केवल बड़े२ शहरों के स्टेशनों
पर है यानि अव्वल और दोयम दरजे के स्टे-
शनों पर है तीसरे दरजेके स्टेशनों पर नहीं ॥

८८ यदि रेल गाड़ी का पूरा कमरा या गाड़ी
लेनी हो तो यदि उस ही लाईन के स्टेशन को
जाना है तो चौबीस घंटे पहिले और यदि दूसरी
लाईनकेस्टेशनकाटिकट लेनाहैतो४८घंटे पहिले
स्टेशन मास्टर को अरजी देने से मिलजाते हैं
और गाड़ी के कमरे के आगे लेबल यानि का-
गज पर लिख कर लगाया जाता है फिर रास्ते
में उस कमरे या गाड़ी में कोई गैर मुसाफिर

नहीं चढ़ सकता ऐसा करने पर तीसरे दरजे के कमरेका ८ मुसाफिरों और डौढे दरजे का ६ मुसाफिरों का किराया फी कमरा देना होता है तीसरे दरजे की पूरी गाड़ी के वास्ते पांच कमरे वाली का ४० छे कमरे का ४८ मुसाफिरों का किराया देना पड़ता है डौढे दरजेवालीका २७ मुसाफिरों का किराया देना पड़ता मै परन्तु जितने मुसाफिरों का महसूल दिया जावे उतने तक ही मुसाफिर उस कमरे या गाड़ी में लेजा सकता है यदि जियादा बैठाओगे तो उन का महसूल अलग देना होगा ॥

नोट–इस्टईंडिया रेलवे यानी कलकता लाईन डौढेदरजे के कमरे के वास्ते भी ८ मुसा-फिरों का महसूल लेती है छ का नहीं ॥

८९ यदि कोई मुसाफिर पूरी गाड़ी लेकर

उस को रास्ते में ठहराना चाहे तो ठहरा सकता है ऐसी हालत में जब पूरी गाड़ी लेने की अरजी दी जावे तो उस में लिख देना चाहिये कि यह गाड़ी रास्ते में फलाने फलाने स्टेशन पर इतने इतने घंटे या दिन तक ठहरी रहे सो वह गाड़ी उन स्टेशनों पर काटकर ठहराई जावेगी जब वह मुसाफिर अपने वकत पर आवेंगे दूसरी रेल में वह गाड़ी जोड़ कर भेजी जावेगी ऐसी हालत में जितने घंटे रास्ते में वह गाड़ी ठहरेगी उतने घंटे का महसूल फी घंटा ॥) के हिसाब से रेल वाले गाड़ी का टिकट देने के समय रवाने होने वाले स्टेशन पर पहले लेलेवेंगे यह महसूल बतौर हरजे के टिकटों के महसूल से अलहदे देना होता है ॥

१० गाड़ी रवाने होने से दस मिण्ट पहिले

टिकट मिलना बन्द होजाता है इस लिये १० मिण्ट से पहिले स्टेशन पर पहुंच कर टिकट खरीद लेना चाहिये॥

९१ हौडा यानीकलकत्ता बरदवान मुकम्मा बांकीपुर गया पटना अलाहाबादजब्बलपुर और कानपुर में हर वकत टिकट मिलता है जब चाहे मुसाफिर खरीद सकता है ॥

९२ जिस स्टेशनका टिकट लिया जावेयदि सोजानेयागलतीसे मुसाफिरआगे चलाजावेतो जितना सफर जियादा किया उस का महसूल देनाहोगा और सिवा इसके दो आनेसे१)तक जो स्टेशन मास्टर चाहे जरीमाना देना होगा

९३ जिस दरजे का टिकट लिया जावे यदि उस से बडे दरजे मे सफर करेतो बाकी का महसूल देना होगा और अगर बगैर गार्डको इत-

ला देने के धोखे बाजी से करेतो साथ में जरी-
माना भी देना होगा जिस की हद ६) तक है

९४ अगर कोई अपने टिकट का नम्बर या
तारीख या स्टेशन का नाम मलकर अैसा कर
देवेगा कि जो पढ़ा न जावे तो उस के वास्ते
जैसा स्टेशन मास्टर चाहे कर सकता है जहां
सेटिकटोंका इमतहान होकर रेल चलती हैवहां
तक का किराया लेकर छोड़ सकता है यदि उस
को यह मालूम होवे कि इसने रेल को धोखा
देने को अैसा किया है तो उस का चालान हो
करउसपर १००रु० तक जरीमानाहोसकताहै॥

९५ जो मरद मुसाफिर औरतों की गाड़ी
में चढ़जावे तो वह कानूनी मुजरिम है सजा
दिया जावेगा॥

९६ यदि किसी स्टेशन पर खराब खाणा

मिलता हो या पाणी न मिलता हो तो मुसाफिर उस स्टेशन मास्टर की रिपोर्ट डिसट्रिक ट्रेफिक सुपरिंटेंडण्ट को कर सकता है॥

रेल में पारसल भेजने का महसूल।

९७ ढाई सेर तकका पारसल फी ५०० मील ।) में भेजा जाता है यदि फासला ५०० से १ मील भी जियादा होवे तो १००० मील का किराया यानि ॥) देना पड़ता है पांच सेर का पारसल फी २५० मील ।) में भेजा जाता है यदि २५०से १ मील भी जियादाहो तो ५००मीलका किराया यानि ॥) देने होते हैं इसी हिसाब से कुल फासले का किराया देना पड़ता है ५सेरसे जियादाका पारसल इस हिसाबसे भेजाता है॥

पांच सेर से ऊपर १० सेर तक का पारसल।

२५ मील तक ।) ५० तक ।) १०० तक ।)

१५० तक ॥) ३०० तक ॥) ४५० तक ॥) ६०० तक १) ७५०) तक १।) ९०० तक १।≈) १०५० तक १॥-) १२०० तक १॥) १३३३ तक २) १५०० तक २।) १६६६ तक २॥) दश सेर से ऊपर फी दस सेर यही किराया देना होगा। फरज करो एक पारसल १०।, सेर का है तो २०सेर का किराया देना होगा२५ मील तक ।) मेंएकमनजा सकताहै५०मीलतक ।) में २० सेर जा सकता है मिठाईपक्कान्नसबज तरकारी सबज मेवे पर आधा महसूल देना पड़ता है॥

डाकखाने के कायदे ॥

९८ पेड़ चिट्ठी यानि टिकटवाली चिट्ठी का महसूल आध तोला वजनतक ~)॥ है आधतोले से जियादा वजन वाली चिट्ठी ढेढ तोले तक

का महसूल ⁄) है इस के उपरन्त फी डेढ तो-
ला ⁄) है यदि डेढ तोले से जरा भी वजन जियादा होतो दूसरे डेढतोले का महसूल देना होता है मसलन एक चिट्ठी डेढ तोले से एक रत्ती जियादा है तो उस का महसूल तीन तोला का ≠) लगता है सरकारी तोला एक रुपया चेहरेशाही भर का होता है ॥

९९ बेरंग चिट्ठी का महसूल टिकट वाली से दूना देना होता है ॥

१०० पेडपैकट यानि टिकट लगा कर पैकट भेजने का महसूल फी दस तोले)॥ है यदि दस तोले से जरासा भी जियादा हो तो उस पर दूसरे दस तोले का महसूल लगाना पड़ता है इसी हिसाब से २ फुट लंबा एक फुट चौड़ा एक फुट ऊंचा तक पैकट जा सकता है ॥

१०१ वैरंग पैकट का महसूल टिकट वाले पैकट की निसवत दूना देना पड़ता है॥

१०२ पैकट में चिट्ठी विल बीजक हुंडी चिक नोट वगैरा नहीं जासकता केवल हर किसम की कीताब पुस्तक शास्त्र छपा हुवा या हाथ का लिखा हुवा या कोरा अखबार प्रूफ छपने के वास्ते मजमून और हर किसम की छपी हुई चीजें नकशे तसवीरें फोटो जासकती हैं॥

१०३ जो अखबार पोस्टमास्टर जनरल से रेजिस्टरी करवाया जावे उस का चार तोले तक महसूल एक पैसा है चार से जियादा २० तोले तक दो पैसे है॥

१०४ पारसल का महसूल वीस तोले तक ≠) चालीस तोले तक ।) उपरन्त हर एक चालीस तोला ।) यदि चालीस तोळे से जरा

सा भी बढ जावेतो बधोतरी का महसूल दूसरे चालीस तोलेकादेना होगा मसलन४०तोलेका महसूल ।) है ४१ तोले का महसूल ॥) है॥

१०५ साढे पांच सेर यानि ४४० तोले से जियादा वजन का पारसल वगैर रजिस्टरी करवाने के नहीं जासकता ॥

१०६ रजिस्टरी करवाया हुवा पारसल २५ सेर तक का जासकता है ॥

१०७ बेरंग पारसल वगैर रजिस्टरी करवाये के नहीं जा सकता ॥

१०८ वीस तोले तक पारसल पर रजिस्टरी करवाई का महसूल ≠) है वीस तोले से जियादा वजन वाले पर ।) है परन्तु चिट्ठी और पैकट पर किसी हालत में भी रजिस्टरी की फीस ≠) से जियादा नहीं है ॥

१०९ रजिस्टरी करवा देने वाले पारसल का महसूल और रजिस्टरीकी फीसभेजने वाले की मरजी पर है चाहे आप देदेवे चाहे कुलका वैरंग भेज देवे परन्तु चिट्ठी व पैकट रजिस्टरी होने वालों का महसूल और रजिस्टरीकी फीस पहिले देनी होगी यह वैरंगनहीं जासकते॥

११० यदि रजिस्टरी जिस के पास भेजी जावे उस के हाथ का दस्तखत मंगानाहो तो ／) और फालतु महसूल देना पड़ता है ॥

१११ मनीआडरका महसूल १० रुपया तक ≠) है दस से जियादा २५) तक ।) उपरंत फी पच्चीस ।) है परन्तु यदि किसी पच्चीस के साथ जो इतनी जियादा रकम हो जो दस रुपये के अन्दर है तो उस का महसूल केवल ≠)ही देना होगा मसलन ५०) रुपयेकी फीस

॥) है तो पचास से साठ तक की रकम का महसूल॥=)है। इसी हिसाब से ६००)रुपया तक का मनीआर्डर जासकता है॥

११२ अगर किसी प्रकार की गलतीसेजिस के नाम मनीआर्डर भेजाजावे उसे न मिले तो वह रुपया अरजी करने से एक साल तक वापिस मिल सकता है बाद एक साल के वह रुपया सरकार वापिस नहीं देवेगी॥

११३ अगर किसी के नाम मनीआर्डर भेजा जावे और फिर भेज ने वाला यह चाहे कि वह रुपया उस को न दिया जावे तो भेजने वालेको चाहिये जिस डाकखाने की मारफत भेजा तार की फीस उस डाकखाने में दाखिल कर के उसको न देने को तार भिजवा देवे,अगर उस मनीआर्डर के तकसीम होनेसेपहले बांटने वाले

डाकखानेको तार जा पहुंचा तो वह रुपया वापिस आकर भेजनेवाले को मिल जावेगा ॥

११४ रियासत ग्वालियर पटियाला जींद नाभा चंबा और फरीदकोट के राज में केवल १५०) रुपये तक काही मनीआर्डर भेजा जा सकता है जियादे का नहीं ॥

११५ यदिकिसी को मनीआर्डर बहुत जलद भेजनाहो तो तार के जिरिये भेजा जा सकताहै इस के वास्ते डाकखाने में जब मनीआर्डर का रुपया और उस की फीस दाखिल करी जावेतो उसकेसाथ एक रुपया तार खबर के खरच का और दाखिल करना चाहिये,यहडाकखानादूसरे डाकखाने को फौरन तार खबर भिजवा देवेगा दूसरे डाकखानेमेंजब तार पहुंचेगा तो वहफौरन उतना रुपया पेई (जिसके नाम मनीआर्डरभे-

जागया) उस के पास चिट्ठीरसां के हाथ भि-
जवादेवेगा ॥

११६ मनीआर्डर और वेल्यूपेबल केवलरुपयों और आनों काही जासकता है किसी भी रकमके साथ पाईऔर पैसे नहीं हो सकते ॥

११७ अगर किसी ऐसे ग्राम से तार में मनीआर्डर भेजना है कि जिस नगर में तारघर नहीं है तो मनीआर्डर के साथ एक रुपयातार खरच का डाकमुन्शी को देदेना चाहिये यह डाक मुन्शी का फरज है कि वह अपने हैडदफतर से तार भिजवा देवेगा ॥

११८ यदिऐसे नगर को तारका मनीआर्डर भेजा जावेकि जहां तार नहींहै तो जहां उसके पास वाले नगर में तार है उस नग रको तार भेजा जावेगा वहीं से मनीआरर्डर डाक द्वारा

उस मुकाममें भेजा जावेगा॥

वेल्यूपेबल।

११९. अगर कोई किसीको पारसल या पैकट या चिट्ठी में बिलटी वगैरा वेल्यूपेबलभेजेयानी यह चाहेकि पहिले उस का मूल्य उससे वसूल करके तब वह उस को मिले,तो डाक महसूलके इलावे जितनी रकम मंगवानी हो मनीआर्डर की फीस के हिसाब से उतने दामों का टिकट डाकखाने के छपे हुवे उस कागज पर और लगादो जिस कागज का नाम वेल्यूपेबल फारम है इस को वैल्यूपेबल बोलते हैं इस का अर्थ कीमत अदा करने वाला अर्थात् पहले डाकखाने में कीमत दाखिल करके लेने वाला है॥

१२० वेल्यूपेबल दो जाति के हैं एक वगैर रजिस्टरी दूसरा रजिस्टरी सो वगैर रजिस्टरी

की डाकखाने से रसीद नहीं मिलती रजि-स्टरी वाले की भेज ने वाले को रसीद मिल-जाती है,रजिस्टरी वाले पर डाक महसूल और वेल्यूपेवल फीस के इलावे दो आने रजिस्टरी की फीस के और जियादा लगते हैं रजिस्टरी वाले का काला फारम लिखना होता है वगैर रजिस्टरी वाले का सुरख रंग का यह फारम (कागज) डाकखानेसे मुफत मिलते हैं ॥

दूसरे मुलकों को चिट्ठी।

१२१–दूसरे मुलकों को जब चिट्ठी भेजो तो अंग्रेजी में लिखवा कर भेजो इस समय अंग्रेजी जुबान हर मुलक में लिखी पढ़ी जाती है और जब जिस के नाम चिट्ठी भेजो उस का पता लिखो तो अपना नाम ग्राम डाकखाना जिला अहाता लिख कर उस के आखिर में इंडिया

(हिंदुस्तान) भी लिखदो ॥

दूसरे मुलकों का महसूल

१२२-दूसरे बहुतसे मुलकों ने मिलकर अपनी एक युनियन (मिलावट) बना रखी है सोतमाम अंगरेजी राज्य और उन सर्व मुलकों को चिट्ठी भेजने का महसूल फी आधाऔंस यानि फी सवा तोला ८) है सो सवा तोले तक ८) का टिकट लगा देना चाहिये सवा तोले से जियादा ढाई तोले तक वजन की चिट्ठी पर ॥) का टिकट लगादेना चाहिये जियादतीके वास्ते इसी प्रकार फी सवा तोला ८) और लगादेना, किताब अखबार का पैकट मंगाने भेजने का महसूल फी दो औंस यानि फी पांच तोले)॥ आधआना है और जो मुलक उस युनियन में शामिल नहीं हैं उन को चिट्ठी भेजने का मह-

सूल फी सवातोले ≠)॥ है अखबारका महसूल फी पांचतोले ⁄)है अंगरेजी तोला १)रु०भरका होता है पारसल का महसूल हर एक मुलकके वास्ते अलग अलगहै जिसका अंदाजा॥) आने सेर से लेकर १)सेर तकहै मनीआर्डर की फीस भी करीब करीब हिन्दुस्तान के बमजब ही है यानि तकरीबन १) सैकडे कही है परन्तु लंका हिन्दुस्तान मेंहीशामिलहै जो डाकमहसूल हिन्दुस्तान में लगताहैसोई लंकाका लगता है ॥

तार के कायदे

१२३ तार में खबर भेजने का कम से कम महसूल ॥)देना पडताहै ॥) में आठलफजयानि शब्द (**Words**) तक जासकते हैं आठ लफज से जियादा लफजों का महसूल फी लफज़ ⁄) है मसलन कोई ९ लफज भेजना चाहे तो ॥⁄)

महसूल देना होगा इसी हिसाब से जितने ल-
फज भेजने हों जासकते हैं और इसी निरख से
दूने महसूल का तार इस से बहुत जलद भेजा
जाता है उस का कमसे कम महसूल १) हैएक
रुपए में आठ लफज भेजे जावेंगे आठ से जि-
यादा के वास्ते =) लफज महसूल देना होता
है और इस से भी बहुत जलद यानि फौरन
तार भेजने का महसूल कम से कम २) है दो
रुपये में आठ लफज भेजे जाते हैं आठ से जि
यादा का महसल ।) फी लफज देना होता है
यह तार फौरन जाता है ॥

१२४ यदि तारमेंजबाबभीवापिस मंगानाहो
तो जिस दरजे का तार दिया है उस से दूना
महसूल तारघर में खबर भेजने के समय देदो
जिस जगह तार भेजा है वहां के तार घर का

चपड़ासी जिस के नाम तार भेजा है उस के पास तार लेजा कर उस से उस का जबाव लिखवा कर तार घर में लाकर भेजने वाले के नाम जबाब भिजवा देवेगा ॥

१२५ तार भेजने मंगाने में भेजने वाले का पता और जिस को तार भेजा जावे इन दोनों का पता मुफत में जाता है पते का महसूल देना नहीं पड़ता ॥

१२६ अखबारों में छपनेको मजमून का तार महसूल हरदरजेमें चौथाई लिया जाताहैयानि एक पैसा दो पैसे चार पैसे फी लफज लिया जाता है परंतु ॥), १), और २) से कम किसी हालत में नहीं लिया जाता ॥

बीमा।

१२७ यदि किसी को कोई कीमती वस्तु म-

सलन नोट सोना चांदी मोती जवाहिरात या गहना वगैरा डाकखाने के जिरये भेजना हो तो बीमा करवा देना चाहिये क्योंकि वगैर बीमा करवाएके ऐसी कीमती चीजों के खोए जाने की सरकार जिम्मेवार नहीं है बीमा कर देने से खोए जाने पर सरकार जितने का बीमा करवाया जावे उतना रुपया देतीहै सो बीमे की फीस चार आना फी सैकड़ा देनी पड़तीहै यदि बीमा पचास रुपए से कम का है तो केवल दो आने ही फीस देनी होतीहै परन्तु जो चीजचिट्ठी या पारसल का बीम्मा करवाना हो जो डाक महसूल उस पर लगेगा बीमे की फीस उस से अलग देनी होती है इस प्रकार छोटेडाकखानों से ५००) रुपए तक का और बड़े नगरों के डाकखानों से २०००) रुपये तक का बीमा

हो सकता है बीमे के ऊपर मोहर एक रंग के लाखकी ही होनी चाहिये और जो मोहरलगाई जावे वह सब मोहरों पर एक ही लगे और ऐसी साफ मोहरें बीमेके ऊपर लगें जो अच्छी तरह पढ़ी जावें और जिस के पास बीमा जावे यदि बीमा २५०) रुपए से जियादा का है तो पोस्टमास्टर के साम्हने खोलकर देख लेना चाहिये वरने सरकार जिमेवार नहीं है और २५०) से जियादा का बीमा सरकार मकान पर नहीं भेजेगी डाकखाने से जाकर लाना होगा और बीमे में रजिस्टरी करवाई हुईचिट्ठी या पारसल ही जा सकता है वगैर रजिस्टरी नहीं ॥

बीमा रेल।

१२८ यदि बीमा रेल के जिरिये में भेजना

चाहे तो रेल में बीमा का किराया बनिसबत डाकखाने के महंगा है जो चीजें काच की या चीनी की हें उन पर फी सौ मील फीसौ रुपये ।) आने हैं चांदी साने पर फी सौ रुपये फी सौ मील दो आने हें और अगर हिसाब में दो रुपए से जियादा आवे तो जियादा लेवेंगे अगर कम आवे तो २) रुपये से कम नहीं लेवेंगे परंतु ख्वाहा कितनी ही दूर भेजो एक रुपये सैंकडे से जियादा नहीं हे । मसलन १००) रुपया का सोना १०० मील भेजना है तो हिसाबसे ≠) किराया होता है परन्तु वह २)रु० लेवेंगे यदि २०००मील भेजनाहे तो ≠) हिसाब से २॥) होते हैं परन्तु वह २) रुपैये लेवेंगे बहुत सी रेलों का यही निरख हें परन्तु वाजी बाजी रेल का निरख इसके विरूद्ध भी है

डाकखाने में केवल ।) आने ही देने होंगे । वहां फासले का कुछ लिहाज नहीं एक मील और कई हजार मील का किराया एक ही है ॥

कुत्ता वगैरह ।

१२९ यदि रेलमें कोई मुसाफिर कुत्ता बिल्ली खरगोश बंदर वगैरह भी साथ लेजाना चाहे तो इन का किराया फी जानवर फी ५० मील ।)है पचास मील से कम का किराया भी पचास माल का लेवेंगे मसलन ५१ मील के वास्ते एक जानवरका किराया सौ मीलका ॥) लेवेंगे

तोता मैना चुहो बाज वगैरह ।

१३० इन सब जानवरों के पिञ्जरे पर पारसल का महसूल तोल कर लेवेंगे मसलन एक पिञ्जरे में २ सेर वजन है तो उस का किराया २॥ सेर का ५०० मील तक ।) लेवेंगे ॥

घोड़ा गाय।

१३१ घोडे गाय का किराया मुसाफिर गाड़ी के साथ एकघोड़े या गाय का ≠) मील हैऔर हर एक घोड़े या गाय की साथ घोड़ा गाड़ी में एक साईस यानि एक आदमी बगैर लेने किराये के यानी मुफत भेजा जाताहै एक घोड़े से जियादाके वासते दूसरे साथ वालोंका किराया एक आना फी मील फी जानवर है॥

गाड़ी बग्घी।

१३२ यदि कोई मुसाफिर अपनी साथ मुसाफिर गाड़ी में अपनी वग्घी(गाड़ी)भी लेजाना चाहे तो ≠) फी मील किराया देना होता है और यदि दो गाड़ी लेजाना चाहे तो ।)॥ फी मील किराया देना होता है और ५) से कम किराया किसी हालत में भी नहीं लेते यदि

कोई अपनी गाड़ी माल गाड़ी में भेजनी चाहे तो वह अगर बहुत जगह रोकनेके कारण एक गाड़ी में अकेली जावेगी तो वही ≢) फी मील लेवेंगे यदि थोड़ी जगह रोकने के कारण दूसरे माल की साथ भेजी जावेगी तो जितना उस का वजन होगा उस पर तीसरी किलास का किराया लिया जावेगा या दूसरी किलास का किराया ८१ मन वजन का लिया जावेगा ॥

Special train

(खास अपने वास्ते रेल)

१३३ यदि कोई मुसाफिर खास अपनेवास्ते रेल लेजावे तो जितने उस के मुसाफिर जिस जिस दरजे की गाड़ी में सवार होंगे उन का किराया उस दरजके हिसाब से देनाहोगाऔर सिवाय इसके २॥) फीमीलऔरदेना होगा और

कुल्ल मुसाफिरों का किराया और २॥) यह मिलाकर अगर हिसाब में ५) रु०फी मील से रेल को आमदनी कम हाती है तो रेल ऐसी हालत में ५ फी मील पूरे लेवेगी पांच रुपये फी मील से कम किराये पर खास रेल सरकार नहीं छोडेगी और जिस स्टेशन के नाम मुसाफिर खास गाड़ी अपनी छुड़वाना चाहे यदिवह वीस मील से उरेहै तो सरकार पूरे १००)रुपये लेगी सौ रुपयेसे कम किसी हालत में भी नहीं लेवेगी और अगर वीस मील से जियादा है और पचास मील से कम है तो ख्वाहा२१ मील गाड़ी क्यों न जावे सरकार पूरा पचास मील का किराया २५०) रुपये लेवेगी पचास मील से ऊपर थोडे मुसाफिरों के वास्ते ५) फी मील लेवेगी जियादा मुसाफिरों के वास्ते जियादा

लेवेगी इस के वास्ते जब स्टेशनमास्टर को अरजीदो तब उसमें लिखदेना चाहिये कि किस वकत रेल लोगे यदि उस वकत पर स्टेशनपर पहुंच कर रेल नहीं चलती करवाओगे तो जितने घण्टे देरी होगी १०) फी घण्टा अञ्जन का हरजाना और जितनी गाड़ियां उस रेल में जुड़वाई हैं ॥) फी गाडी फी घण्टा गाडियोंका हरजाना सरकार लेवेगी ॥

वकत

१३४ तमाम हिन्दुस्तानकी रेल के स्टेशनों पर मदरासका वकत वरताजाता है जो कि बंबई के वकत से ३० मिण्ट दिल्ली से १३ आगरे से १०क्ररांचीसे५२ सक्खर से ४७ मुलतान से३६ लाहौर से २३॥ साढेतेईस रावलपिण्डी से ३१ पिशावर से २७ मिण्ट पहिले है और कलकत्ते

से ३३ अलाहाबाद से ७ लखनउ से ४ मिण्ट पीछे हैं,भावार्थ यह हैकिजब मदरास में१२बजत हैं तो उस वकत बम्बई में धूपघड़ी के हिसाव से साढे ग्यारह वजते हैं और कलकत्ते में बारह बज कर ३३ मिण्ट भी गुजर जाते हैं इस प्रकार सब जगह समझना परंतु सरकारने कुल हिन्दुस्तान में सारे स्टेशनों पर रेलकी घडियों में एक सा वकत रखने के लिये सारे मदरास का वकत ही रखा है इसलिये मुसाफिरों को सफर करने में रेल का वकत रेल की घडियों से आने जाने का समझना चाहिये ॥

मुरदा ।

१३५ यदि किसी मुसाफिर का कोई सम्बंधी रास्ते में मरजावे और वह बहुत धनवान् होने के कारण यह चाहे कि इस को अपने नगर में ले

जा कर फूकूंगा ताकी एक बार घर के आदमी फिर इस का चेहरा देखलेवें, तो रेलमें मुरदे का किराया ॥) फी मील देना होता है और जब मुरदा भेजा जावे उससे काफी वकत पहिले स्टेशनमास्टर को इतला देनी चाहिये ता की वह मुरदे के वास्ते गाडीका इन्तजाम करे और एक डाक्टर का सार्टीफिकेट देना पड़ता है कि यह मुरदा किसी बवावाली बीमारी में नहीं मरा, और ऐसे सन्दूक में ऊपर मोमजामा वगैरह जड़कर बन्द होना चाहिये जो उस की बदबू बाहिर न निकल सके और एक आदमी को अपना किराया देकर उसी रेलगाडीमें जाना चाहिये जिस में मुरदे की गाडी जोड़ी जावेगी ताकि मुकाम पर पहुंचते ही मुरदे को फौरन रेल से ले जावे ॥

मालगाड़ी।

१३६-रेल में दरजे मुसाफिर गाड़ी से माल गाड़ीमें उलटे शुमार करते हैं मसलन मुसाफिर गाड़ी में तीसरे दरजे का किराया कम है दूसरे का तीसरे से जियादा पहिले का दूसरे से जियादा है, बरखिलाफ इस के मालगाड़ी में पहिले का किराया कम है दूसरे का पहिले से जियादा तीसरे का दूसरे से जियादा है इस प्रकार एक दूसरे से जियादा होता हुवा पांचवें दरजे तक है पांचवे दरजे का किराया सब से जियादा है, परन्तु बहुतसी चीजें इन पांच दरजो में नहीं भेजी जाती उन का किराया बहुत कम है उन के वास्ते अलग कम निरख है उन दरजों का नाम सपेशल (खास) दरजा गरेनरेट (अनाज का दरजा) वगैरा वगैरा हैं पहिली क्लास का

किराया फी मन फीमील तिहाई पाई है दूसरे दरजेका आधपाई है तीसरे दरज का दो पाईका तीसरा हिस्सा है। चौथे दरजे का पांचपाई का छठा हिस्सा है, पांचवें दरजे का एक पाई फी मन फीमील है, कम दरजे वाले माल पर किसी पर पाई का तीसरा हिस्सा किसी पर चौथा किसी पर पांचवा इस प्रकार कम से कम एक पाई का दसवां हिस्सा फीमील फी मन है और मालगाडी में ॥) से कम किराया किसी माल पर भी नहीं लिया जाता। और १४सेर से कम वजन का माल मालगाड़ीमें नहीं लेते और सब चीजों का तमाम रेलोंमें किराये का एक निरख नहीं है कोई चीज़ किसी रेलमें किसी दरजे में भेजी जाती है दूसरी रेल लाईन में वही चीज़ उस से कम दरजे में या बडे दरजे में

भेजी जाती है इस का सब वर्णन माल की किताब में लिखा है जिस का नाम गुडस्टैरिफ (goods Tariff) है जो चार आने में स्टेशन मास्टर से मिल सकती है माल गाड़ी में माल भेजने वाले को इतनी खबरदारी रखनी चाहिये कि कम दरजे में जानेवाले माल के साथ बडे दरजे में जाने वाला माल उसी बोरी बंडल या सन्दूक में न भेजे उन को अलग अलग वन्द कर के भेजे इकट्ठा बन्द करके भेजने में सारे मालपर वही किराया रेल वाले लेवेंगे जो बड़े दरजेवाले पर लेना चाहिये था। मसलन किसीने एक मन धनिया भेजा जिसका किराया बहुत कम दरजे का है और उसी बोरी में इलायचा भी भेजदी जिसका किराया बडे दरजे का है तो ऐसी हालत में रेलवाले कल धनिये वा इलायची का

किराया इलायची वाले बडे दरजेका ही लेवेंगे इस में भेजनेवाले को बहुत नुकसान रहताहै इसलिये व्यापारियों के वास्ते यह जानना जरूरी है कि मालगाड़ी में कौन कौनसी चीज किस किस दरजे में जाती है अर्थात् चीज समझ सोच कर भेजनी चाहिये॥

एक पन्थ दो काज

१३७ भाईयो धर्म दो प्रकारका है एक मुनि का दूसरा श्रावक का सो मुनि तो घरके त्यागी हैं उनके तो धर्मकी वृद्धि तपसे और आत्मध्यान से है श्रावक गृह के वासी हैं सो गृहस्थ के धनबिना कोईभी कार्य नहीं होसक्ता दान पुण्य पूजा प्रभावना तीर्थयात्रा सब धनसे ही होयहैं धन बिना किसी कार्यकी भी सिद्धि नहीं इसका कारण यह है कि सबबात भावों के ठीक रहने

से होय है सो गृहस्थ के परिणाम बिना धन के अनेक प्रकार भटकते फिरेहैं, इसलिये गृहस्थ के वास्ते सब से पहले धन उपार्जन करना जरूरीहै,सोइससमय जैनियोंको धनउपार्जनकरने केदोजिरियेहैं एक सरकारी नोकरी दूसरा तजारत यानि हर किसम का व्यापार सो सरकारी नौकरी तो उनही को मिलसकती है जो राज विद्यापढ़े हुएहैं और जो जैनीराजविद्या नहीं पढे या राजविद्या पढे भी है उनको कोई सरकारी अच्छी नोकरी नही मिलती तो इन के वास्ते केवल व्यापार ही आजीवका पैदा करने का जिरिया है सो दूसरे शहरों को जो माल पड़ता खावे उन्हे भेजना या जो माल दूसरे शहरों से मंगा कर वेचने में फायदा नजर आवे वह मगा कर वेचना यह भी एक व्यापार है सो जब तुम

तीर्थयात्रा को जावो तब जोजो बडे शहर रास्तेमें या रास्ते स थोडे थोडे फासले पर भी आवेंउन की सैर जरूर करो अवल तो अनेक नए देशों की सैर करनेसे अनेकनई वातें देखने में आती हें जिनसे अनेक प्रकारकालजरवा हासिलहोता है, क्योंकि दुनियांमें सबसे बड़ाइल्म तजरवाहै दूसरे जिसजिसशहर में जावोदेखोवहांकौनकौन वस्तु बजाजी कीपसारहट्टे की दूकानदारी की किस किस भाव बिकती हे जिस वस्तु को तुम उस नगर से अपने नगर में या अपने नगर से उस नगर में भेजने में फायदा मालूम करोउन का भाव एक किताबमें लिखो जावो। और उन शहरों में जोजो आडती मोतबिर धनवान् हो उन का नाम पता लिखते रहो इस प्रकार जब यात्रा कर के अपने देश में आओ तो रास्ते का

किराया खरच गिन कर जोजो वस्तु किसीनगर को भेजनी मुनासिबजानो तोउसनगरको भेजा करो,और जो जो मंगानी मुनासिब जानो सो मंगालिया करो और इस बात का ध्यानरखना कि परदेसियों के नीचे बहुत मत फसना जिसके पास माल भेजो थोडी बहुत हुंडी उस के ऊपर जरूर बेंचलो इस में अपनी हानि मत समझो जब किसी शहर में किसी आडती से बात करो तो उस से यह जरूर कहलेना चाहिये कि जब मैं आप के पास माल भेजूंगा तो एक रुपये के माल पीछे ॥।) की हुंडी वेच लूंगा आपके नाम माल रवाने कर के बिलटी आप के नाम भेज दूंगा जब आप के पास बिलटी पहुंच जावे तब आप मेरी हुंडी शिकारनी और जिस से माल मंगवाना हो उस को लिख भेजो कि भाईजी

बिलटी हमको वेल्यूपेबिल भेजदेना,यहकायदा तजारत का है इस प्रकार तीर्थों को जाते हुए रास्ते के शहरों में आडतां बनालेने से एक पंथ दो काज होजाते हैं तीर्थ का तीर्थ और आडतों की आडतां ॥

बहुतफायदा

१३८—पहिले जमाने में जब रल नहीं थी तो तजारतमें इतना फायदा थाकि जो वस्तु दूसरे नगरों से मंगवाई जाती थी फी रुपया एक आना दो आना वलकि सवायों पर बेचते थे। जो तिजारत करते थे यानि बाहिर से माल मंगवाते थे या बाहिर बेचने को भेजते थे वह बडे बडे धनवान् बने हुवे थे परन्तु अब रेल के हो जाने से यह तजारत रांडी के घर मांडी होगई, है यानि हर कोई तजारत करने

लगा है सो फायदे की गुञ्जायश बिलकुल घट गई है धेले रुपये या हद पैसे रुपये की गुञ्जा यश रह गई है अब जो कुछ फायदा है दूसरे मुलकों की तजारत में है दूसरे मुलकों से माल का हिन्दुस्तान में मंगाना औरहिंदुस्तानसेदूसरे मुलकों को भेजना इस में अब भी बड़ी भारी गुंजायश है यह जो अंग्रेज सौदागर करोड़पति क्या अरबोंपति बने हुए हैं तमाम यहूदी पारसी मारवाड़ी जो दूसरे मुलकों से माल मंगवा कर इस मुलक में बेचते हैं या इस मुलक का माल दूसरे मुलकों में भेजते हैं वे धनवान्हीधनवान् नजर आते हैं इस लिये जहां तक हो तजारत दूसरे मुलकों के साथ करो अनेक मुलकों से हमारे मुलक में माल आता है हमारे मुलक से उन में जाता है चूंकि हर एक कोयह मालूम

नहीं है कि किस किस मुलक से क्या क्या आता जाताहै सो उन की वाकफीयत के वास्ते हम कुछ मुलकों के नाम लिखते हैं ॥

१३९.–निम्नलिखित मुलकोंको प्रतिवर्ष हिन्दुस्तान से अन्दाजन निम्नलिखित रुपयों का माल प्रति वर्ष आता जाता है ॥

नाम दूसरे मुल्कों के	रु०का आता है	रु०का जाता है
इङ्गलैंड	५०४१०००००	३१६४०००००
आस्ट्रिया	१४८०००००	१४९०००००
बेलजियम	२४१०००००	३०५०००००
डेन्मार्क	७५००	४८००
फ्रांस	९२०१०००	६३५०००००
जर्म्मनी	२३१०००००	७०५३०००००
ग्रीस (यूनान)	३३००	१३९०००
हालैंड	२४०००००	५९७८०००

नाम दूसरों मुलकों के	रु० का आता है	रु० का जाता है
इटली	४७००१००	३०१०००००
दक्षिणी अमेरिका	१२००	१४४०००००
यूनाइटेडस्टेटस्	१४७०००००	४८१०००००
एडन	१४०००००	७८०००००
अरब	४९०००००	७८०००००
सिंहलद्वीप	६८०००००	३११०००००
चीन	२१५०००००	१३६८०००००
कोचीन चाइना	७१००	२२०००००
जापान	५५०००००	४०८०००००
जावा	१४०००००	१३०००००
मालद्वीप	८८०००	१७६०००
मेकरान	७०००००	५०००००
फारस	३९०००००	४२०००००
फिलिपाइन	३६०००	३०००००
एशियारूस	१८६०००००	५०००००
स्याम	९०००००	३०००००

नाम दूसरे मुलकों के	रु० का आता है	रु० का जाता है
स्टेट सेट्लमेंट	१८४००००००	५०१००००००
सुमात्रा	३००००००	३३०००
एशियाटरकी	३८००००००	५२००००००
आस्ट्रेलिया	४५००००००	११८००००००
मालाकंद	४८०००	८७०००
नार्वे	७२८००००	
पुर्तगाल	४३०००	
रूस	१६००००००	२१००००००
स्पेन	५०००	१७००००००
जिबराल्टर	१२००००००	१६६०००
स्वीडन	८००००००	२००००००
तुरकस	१५०००	
टर्की (रूस)		८००००००
अबिसीनिया	६३०००	१७००००००
केपकालोनी	७८०००	३४००००००
मोजंबिक	२६२०००	१७००००००

नाम दूसरे मुलको के	रु०का आता है	रु० का जाता है
जांजिबार	२१०००००	५४०००००
पूर्व अफरीका	८१०००	९०००००
मिसर	१९०००००	४८५०००००
मेडेगास्कर	२९०००	३०००००
मारिशस	१८१०००००	११२०००००
नेटाल	१७०००	३८०००००
रियनियम	४००	२२०००००
केनडा	४०००	४५२०००

इन के सिवाय अनेक मुलकोसे माल आता है और अनेकों को जाता हैयहअन्दाजालगाया गया है कि हिन्दुस्तान में दूसरे मुलको से प्रति वर्ष ७२ करोड़का माल आताहै और एकअरब का माल हिन्दुस्तान से दूसरे मुलकोंको जाता है इस व्यापार से प्रति वर्ष २८ करोड़ रुपया

दूसरे मुलकों से हिंदुस्तान में आता है सो किन के घर में आता है जो दूसरे मुलकों से सौदागरी करते हैं, सो जैनियों को भी इस विषय में कोशिश करनी चाहिये। अब रही यह बात कि किस किस मुलक से क्या क्या माल आता है और किस किस को क्या क्या जाता है और उन मुलकों में आडतियों सौदागरों के क्या क्या नाम पते हैं, जिन से या जिन की मारफतमालमंगायाभेजा जावे सो यह सर्वहाल एक अंगरेजी की किताब में लिखा है उस में हर एक मुलक के कुल मशहूर बडे बडे सौदागरों के नामलिखे हैं, और क्याक्या वस्तु किस किसनिरख पर बेचते हैं, उस से सब मालूम हो जाता है उस में देख लेना चाहिये, उस का नाम,केलीज़ डाईरेक्टरी आफ मरचेंटस्, मैन्यू

फैकचररस् ऐण्ड शिपरस् है, उसका दाम ३० शलिंग यानि २२॥) रुपये हैं यह प्रतिवर्ष छपती है थैकर ऐण्ड को (Thacker and Co) की दुकान से मिलती है इस की दुकान कलकत्ते में भी है और बम्बई में भी है जहां से चाहो मंगा सकतेहोउसकिताब का अङ्गरेजी नाम यह है॥

Kelly's Directory of Merchants Manu Facturers and Shippers.

—o—

खबरदारी

१४० रल की जिस गाड़ी में तुम सफर कर रहेहो जब उस गाड़ीमें दूसरे मुसाफिर चढें या उस में से उतरें तो रेल का दरवाजा जरूर देख लेना चाहिये कि किवाड़ ठीक ठीक बन्द भी होगया है बाहिरली चटखनी बन्द भी हो गई

है यदि बन्द न हो तो बन्द कर दिया करो क्योंकि बच्चे चलती हुई रेल में किवाड के पास खडे हो कर बाहिर का नजारा देखते रहते ह अगर किवाड गलती से खुला हुवा हो तो बच्चा फौरन बाहिर जा पड़ता है ॥

१४१ जब रेल गार्डका दरवाजा खुले भिडते अपने ओर बालबच्चों के हाथका खियाल रखो जब रेल के कर्मचारी चट से आनकर दरवाजा बन्द करते हैं अनेक के हाथ कवाड के बीच में आकर चीथले जाते हैं ॥

१४२ रेलमेंसवारहोनेकेलियेजब प्लेटफारम (चबूतर)परजावोतोजब दूरसे रेल आती देखो तो पीछेको हट जावो क्योंकिरेलकीगर्जनामेंइतनी कशिश है कि पास खडे हुए को अपनी तरफ खेंचती है सो अनेक नावाकिफ फौरन चबूतरे

से नीचेजा पडते हैं और आटे की तरह पहियों के नीचे पीसे जाते हैं ॥

१४३ स्त्रियोंकोरेल काखिडकीकेपासउछलने वाले बच्चे को गोदमें लेकर नहीं बैठना चाहिये अनेकवारबच्चे उछलकरअपनीमाताकी गोदमेंसे खेलते हुए बाहिर जा पडे हैं अनेक माता मारे मोहब्बत के उन के साथ ही कूदपड़ी हैं दोनों ही प्राण रहीत हो गये हैं इसलिये स्त्रियों को बच्चे को गोदमें लेकर बीचमें बैठना चाहिये ॥

१४४ जब मुसाफिर उतरेंवाचढें तबअपना असबाब संभाल लेवें बहुतसे ठग उतरते हुए रातबरातको दूसरेकी गठडी भी लेजाते हैं।

१४५ तीसरे दरजे के मुसाफिरों को जहां तकहो स्त्रियोंको स्त्रीगाडी में बिठाना चाहिये, क्योंकि उसमें टट्टीपिशाबकरने के लिये टट्टीबनी

रहती हैऔरचढतेउतरतेभीडमेंआसानीरहताहै, स्त्रीकेपासस्त्रीगाडीमेंअसबाबरखनेकीगुंजायश होती है मरदोंकी गाडीमें बाजेबाजेबदमाशस्त्री को देख कर बदमाशी के शब्द बोलते रहते हैं परदेश में किस किस को कोई रोक सकता है इसलिये स्त्रियोंको स्त्री गाडीमें ही बैठावो ॥

१४६ यात्रा वगैरह में स्त्रियों को बहुत सज धज वा जेवर लाद कर जाना नहीं चाहिये, जेवर को देख कर बहुत ठग वगैरह लगते हैं, दूसरे भगवान् को जाकर वहां कोई जेवर नहीं दिखाना, यात्रा सादे भाव से करणी चाहिये हमारी मुराद यहां यह नहीं है, कि बिलकुल खाली हाथ पैरों जावो, सिरफ़ कहना यह है, कि बहुत सा जेवर पहिन कर मत जावो ॥

१४७ जैसा कि तेज स्वभाव अपना अपने

मकान पर होता है वैसा परदेश में मत रक्खो यानि अगर रेल में या परदेश में कोई सखत भी कहे या गाली भी दे बैठे तो क्षमा कर ऐसी चुप साधनी चाहिये मानों कुछ सुना ही नहीं उसको यही उत्तर देना चाहिये कि जनाब आप को परदेशियों पर खफ़ा होना नहीं चाहिये अगर कोई हमसे कसूर हुवा है तो मुआफ़ करो।

दुष्टों से बचो

१४८ इस समय कुछ काल का ऐसा प्रभाव हो गया है, कि सच्चे धर्म्मात्मा होने तो कठिन होगए हैं परन्तु बहुत से मनुष्यों का यह हाल हो गया है कि अपने तईं किसी धर्म्म के धारी या किसी सभा या समाज के मैम्बर का फतवा लगाय कर करने कराने को तो कुछ नहीं

सिर्फ जब किसी दूसरे धर्म्म वाले को देखते हैं तो उस के साथ वाद विवाद करना उस के धर्म्म की निन्दा करना उस के धर्म्म का मखौल उडाना वाहियात सवाल करना लडने भिडने को तैयार रहना यही उनका काम है सो अगर कोई ऐसा दुष्ट तुम को मिले तो उस से वाद विवाद मत करो अगर वह जियादा तंग करे तो कहदो कि जनाब मैं इतना नहीं पढा जो दूसरों से लडता फिरूं, और चुप रहो, क्योंकि दुष्टों के साम्हने चुप रहना ही ठीक है, अगर बोलोगे तो ख़ाहम्ख़ाह को तकरार हो पडेगा जिस का नतीजा ठीक नहीं होगा, जो दूसरे धर्मों की निन्दा करते हैं वह दुष्टात्मा हैं, दुष्टों का काम दूसरों की निन्दा करना ही है। जो सच्चे धर्म्मात्मा हैं उन्हें किसी की बुराई

से कुछ मतलब नहीं अपना धर्म सेवन करते हैं देखो काक अमृत को तज विष्टे पर ही पडता है हंस मांस को तज मोती को ही ग्रहण करता है, इसी प्रकार जो सच्चे धम्मात्मा नहीं हैं वह दूसरे धर्मों के निंदक, मानिंद काक के हैं। केवल वह सवाल करना वा दूसरों की निंदा करना ही जानते हैं और कुछ नहीं। और जो सच्चे धर्मात्मा हैं वह मानिंद हंस के हैं हर जगहसे नेकी ग्रहण करते हैं न तो किसी के धर्म पर आक्षेप करके उस से सवाल करते हैं न किसी की निन्दा करते हैं, अगर कभी मौका मिला किसी ने उन से उन के धर्म का असूल पूछा तो जो गुण उन के धर्म के असूलों में हैं, वह वर्णन करदिये ऐसे पुरुष सच्चे सज्जन हैं सो सज्जन पुरुष ख़ाह किसी धर्म का हो उससे

मिलने बोलने में नुकसान नहीं परन्तु, दूसरे धर्मों के निन्दक दुष्टों से मिलने बोलने में सरासर नुकसान है, वाद विवाद करना मूर्खों का काम है । इस में लाखों का नष्ट होचुका है और होवेगा पस किसी से वादविवादमत करो।

सैरसपट्टे अर्थात् रथयात्रा।

१४९.-यह जो भोली जैन स्त्री वा श्रावक रथयात्राओं में जाकर अपना धन खर्च करते हैं यह यूंही खोते हैं यह केवल सैरसपट्टाहैयहकार्य धनवान् लोग अपनी नेकनामी के वास्ते करते हैं धर्म अर्थ नहीं करते, अगर धर्मअर्थ करते तो जो सैंकड़ों जिनमन्दिर बहुत पूराणे हो जाने के कारण गिरे जाते हैं प्रतिमाओं के ऊपर बर्षाका पानी पडता है छत्त गल गल कर उन

के ऊपर मट्टी ईंटें पड़ती हैं। अनेक प्रतिमाओं के अंग उपांग खण्डित हो रहे हैं। सो अगर यह लोग अपना धन धर्मकार्य के खियाल से खर्च करते तो पहिले उनका जीर्णोद्धार करते सो करें कहां से, धर्म का खियाल भी हो, यहां तो सिरफ मान बड़ाई और सोने के रथ में चढ़ने का खियाल है कि फलाने लाला जी नेरथयात्रा कराई है इसलिये इसमें कोई विशेष पण्य नहीं है जैसा फल जिनमन्दिर जी में जा कर दर्शन करलेने का है उतनाही इनकाहैइस लिये आम भाइयों को इन में जाकर अपनाधन खोना योग्य नहीं,वही धन सिद्धक्षेत्रादि तीर्थों की यात्रा में खरचा अनन्तगुणा फले है।

पस यह तो सैरसपट्टे धनवानों के हैं धन वान् इन के कारण देश देशांतर की सैर कर

आवते हैं आबहवा तबदील होजाती है अपने मित्रों से मुलाकात हो जाती है; इस लिये मामूली भाई और धर्म्मात्मा पण्डितों को इन में जाकर अपनाधन बरबाद करना नहीं चाहिये यहधनसिद्धक्षेत्रों की यात्रा में लगाना चाहिये।

धनकीबरबादी।

१५० जो रथयात्रा में जाये बदून दिल नहीं रहता तो इतना काम जरूर करना चाहिये कि वहां जाकर प्रतिमा के आगे या मन्दिर के चिट्ठे में रुपया मत दो यह रुपया तुम्हारा समुद्र में बे फल डूबता है यह रिवाज अन्यमतियोंका है उन के ठाकुर परिग्रह सहित हैं, हमारे तीर्थं-कर परिग्रह रहित हैं उन को धन का दान देना महापाप का भार है उनके धनकी इच्छा नहीं

यह तो अमीरों ने अपनी परवरिश का रिवाज चला रखा है रथयात्रा के बहाने से लोगों से धन एकत्र कर अपने पास जमाकर लेते हैं सौ में से ८० इतने काम चलता रहता है इतने उस का सूद खाते हैं जब काम विगडता है तो उस धन से अपनी या अपनी औलाद की चार दिन की रोटी चलजाती है, पस हमारे भगवान् के धन की इच्छा नहीं है इसलिये चिट्ठे में एक कौडी भी मत दो और न रथ में चढाओ और न जरासी देर के वास्ते सोने के रथ में बैठ कर हवा खाने के लिये रकम वरबाद करो, जितना रुपया जरा सोने के रथ की सैर करने को वर वाद करना चाहते हो उस रुपये से पुराणे जैन मन्दिरों का जीर्णोद्धार करो, उतने के जैन शास्त्र खरीद कर गरीब श्रावक श्राविका को

वांटो नई प्रतीमा खरीद कर उन की प्रतिष्ठा करवा कर उन ग्रामों के जैनियों को दो जहां जिनमन्दिर नहीं हैं या जैनी पण्डित जो जैन ग्रन्थों के रहस्य से वाकिफ हो उस को नौकर रख कर नगर नगर में धर्मोपदेश दिल वाओ आप तीर्थयात्रा करो दूसरों को कराओ ऐसा करने से तुम्हारा वह धन अनन्तगुणा फलेगा और बजाय पांच सात घण्टे सोने के रथ में बैठने के सागरों पर्यन्त स्वर्ग के रत्न मई सिंहासनों पर बैठोगे जहां अनेक देवांगना सागरों पर्यन्त भोगने को मिलेंगी हमारी नसीहत तो यह है आगे आप की इच्छा है ॥

धन की रक्षा।

१५१–जब यात्रा करनेको जावोतो यदिसारा

कुटुम्ब घर बन्द कर के जाने लगोतो अपना जेवर किसी भी गैर को मत सौंपो किसी का भी इतबार मत करो दुनियां में धन और स्त्री पर मित्र से मित्र भी बेईमान होजाता है आगे ऐसी हजारों मिसालें मौजूद हैं दुनियां में अपनी स्त्री पुत्र पुत्री आदि घर के मनुष्यों के सिवाय दूसरों को मित्र या रिश्तेदार जानउन में धरोर धरने समान और गलती नहीं है और लकडी टीन वगेरह के सन्दूकों में भी बन्द कर के जाना ठीक नहीं संदूक का धन गाया चोर की जेब में है जब चोर पडेगा पहिले संदूक को तोडेगा धन जमीन में गाडजाना चाहिये परंतु मकान के कोनों में मत गाडो अनाज वगैरा की बोरी में बीच में देकर अनाज वगैरा भर कर उस बोरी को सीम कर बहुतसी अनाज की

बोरियों के नीचे दबादेना चाहिये,या गमले में रख कर उपर मट्टी डालदेनी चाहिये या गोवर के गोहों में बन्द कर देना चाहिये या मकान की छत्त में या दिवार में रखदेना चाहिये या मकान की नीव में से ईंट उखाड आलासा बना उस में रखकरउसी प्रकार ईंटांचिन जमीन की मट्टी बेमालूम एकसां कर ऊपर से सारे मकान की जमीन लीपदेनी चाहिये परन्तु जिस जगह रखो उस की सीध में कुछ कहीं ऊपर निशान समझलो कि फलाने मौके पर रखा है ताकि भूल न जावे,या लोहे के सन्दूक या अलमारी में बन्द करना चाहिये धनकी रक्षा के वास्ते लोहे का संदूक खरीदना सखत गलती है जब सन्दूक खोला जावे उस का किवाड ऐसा खतरेनाकहोता हैकि यदि गलतीसे गिरजावेतो

अगर सन्दूक के अंदर कुछ निकालते हुवे उस वक्त बांह है तो बांह उडजाती है सिर है तो सिर कट जाता है, इस प्रकार अनेक खून हो जाते हैं, लोहे की जहां तक हो अलमारी खरीदनी चाहिये अलमारीमें कोई खतरा नहीं है, और बडे शहरों वालों के वास्ते हिफाजत का सब से अच्छा कायदा यह है कि किसी डब्बे या सन्दूकडी में जेवर वगैरा बन्द कर के उस का ताला लगाकर ऊपर कपड़ायामोम जामा सींव कर उस के ऊपर लाख की मौहरे लगा कर बैंक में सौंप आवें बैंक वाले वह लेकर उस को रसीद देदेवेंगे और उस को बडे बडे लोहे के सन्दूकों में तालों के अन्दर बैंकमें रख छोडेंगे जब मालिक मांगने आवेगा तब पांच रुपये उस से किराये के और अपनी रसीद लेकर वह

सन्दूकड़ी वा डब्बा उस के हवाले कर देवेंगे उस वकत अपनी मोहरें ठीक देखलेनी चाहिये इस प्रकार केवल ५) में कुल धन हिफाजत से रहता है । नकद रुपये के नोट खरीद कर किसी किताब या बही में रख जाना चाहिये जिन व-रकों में रक्खो उनदोनों का मूंह जरासी लेई या गून्द से चेप देना चाहिये ताकि यदि कोई कि-ताब को हिलावे लचावे तौभी निकल न पडे, परन्तु जिस किताब में रखो वह बहुती खूब सूरत न हो ऐसी बूरी निकम्मी सी हो जिस को हर कोई रद्दी समझे गोया जहां तक हो अ-पने धन की हिफाजत करके जाना चाहिये ।

रेल का वकत

१५२ यह हम पहिले लिख चुके हैंकिरेल में बारह बारहघंटोका हिसाब नहीं है आधीरातके

एक से शुरू कर के दूसरी आधीरात तक २४ घण्टे गिनते हैं,मसलन दिन के एक बजे को बजाय एक के १३ बजे गिनते हैं इसलिये जहां हम रेल का वकत लिखेंगे उस को इसी हिसाब से समझना और रेल का वकत अकसर करके बदलता रहता है इसलिये जब रेल से उतरो तो रेल के बाबू से पूछ कर या जो रेल पर पटड़ा लगा रहता है उस में पढ़ कर या अगर अंगरेजी जानते हो तो रेल के वकत वाली किताब (RailwayGuide)में देख कर रेल केजानेके वकतकी ठीकठीकपरीक्षा करलो अगर हमारें लिखे में कुछ फरक मालूम हो तो उस को लिखलो ताकि वापिस आने के समय रेलके स्टेशन पर ठीक वकतपर पहुंचसको ॥

———o———

रास्ता

१५३ हर कोई तीर्थों की यात्रा करने को अपने स्थान से जाता है सो हम कौन से नगर से रास्ता शुरू करें पस हम सहारनपुर से लिखते हैं सो जहां से जो यात्रि जावे जो स्थानक उस नगर के नजदीक हो वहां से यात्रा शुरू करके कुल तीर्थों में घूमकर आवे ॥

---o---

यात्रा।

१५४ असल में हिन्दुस्तान के मौजूदा मालूमा तीर्थों की यात्रा चार भाग में तकसीम है।

१ श्रीसम्मेदशिखर की तरफ के तीर्थों की यात्रा जिस को पूर्व दिशा की यात्रा भी कहते हैं।

२ बुन्देलखंड के तीर्थों की यात्रा

३ श्रीगिरनारजी की तरफ के तीर्थों की यात्राजिसकोदक्षिणदेशकी यात्राभी कहते हैं ॥

४ जैनवद्री मूलवद्री देश के तीर्थों की यात्रा इन के इलावे पश्चिम और उत्तर दिशाकी और भी यात्रा हैं परन्तु कालदोष से न तो उन का ठीक ठीक पता है और न जाने का अमन का रास्ता है मसलन कैलाशपर्वत वगैरह ॥

इस लिये अब हम ऊपर बियान करी हुई चारों तरफकी यात्राओं को ऐसे तौरपरबियान करते हैं कि जो एक वार सफर करने से सब के दर्शन हो जावें,क्योंकि यह इनसान घर के मोह जाल में ऐसा फंसा हुवा है कि इस का घर से वार वार तो क्या छुटकारा हो सकता है एक वार भी घर के धन्दे बन्द करके यात्रा को जाना कठिन है अनेक यही कहते हुए कि

अगले साल जरूर यात्रा करने को जावेंगे काल की गाल में चले जाते हैं, और दर्शन न-सीब नहीं होते असंख्यात भव के बाद भी मनुष्य देह बडे पुण्य के उदय से मिले है, फिर नीरोग शरीर धन का आश्रय श्रावकधर्म पाना बडा कठिन है सो जिस को यह सर्व बात मिली और उसने तीर्थों के दर्शन नहीं किये गोया उस ने हाथ में आया चिन्तामणि रत्नडवोदिया अर्थात् मनुष्य पर्याय योंही खोई, इसलिये जहां तक हो सके तीर्थों के दर्शन जरूर करने चाहियें और जब यात्रा को जावो तो करड़ा हिया कर के एक वार में ही सारों के दर्शनकर आवो, और जो वार वार जाते हैं उन के पुण्य की तो क्या बात है परन्तु सारी बात धन खरच कर सकने की तौफीक पर है, इसलिये यह

अपनी अपनी श्रद्धा पर मुनहसिर है कि चाहे कोई चारों यात्रा एक वार करे चाहे दो तीन वार वार में करे परन्तु हम सारे दर्शन एकवार में ही लिखते हैं यात्राओं के दर्शन बड़े पुण्य के उदय से भाग्यवान् को होते हैं पापी लाखों रुपया छोड़कर मरजाते हैं परन्तु उन को यात्रा के दर्शन नसीब नहीं होते ॥

दोहा।

तन मन धन सब खरचकर, यात्रा करो सुजान
भवधर सुरपद पाय कर, फिर जावो निरवान ॥

यह हमारा बनाया हुवा प्रथम अधिकार सम्पूर्ण हुवा

ज्ञानचन्द्र जैनी, लाहौर

जैनतीर्थयात्रा

दूसरा अधिकार

अब हम लाला प्रभुदयाल और अपना बनाया हुवा दूसरा अधिकार लिखते हैं इस में तीर्थों के मार्ग का वर्णन है पहिले हम उन तीर्थों के नाम लिखते हैं जिन का इसमेंवर्णन कियाजावेगा ॥

सिद्धक्षेत्र ।

१ सम्मेद शिखरजी २ गिरनारजी ३ पावांपुरजी ४ चम्पापुरजी ५ मांगीतुंगी जी ६ मुक्तागिरिजी ७ सिद्धवरकूट ८ पावागढजी ९ शत्रुंजयजी १० बडवानी जी ११ सोनागिरि जी १२ नैनागिरजी १३ दौनागिरजी १४ तंरगाजी

१५कुन्थुगिरिजी १६ गजपन्थहजी १७राजग्रही १८गुणावा १९ पटना ॥

तीर्थंकरों को जन्म भूमि और अतिशय क्षेत्र।

२०अयोध्या २१ रत्नपुरी २२ श्रावस्तीनगरी २३ बनारस २४ सिंहपुरी २५ चन्द्रपुरी २६ कुण्डलपुर २७ कौशाम्बी २८ कंपिला २९ शोरीपुर ३० हस्तनागपुर ३१ चांदनपुर ३२ केसरिया नाथ ३३ अन्तरिक्षपार्श्वनाथ ३४ गोमठस्वामी ३५ थोवनजी ३६ पपोराजी ३७ जैनबद्री ३८ मूलबद्री ३९ अहिक्षतजी ४० आबूजी ॥

इसी प्रकार और भी अनेकउत्तमोत्तम दर्शन लिखेंगेअगर कुलस्थानोंकानामलिखा जावे तो पाठ बहुत बढ जाय इन सारे स्थानों के दर्शन को वही समझेगा जो इस पुस्तक को आद्योपांत पढेगा या इस बमुजब दर्शन करेगा ॥

जैनतीर्थो कामार्ग।

अब सहारनपुरसे जैनतीर्थोंकामार्ग लिखते हैं

सहारनपुर

इस शहर में स्टेशनसे आधमील पर मित्राश्रम है मुसाफिरों को इस में ठहरना चाहिये इस शहर में ११ जिनमन्दिर और ५०० घर सूर्यवशी क्षत्री अग्रवाल जैनियों के हैं यहां पर कार्तिकबदी ८ से ९ तक रथयात्रा का मेला प्रतिवर्ष होता है यहां पर कंपनी वाग सैरकरने के लायक है यहां के मालदे आम बहुत मशहूर हैं दूर दूर के नगरों में जाकर बिकते हैं सवारी के लिये यक्के शिकरम हर वकत मिलते हैं यहां से टिकट आंवले (Aonla) का लेवे फ़ासला मील १७३ है किराया तीसरा दरजा

२।)डौडा दरजा ३=)॥है रेल१।-७।-१२-२०॥ बजे चलती है रास्ते में मुरादाबाद चन्दौसीपर रेल बदलती है ॥

हरिद्वार

सहारन पुर से रवाने होकर ३२ मील पर लकसर स्टेशन आता है लकसर से हरिद्वार१६ मील है दूसरी रेल जाती है यदि हरिद्वार की सैर करनी होवे तो सहारनपुर से पहिले टिकट हरिद्वारकालेवे किराया रेल सहारनपुर से तीसरा दरजा ॥≋)। डौढा ॥।≋)॥ है गंगा के किनारे पर मकानों में ठहरे,यद्यपि गंगा में स्नानकरने से हम लोग पुण्य नहीं मानते परन्तु पाप भी नहीं है विमारों को सेहत हासिल करनेके लिये वहांकी आब हवा बहुत उमदाहै यहांसे टिकट आंवले का लेवे फासला मील १७४ है किराया

तीसरा दरजा २)॥। डोढा २॥।=) है रेल अ-
११।–१९ वजे चलती है ॥

बद्रीनारायण

यह हिन्दुवोंका बड़ा तीर्थ है जाने का रास्ता हरिद्वार से है पैदल १५ दिन में जाकर पहुचते हैं हमारे कई तीर्थोंकापतानहीं लगताकिसीजैनी को अैसेअैसे हिन्दुवों केतीर्थमें जाकरअगर कोई जैनचिन्ह मिलजावे तो पतालगाना चाहिये ॥

देहरादून, मसूरी

हरिद्वार से देहरेदून तक रेलबनी हुई है फासला ३२मीलहै, देहरेदूनसे १४ मील मसूरीपहाड़ है, यहां गरमी में भी अत्यन्त शीतऋतुरहती है ॥

रास्ते के शहर

सहारनपुर या हरिद्वार से चलकर आंवले स्टेशन के वीचमें नजीबाबाद धामपुर सिवहारा

मुरादाबाद चंदौसी आते हैं यदि इन में से किसी नगर की सैर करनी हो या माल की खरीद फरोखत के लिये दिसावर का हाल मालूम करना हो या मन्दिरों के दर्शन करने हों तो पहले सहारनपुर या हरिद्वार से टिकट उस नगरका लेवो जहां उतारना चाहतेहो ॥

अहिच्छत जी ।

आंवला से अहिक्षत जी ६ मील है इस समय इस स्थान को रामनगर कहते हैं । आंवला स्टेशनसे रामनगर जाने को स्टेशन पर बैल गाड़ी मिलती है किराया ॥।) है इस क्षेत्र पर श्री पार्श्वनाथ भगवान् को तप के समय कमठ के जीव ने बहुत बड़ा उपसर्ग किया था। जिस को धरणेन्द्र ने फौरन दूर

किया और उपसर्ग के दूर होते ही श्री पार्श्व नाथ स्वामी को इसीस्थान पर केवलज्ञान उत्पन्न हुवा हरसाल चैतबदी ८ से १२ तक बड़ा मेला होता है यात्रियों के ठैरने के लिये रामनगर से बाहिर एक बडी धर्मशाला है इस धर्मशाला के अन्दर एक छोटी कोटडी में चर्णपाद बने हुवे हैं यही जगह अहिक्षतजी कहलाती है दर्शन करने को रामनगर में माली के घर में एक श्रीजी का प्रतिबिम्ब भी विराजमान है यहां पर खाने पीने को आटादाल आदि और सामग्री केलिये सबचीजें मिलजाति हैं आंवला से टिकट लखनऊ (Lucknow) का लेवे यहां से लखनऊ १६४ मील है किराया रेल तीसरा दरजा २⸗)डोढा दरजा ३॥≡)॥ रेल–१२॥ १६॥–२१॥ बजे चलती है॥

रास्ते के बड़े शहर

आंवला लखनऊकेरास्ते में बरेली और शाहजहांपुर बड़े शहरआते हैं जिस शहरमेंउतरना हो आंवले से पहिलेटिकट वहां का लेवे ॥

लखनऊ

यहां पर ३ मन्दिर और एक चैत्यालय है इन में से एकमन्दिर चौक बाजारमें गोलदरवाजे के पास चूड़ीवाली गली में है और एकमन्दिर साआदत्तगञ्ज और एक अहियागञ्जमेंहैयहां पर कुछ मकान चौक और अहियागञ्ज के मन्दिर के पास धर्मशाला के हैं उन में यात्रि ठहर सकते हैं यहां पर १५० घर अग्रवाल क्षत्रिय जैनियों के हैं यहां पर सवारी के लिये यक्का शिकरम हर जगह मिल सकता है यहां पर हुसेनाबाद मच्छीभवन अजायबघर केसरबाग

देखने के लायक हैं यहां पर चिकन के दूपट्टा टोपी सादी वा ज़री की और मिट्टी के खिलोमें इसी जगह के बने हुवे बहुत उमदा मिलते हैं लखनऊ से टिकट सोहवाल(Sohwal) स्टेशन कालेवे फासला मील७०हैकिरायातीसरादरजा ॥।≠)॥डौढा१।)॥है रेल८॥ १६–बजेचलती है ॥

रत्नपुरी।

सोहावल स्टेशन से रत्नपुरी ३ मील है इस समय इस स्थानक को नौराई कहते हैं सवारी का इन्तजाम स्टेशन से कर लेवे, यहां पर पन्दरहवें तीर्थंकर धर्मनाथस्वामीके चार कल्याणक हुवे हें यहां एक धर्मशाला है उस में ठहरें खाने और पूजन की सामग्री का सामान तीन रोज का अपने हमरा सोहावले से लेजाना

चाहिये नौराई में कोई चीज नहीं मिलती क्योंके नौराई छोटासा ग्राम है यहां से लौट कर सोहावल स्टेशन पर आकर टिकट अयोध्या (Ajodhya) का लेवे फासला मील १३ है किराया तीसरा दरजा ≈) डोढा ।) है रेल ११-१९। बजेचलती है ॥

रास्ते का बडा शहर

रास्ते में बडा शहर फैजाबाद आता है ॥

अयोध्या

शहर अयोध्या स्टेशन से२ मिल है सवारी के लिये यक्के स्टेशन पर और शहर में हरवकत मिलते हैं यहां पर पांच तीर्थंकरों का जन्म स्थान है श्री आदिनाथ जी अजितनाथ जी अभिनन्दननाथ जी। सुमतिनाथ जी। अनन्त

नाथ जी और एक मन्दिर और एक धर्मशाला दिगम्बरी है और एक मन्दिर और एक धर्म शाला श्वेताम्बरी है यात्री को अपनी अपनी धर्मशाला में ठहरना चाहिये। यहांपर वैष्णवों के बडे बडे मन्दिर देखने के लायक हैं और यहां पर पत्थरकीकिस्मके बरतन पियाला रकाबियां वगैरा बहुत मिलती हैं यहां से श्रावस्तीनगरी की यात्रा को जावे रास्ते का हाल आगे श्रावस्ती नगरी के वर्णन में लिखा है॥

——०——

श्रावस्ती नगरी

यहां पर तीसरे तिर्थंकर श्रीसम्भवनाथ स्वामी का जन्म हुवा है इस समय इस स्थान का नाम मेहेटग्राम है यहां पर एक मन्दिर है

आवादी नहीं है गांव उजाड पडा है ।अयोध्या से तलाश करके यात्रा करने को जाना चाहिये या अयोध्या से टिकट वलरामपुर का लेवे और बलरामपुर से श्रावस्ती नगरी की यात्रा को जावे वहां से सवारीका बन्दोवस्त करके मेहेट यात्रा करनेको जावे क्योंकि बलरामपुरसेरास्ता ठीक है अयोध्या से रास्ता नहीं है, वलरामपुर से १० मील के करीव है और यात्री वहरायच हो कर भी यात्रा को जाते है वहरायच में भी एक मन्दिर है और सब सामान समग्री वगैरा का मिल सकता है मेहेट से दर्शन करके वलरामपुर या वहरायच आना चाहिये और वहरायच से अयोध्या और अयोध्या से टिकट बनारस छावनी (Benares) Cantt) का लेव किराया रेल तीसरा दरजा

१।-)॥ डोढा २) फासला मील ११५ रेल १२
२०।—२३ बजे चलती है ॥

रास्ते का बडा शहर।

रास्ते में बडा शहिर जौनपुर आता है ॥

बनारस शहिर

यहां पर दो मन्दिर और दो धर्मशाला भेलूपुरे में स्टेशन रेल से ३मील हैं यहां पर यात्री को ठहरना चाहिये यहां पर श्री सुपार्श्वनाथ और पार्श्वनाथ स्वामी का जन्म स्थान है श्री पार्श्वनाथका जन्म कल्याणकभेलूपुरामें हैऔर श्री सुपार्श्वनाथ का जन्म कल्याणक भदेनी घाट पर है यहां पर अब छे मन्दिर और तीन चैत्यालय हैं इनमें से एक चैत्यालय में जोके छन्नू बाबू जौहरी के मकान में चौंक बाजार के पास भाट की गली में है श्री पार्श्वनाथ

स्वामी की हीरे की प्रतिमा है इसके दर्शनसवेरे के ८ बजे तक होते हैं इन सब के इलावा भेलूपुरा में एक मन्दिर श्वेताम्बरी है यहां पर बनारसी डूपट्टे रंगिन वा सुफेदरेशमी साद वा ज़री के और खिलोने लकडी के रंगीन वा पित्तल के इसी शहर के बने हुवे बहुत मिलतेहैं यहांपर हिंदुवोंकेपांचहजारसे जियादा शिवालय हैंऔरखासकर श्रीविश्वनाथका शिवालय बहुत बड़ाहै और औरंगजेब की मसजिद व राजावों के ठहिरने के मकान देखने लायक हैं यहां से रवाना होकर सिंहपुरी जावे और सामग्री वा खाने का सामान बनारससे अपने हमरातीन रोज का लेजाना चाहिये सवारी के लिये यक्का बनारस से दोनो जगह यानी चन्द्रपुरी केलिये भी कर लेना चाहिये किराया यक्का जोके एक

ही रोज में दोनों जगह के दर्शन करा के शाम को वापिस बनारस पहुंचादे १॥) से २) रुपैये तक है अगर एक रोज सिंहपुरी या चन्द्रपुरी रातको ठहरनेका इरादा होवेतो किराया ठहिरा लेना चाहिये और सिंहपुरी में मुकाम करना चाहिये आराम की जगह है बनारस से पहिले सिंहपुरी जाना चाहिये ॥

—o—

सिंहपुरी

सिंहपुरी बनारस से६मील है रास्ता कच्ची वा पक्की सडक का है यहां पर एक मन्दिर और एक बडी धर्मशाला है और यहां पर श्रेयांस-नाथ स्वामी के चार कल्याणक हुवे हैं यहां से चन्द्रपुरी जावे ॥

———

चन्द्रपुरी

सिंहपुरी से चन्द्रपुरी सात मील है यहां पर जैनियों का कोई घर नहीं है और न यहां कोई चीज मिलती है यहां पर श्री चन्द्रप्रभ स्वामी के चार कल्याणक हुवे हैं और यहां पर जिन मन्दिर दरया गंगा के किनारे पर है उसी के पास कुछ मकान यात्रियों के ठहिरने के वास्ते बने हुवे हैं यहां से दर्शन करके बनारस शहिर के स्टेशन पर लौटकर आना चाहिये ओर यहां से टिकट आरे(Arrah)का लेवे किराया तीसरा दरजा १। =)डोढा १।||#)||| फासला मील१०७ है रास्ते में मुगलसराय पर रेल बदलती है ॥

आरा

यह शहिर देखनेके लायकहै यहां पर पंदरह मन्दिरबारांचैत्यालयओर१०० घरअग्रवालक्षत्री

जैनियों के हैं यहां चौकमें बाबू मखनलाल की कोठी में ठहिरे यहां से टिकट पटने (Patna) का लेवे किराया तीसरा दरजा ।≡)॥ डोडा ॥=)॥ फासला मील ३६ है रेल १।-७॥-१२ १६।॥-१८। बजे चलती है ॥

रास्ते के बड़े शहिर

आरे और पटने के बीच में दीनापुर और बांकीपुर आते हैं

नैपाल (Nepal)

नैपालको रास्ता बांकीपुर से जाता है बांकीपुर दरयाय गंगा के किनारे पर है सो बांकीपुर से अगनबोट में बैठ कर गंगा के परले किनारे पर जाकर उतरते हैं वहां से रेल में सवार हु कर १०० मील सिगोली जाते हैं आगे नैपाल का राज्य है नैपाल ४६०मील लंबा और १५० मील चौड़ा है इसका कुल रकवा चव्वन हजार

मील है इस में २० लाख मनुष्य वसते हैं यह मुलक पहाडी है दुनियां में सब से ऊंची चोटी नैपाल के पहाड़ों की है इस के परले सिरे पर तिब्बत है नैपाल की राजधानी खटमण्डू है इस की अवादी ५० हज़ार है सीगोली से टोंगे में सवार हो कर तीन दिन में खटमंड़ू जा पहुंचते हैं इस समय नैपाल में बुध धर्म है बडे, बडे, ऊंचे कीमती पीतल तांबेकी छतोंके बडे, खूब-सूरत अनेक मंजिले मंदिरहैं पहिले नैपाली जैन धर्मी थे जब सम्वत विक्रम से २३६ वर्ष पहिले राजा चन्द्रगुप्त के समय हिन्दुस्तान में महा भयानक अकाल पड़ा तब इसदेशमें मुनियोंको आहार न मिलने से मुनियों का स्वर्गवास हो जाने से जैनधर्म नाम मात्र ही रह गया था उस समय फिर नैपाल देशसे ही यहां मुनिधर्म

की प्रवृती हुई थी अगर कोई जैनी अब भी हौंसला कर के नैपाल की सैर करे तो काफी उमैद है कि अनेक चिन्ह जैन के वहां मिलेंगे जिस को जाना होवे गोहा से पास लेलेव वगैर पास के कोई रियास्त नैपाल में नहीं जानेपाता गोहामें रियास्त नैपालके सूबेदार वहादुर रहतेहैं दरख्हास्त करने से पास दे देते हैं सिगोली से गोहा १७ मोलहै नैपाल में अंगरेजी राज्य की तरह आजादी नहीं है वहां कोई लैकचर वगैरा किसी प्रकार की वहस नहीं कर सकता ॥



आसाम (Assam)

आसाम को वांकीपुर से जाते हैं ॥

कैलाश पर्वत

श्री कैलाशपर्वत मुलक तिब्बत में है तिब्बत

पहाडी मुलक है और दुनियां में सब से ऊंचा मुलक है दरया ब्रह्मपुत्र कैलाश पर्वत के पूर्व से निकलता है और कैलाश पर्वत के दक्षिणमें बहता है और मानसरोवर जहां पर पवनञ्जय का अञ्जनी से विवाह हुवा था कैलाश पर्वत के करीव चीनी तिब्बत के दक्षिण व पश्चिम में है श्री कैलाश पर्वत से श्री आदिनाथ स्वामी मोक्ष को गयेहैं। मुलक तिब्बत में रास्ता आज कल जानें का काश्मीर होकर है क्योंकि मुलक तिब्बत गैर मुलक पहाडी है और आज तक कोई जैनी भी वहा नहीं गया है इसलिये वहां का ठीक हाल नहीं लिखा जासकता है और वहां पर भाषा भी दूसरी है वहभी हम लोगों की समझ में नहीं आसकती नैपाल और तिब्बत के अनेक मनुष्य लाहौर में आते रहतेहैं

हम कैलाश की वावत दरयाफत करते रहते हैं सो हमको कई नैपालियों ने यह कहाहै कि जो नैपाल में ऊपरपहाडों पर वकरी वगैरा चरानेको जाते हैं जब वर्षा होकर थमती है तो सुभे वा श्याम उन को वरावर कैलाश नजर आता है ॥

गयाजी (Gya)

यह हिन्दुवों का वडा तीर्थ है अनेक हिन्द यहां पिण्ड देने को जाते हैं वांकीपुर से गयाजी तक अलग रेल वनी हुई है फासला मील ५९ है किराया तीसरा दरजा ।॥।) ढौढा १)॥। है ॥

पटना (Patna)

पटने से सेठ सुदर्शन मोक्ष गए हैं यहां पर जिन मन्दिर वा चैत्यालय सात हैं एक धर्म शाला स्टेशन के पास है और एक स्टेशन से डेढ मील सेठ सुदर्शनके वगीचे के साम्हने श्री

नेमिनाथ स्वामी के मन्दिर के पास है इस में यात्री ठहरे इस शहर में ट्रेमवे गाडी चलती है पटने से यक्के या घोडागाडी में कवलदा यानि सेठ सुदर्शन के निर्वाण क्षेत्रके दर्शन करे पटने से ६ मील वांकी पुर है रेल या शिकरम में सैर कर सकते हो पटने से टिकट वखतियारपुर (Bukhtiarpur) का लेवे फासला २२ मील है किराया रेल तीसरादरजा ।) डोढा दरजा ।≠) है रेल ३।–८॥–१५॥–१८॥ बजे चलती है ॥

पावापुर

वखतियारपुर स्टेशनपर उतर कर स्टेशनके पास धर्मशाला में ठहरे स्टेशन पर वहुत छकडे वा शिकरम मिलती हैं सो यहां से शिकरम या छकडा किराये करके शहिर बिहार जावे विहार

यहां से १८ मील है विहार में दो जिन मन्दिर हैं यहां से दर्शन कर के छकडा पावापुरगुणावा राजग्रही (पञ्चपहाडी) और कुण्डलपुर कीयात्रा के लिये किराये ठेकेपर करलेना चाहिये और पूजन की सामग्री व आठ दस दिन का खाने का सामान लेकर पहिले पावापुर की यात्रा को जावे पावापुर शहिर विहारसे १२ मीलहै पावा पुर में तालाव के बीच में महावीरस्वामी का मन्दिर हैं यहांही से महावीरस्वामी मोक्षपधारे हैं यहां परएकमन्दिरदिगम्बरी और एक श्वेताम्बरी आम्नायका है और दो धर्मशाला हैं दिवाली के रोज यहां वड़ा मेला होता है पावापुर से गुणावा की यात्रा को जावे ॥

गुणावा।

पावापुर से गुणावा दस मील है यहां से गौत्तमस्वामी मोक्ष गए हैं इस समय गुणावा का नाम नवादा है यहां से दर्शन कर के राज-ग्रही को जावे ॥

राजग्रही, पञ्चपहाड़ी

नवादा यानि गुणावा से रवाना होकर राज-ग्रही जावे राजग्रही यहां से १२ मील है यहां से पञ्चपाहाडी से जम्बूस्वामी आदिमुनि सिद्ध भये हैं तीर्थंकरों का यहां ही पञ्चपहाड़ी पर समोसरण आया था इसी राजग्रही में राजा श्रेणिक हुए हैं यहां के दर्शन करके कुण्डलपुर जावे ॥

कुण्डलपुर

राजग्रहीसे कण्डलपुर ७ मील है यहांपर महा बीरस्वामी का जन्म हुवा है यहां के दर्शन कर के विहार शहर वापिस आवे यहां से विहार अंदाजन सात मील है विहार से वखतियार-पुर स्टेशन पर वापिस आवे वखतियारपुर से टिकट नाथनगर का लेवे नाथनगर भागलपुर (Bhaugalpur)स्टेशनसे दो २ मील उरे छोटा सा स्टेशन है गाडी जरासी देर ठहरती है वखति यारपुर से नाथनगर (Nathnagar) १०७मील है किराया रेल तीसरादरजा १।≡) डोढा १॥।≡) है मुकामाके स्टेशन पर रेल वदलती है ॥

चंपापुर

नाथनगर के स्टेशन से चंपापुर मिला हुवा हैं यहां पर दो मन्दिर और दो धर्मशाला हैं यात्री को इन ही धर्मशाला में ठहरना चाहिये यहां पर श्रीवासपूज्यस्वामी के पञ्चकल्याण हुये हैं यहां से एक मील श्वेतांबरी दो मन्दिर चपानाले के पास हैं इन के शामिल भी एक दिगम्बरी मन्दिर है दिगम्बरी कहते हैं हमारे मन्दिर की जगह से वासपूज्य तीर्थंकर मोक्ष पधारे श्वेताम्बरी कहते हैं हमारे मन्दिर की जगह से। अगर तासुब को छोडकर विचारा जावे तो दिगम्बरीयों से श्वेताबरी मन्दिर पुराणा है हमारी राय में साफ साफ यह निश्चय नहीं है कि किस जगह से मोक्ष गए हैं हमने तो

तीनों ही मंदिरोंके स्थानक बन्देथे भागलपुरसे १६ या १८ मील के फासले पर एक पहाड पर एक प्राचीन वासपूज्य स्वामी का जिनमन्दिर है हमने भागलपुर में इस पहाडका पतालगाया था अशुभ कर्म के उदय से जलद लाहौर चले आए। उस पर्वतके दर्शन को नहीं जासकेक्या अजब है उस पहाड से भगवान् मुक्त गए हों क्योंकि करोडों वर्षकीवात है उन दिनों में पचास पचास कोसमेंको एक एकनगर बसता था सो यात्रियों को भागलपुर के जैनियों से पता लगा कर उसपर्वत के भी दर्शन करने चाहियें, यहां से भागलपुर शहर दो मील है देखने के लायक है भागलपुर शहरमें भी जिन मन्दिर हैं धर्मशाला भी हैं भागलपुर में रेल जियादा देर ठहरने के कारण हम तो भागलपुर

ही रेल से उतरे चढे थे, सवारी के लिये यक्का शिकरम हर जगह मिल सकती है चंपापुर में टस्सरका कपड़ा बहुत उमदा बनता है जो भागलपुरी कपडे के नाम से मशहूर है, नाथनगर से या भागलपुर से टिकट ग्रीडी का लेना चाहिये रास्ते में लखीसराय और मधुपुर के स्टेशन पर गाडी बदलती है मधुपुर से दूसरी गाडी गरीडी जाने वाली में सवार होते हैं किराया रेल भागलपुर से गरीडी तक तीसरा दरजा २≈) डौढा दरजा ३) फासला मील १६५ है रेल १॥–६॥–१५॥–२१॥ बजे चलती है

वैद्यनाथ (Baidya Nath)

यह हिन्दुवों का बडा तीर्थ है यह भागलपुर से ग्रीडी को जाते हुए रास्तेमें लकीसराय और मधुपुर के बीच में वैद्यनाथ स्टेशन आता है

यदि यहां की सैर करनी होवे तो वैद्यनाथ के स्टेशन पर उतरकर बैजनाथ जावे यह स्टेशन से थोडे ही मील है अगर बैजनाथ जाना होवे तो पहिले भागलपुर से वैद्यनाथ का टिकट लेवे फिर वैजनाथ जाकर आन कर वैद्यनाथ से गरीडीका टिकट लेवे ॥

गरीडी (Giridih)

यहांपर दो मन्दिर और तीन धर्मशाला हैं इन में से एक धर्मशाला तेरापंथीयों की है। और एक मन्दिर और एक धर्मशाला वीसपंथी आम्नायकी है और एक मन्दिर वा एक धर्मशाला श्वेताम्बरीयों की है हर एक धर्मशाला की तरफ से एक एक चपरासी रेलवे स्टेशन पर यात्रीयों को तलाश करने के लिये आता है और जो यात्री जिस आम्नायका रेल से उतर

ता है उस को अपनी अपनी धर्मशाला में ले जाते हैं और सवारी का इन्तजाम कर के मधवन को रवाना करदेते हैं धर्मशाला रेल के स्टेशन के पास हैं सवारी के लिये यहां पर छोटे छोटे छकडे मिलते हैं जिन में चार आदमी आराम से बैठ सकते हैं। किराया फी छकडा १=)। से १।-)। तक यात्रीयों की भीड पर है। गरीडीसे मधुवन १८मीलहै रास्ता कच्चासडक का है गरीडी से ८ मील वराकट नदी आती है रास्ते में खाने का सामान गरीडी से ले लेना चाहिये और वराकट नदी पर खालेना चाहिये क्योंके छकडे श्यामतक मधुवन पहुंचतेहैं और रास्ते में कोई चीज खानेकी नहीं मिलती है ॥

मधुवन

मधवन श्रीसम्मेदशिखर पहाड की तलहटी

में है यहां पर तीन धर्मशाला हैं एक तेरह पंथी एकवीसपंथी और एक श्वेताम्बरियोंकी है इन के साथ ही अपने अपने आम्नाय के मंदिर बने हुएहैं मंदिर वा धर्मशालाओंके बंदोवस्तके लिये जदाजुदा मुनीम और चपरासी रखेहुएहैं सो यात्रियोंको अपनी अपनी आम्नाय की धर्म शालामें ठहरना चाहिये उसीमें उनको आराम मिलेगा यहां पर कोई वाजार या शहर नहीं है मगर जाडे में यात्रा के दिनों में कुछ दूकाने बाहिर से आजाती हैं उन में से सब सामान पूजन की सामग्री और खाने का उमदा मिल ता है यात्रा के दिनों में सैंकडों मोहताज वा अन्धे वा लंगडे लूले बाहिर से यहां आजाते हैं इसलिये यात्रियों को अपनी शक्ति के मुआफिक उन की परवरश के लिये नए अथवा पुराने वस्त्र

जाड की मोसम के साथ लेजाने चाहियें यहां पर वसन्तपञ्चमी को रथयात्रा का बडा मेला होता हैं यात्रीयों वा लडकों को सम्मेदशिखर के दर्शन कराने के लिये डोलियां वा मजदूर बहुत मिलते हैं किराया डोलियों का यात्रियों की भीडपर १॥) से २॥) तक है और मजदूर ।≈)से॥)तकहै औरजिस किसी को अपने घरसे राजी खुशीकी खबर मंगानाहो तो पता यह हैं॥

मुकाम मधुवन डाकखाना पार्श्वनाथ स्टेशन गरीडी जिलाहजारीबाग,फलानी जैनधर्मशाला में फलाने यात्रि फलाने नगर निवासी कोमिले यह पता लिखने से फौरन खत जा पहुंचता है

श्री सम्मेदशिखर

यह जैनियों का महान् तीर्थ है इस क्षेत्र से

२० तिर्थंकर और असंख्यात केवली मोक्ष गए हैं जो मनुष्य शुद्ध भाव से एक बार भी इस पर्वत की यात्रा करलेता है वह फिर तिर्यंच पशु गति में भ्रमण नहीं करता और जियादा से जियादा ४९ भव तक जरूर मोक्षको चलाजाता है इस पहाड की यात्रा १८ मील की है ६ मील चढाई ६ मील टोंको की बन्दना करने मं सफर करना पड़ता है और ६ मील उतराई है और पहाड की परिक्रमा २८ मील की है सो जिस दिन पहाड पर जाकर टोंकों के दर्शन करनेका इरादा होवे उस से पहिले दिन दुखित भुखित को बांटनेके लिये कुछ पाई या पैसे या दुवन्नी चवन्नी जैसी अपनी श्रद्धा हो धोकर रख लो क्योंकि खबर नहीं वह किनकिन बूचरादिक के छुए हुए हैं और क्या क्या अपवित्र वस्तु उन

के लगी हुई है और साफ कपडे. तैयार कर लेवे अगर साफ नहीं तो धोकर सूकने डाल देवे एक लालटैन एक जोडी पवित्र कपडे के मौजे तियार कर के रखे और अगर बच्चा गोद लेने को कोई नौ कर और अपने या स्त्री वगैरह कुटं बियों के वास्ते डोली दरकार होवे तो इयामको इन्तजाम करलेना चाहिये, अगर पहाड पर सामग्री चढाने को किसी रकेबी कटोरी वगैरह बरतन की जरूरत हो तो भंडार से लेलेनी चाहिये और अगले दिनकी रसोईके वास्ते सामान खरीद कर रखलेना चाहिये क्योंकि जब पहाड से आओगे ऐसे थके हुए होगे कि एक कदम जाना भी सख्त नागुवार गुजरेगा,और अगले दिन बहुत सुबे ही उठ कर शरीर की क्रिया से फारिग हो स्नानकर पवित्र वस्त्रपहिन सामग्री

कटोरी रकेबी मौजे और पैसे साथ ले कमर कस नौकर के हाथ में लाल टैन बालकर दे धर्मशाला का सिपाही तलवार सहित साथ ले चार बजे ही पहाड पर चल दो मार्ग में भील लोग एक एक पैसे को वांस की लठोरी बेचते हैं सो हर एक यात्री को एकएक खरीद कर हाथ में लेलेनी चाहिये ताकि उस को टेक टेक कर उस के सहारे से दवादव ऊपरचढता चला जावे और थकावट में टेक कर चलने से मदद करे,गिरने से वचे इसप्रकार पहाड पर जावो सो पहिले पहिल दो मीलकी चढाई पर गंधर्व नालो आता है इससेएकमीलऊपर सीतानाला आता है सो लालटैन की रौशनी में देख कर सीतानाले से जल ले समग्री धोलेवें फिर सीतानाले से पौडियां शुरू होजाती हैं यहां से

तीन मील चढ़ने के बाद प्रथम टोंक श्रीकुंथु नाथस्वामी का आता है इस की बन्दना कर के बांई तरफ के टोंकों की बन्दना करने को जाते हैं सो दूसरी टोक नमिनाथ की है तीसरी- अरनाथ की चौथी मल्लिनाथकी पांचवीं श्रेयांस नाथकी छठी पुष्पदन्त की सातवीं पद्मप्रभ की आठवीं मुनिसुब्रतनाथ की नवमी चन्द्रप्रभकी दशमी श्रीआदिनाथ की है,यह टोंक बनावटी है क्योंकि आदिनाथस्वामी तो कैलाशपर्वत से मोक्ष को गए हैं यह इस कारण से यहां वनी है कि और अनन्ते चौबीसी इसी पर्वतसे मोक्ष को गई हैं केवल इस हुण्डावसर्पणी काल के दोष से इस काल में चार तिर्थंकर दूसरे स्थानों से मोक्ष को गए हैं और जब प्रलय होतीहै तो और स्थानों का कुछ यह नियमनहीं कि जहां

अब हैं वहां ही बने, नहीं कहीं ही बनजाते हैं परन्तु हर प्रलय के बाद सम्मेदशिखर इसी जगह बनता है और चौबीसी इसी पर्वत से मोक्ष को जाती है इसलिये यहां पूरी चौबीस टोंक बनाई गई हैं सो सर्वबन्दनीक हैं इसलिये इस दसवीं टोंक को भी बन्दना करो ग्यारहवीं टोंक शीतलनाथ की है बारवीं अनन्तनाथ की तेरहवीं सम्भवनाथ की, चौदवीं वासुपूज्यस्वामी की है यह भीबनावटीहैवासुपूज्यजी चंपापुर से मोक्षकोगयेहैं, पन्द्रवीं अभिनन्दननाथकी है इन १५ टोंकों की बन्दना करके वापिस आते हुए पहाड से जरानीचे के रास्तेमें एक श्वेताम्बरी मन्दिर है इस मन्दिर के बाहिर कोने में छोटी छोटी कोठडोयों में दिगाम्बरी प्रतिमा विराजमान हैं इनका दर्शन कर के जरा यहां बैठ कर

आराम करते हैं ताकी थकावट उतरजावे और यहां पहाड मेंसे जल निकसेहै जलकाआश्रमहै जोयात्रि बृद्ध अवस्थाबालअवस्था या कमजोरी के कारण या थकावटके कारण तृषा को प्राप्त होते हैं वह यहां जरासा जल पीकर अपना चित्त शान्त कर दूसरी तरफ की यात्रा करने को तत्पर होजाते हैं यहां से जराऊपर चढ कर वहां ही कुन्थुनाथ की टोंकपर वापिस आजाते हैं इस को बन्दना कर के दाहनी तरफ की टोंकों की बन्दना करने को जाते हैं कुन्थुनाथ की टोंक के पास किसी ने गौत्तमस्वामी की टोंक बनादी है सो गौत्तमस्वामी तो गुणावा से मोक्ष को गए हैं यह टोंक फालतू बनाई गई है इस तरह तो करोडों केवली दूसरे स्थानों से मोक्ष को गए हैं उन सब की टोंकें भी यहां

होनी चाहियें सो खैर नमस्कार करने में कोइ दोष नहीं परन्तु यह टोंक यूंही फालतू है, इस को टोंक मत समझो हमने इसे टोकों की गिन नी में श्यामिल नहीं करी है यहां से आगे चल करसोलवींटोंक धर्मनाथ की है सतरहवीं सुमतिनाथ की आठारवीं शान्तिनाथ की उन्नीसवीं महाबीरस्वामी की बनावटी है महाबीर पावापुर से मोक्ष गए हैं वीसवीं सुपा र्श्वनाथ की है इकसवीं विमलनाथ की है वाइ- सवीं अजितनाथ की है तेईसवीं नेमिनाथ की वनावटी है नेमिनाथ श्री गिरनार जी से मोक्ष को गए हैं चौबीसवीं टोंकश्रीपार्श्वनाथजीकी है यह टोंक सर्व में बडी है और कुल पहाड से ऊंचे स्थानक पर है दस दस कोस से नज़र आवे है इस टोंक के दर्शन कर के नीचे लौट

आना चाहिये यहां से नीचे उतरने का रास्ता दूसरा है यहां से जरानीचे उतर कर पैरों में मौजे पहिन लेने चाहियें ताकी गरम जमींन पहाड की पत्थरी रेत पैरों के लग कर पैरों में छाले न पडने पावें क्योंकि पैरों में छाले पड-जानेसे दूसरी यात्रा करने की श्रद्धा टूट जाती है,यहां से चलकर आगे रास्ते में एक अंगरेजी बंगला आता है यहां से नीचे उतरते हुए चले आवो रास्ते में अनेक लंगडे लूले आंधे कोढी अपाहज गरीब मोहताज बैठे मिलेंगे अपनी श्रद्धानुसार पाइयां या पैसे या चांदी का सिक्का उन को बांटते हुए चले आवो धर्मशाला में आनकर जो मन्दिर धर्मशाला में हैं, उन के दर्शन करो इस यात्रा में ८ या ९ घण्टे आने जाने में लगते हैं,यहांके दर्शन करके धर्मशाला

में आराम करो खाने को खावो अगले दिन आराम करके तीसरे दिन फिर पहाडपर दर्शनों को जावो इस प्रकार कम से कम तीन यात्रा करो फिर पर्वतकी परिक्रमा दो मजबूत मनुष्य पैदल और डोलीमें हर कोई एक दिन में करते हैं कमजोर बुढे कमउमर पैदलदो दिन में करते हैं हमने तो पैदल एक दिन में ही करी थी फिर चलने से पहले अपनी श्रद्धा अनुसार दुखित भुखित को कपडे और चावल बांटों,और जहां तक हो भण्डार में कुछ मत दो क्योंकि भंडार में जमा करने का कुछ उमदा नतीजा नहीं है हजारो वर्षों से करोड़ों क्या अरबों रुपैया चढा होगा सो जिस जिस में जमा होता रहा जब तक उस का काम चलो गया वह रुपया क्षेत्र की पुंजी गिनी गई जब उनका काम विगड़ा

वह काम विगडने के सबब वापिस नहीं दे सके वह रुपया भी उन के काम के साथ ही विगड़ गया इस लिये भंडार में देना वेफायदा है दूसरे भंडार में देने का कुछ पुण्य भी नहीं है क्योंकि हमारे भगवान् को रुपये की जरूरत नहीं वह तो परिग्रह रहित हैं, हां पौडीबनवाओ सडक ठीक करवाओ धर्मशाला में मकान बनवाओ पहाडपर मन्दिर बनवाओ अगर देनाही है तो थोडासा देकर वापिस ग्रीडी आनकर गारडी से टिकट इलाहाबाद का लेवो फासला मील ४०५ है किराया रेल तीसरा दरजा ५।) डोढा ७॥) है रेल ५-९-२१॥। बजे चलती है ॥

कलकत्ता Calcutta

यदि कलकत्ते की सैर करनी है तो गरीडी से वापिस आते हुए रास्ते में मधुपुर स्टेशन से

कलकत्ते को रेल जाती है फासला १८३ मील है सोरहिले गरोडी से टिकट कलकत्ते का लेवे फासला मील २०७ किराया तीसरा दरजा २॥) है कलकत्ता बडाशहर और बडा दिसावर है दरया हुगलीका पुल हुगली में सैंकडोंजहाज बडा बाजार कपडे के मारकट,काली का मन्दिर फोरट विलयम यानि वह किला जो अंगरेजों ने बादशाह से जमीन मांग कर पहले पहले हिन्दुस्तान में बनाया था,जैनमन्दिर जोशहिर से कई मील सुनहिरे काम का है शहर में भी जिनमन्दिर हैं रात्रिको वडीसडकपर विजलीकी रोशनी शहरमें गैसकी रोशनीगवरनरजनरलकी कोठी अजायब घर सौदागरों की दुकानों की सजावट देखन लायक है ॥

जगन्नाथ Jagannath

पहिलेजगन्नाथ को कलकत्ते से जहाजमें जाते थे अब कलकत्ते से सीधी रेल बनगईहै किराया तीसरा दरजा २)॥। है॥

ब्रह्मा Burma रंगून Rangoon

मुलक ब्रह्मा को कलकत्ते से अगनबोट में जाते हैं, रंगून शहिर इस का दारूलखिलाफा है यह मुलक सोने की चिडया है इस मुलक में स्त्रियों के पडदा नहीं है स्त्री बहुत हैं जिन्होंने इस मुलक में जाकर तिजारत करी हैलक्ष पति व करोडपति बनगए हैं और रंडवे तथा कवांर सब ही विवाहे जाते हैं उस मुलक में जाति वगैरह का बहुता घमण्ड नहीं है॥

इलाहाबाद (Allahabad)

यहां पर तीन मन्दिर और सात चैत्यालय हैं

और एक धर्मशाला स्टेशन से एक मील चौंक वाजार के पास पान के दरीबे में है इस में यात्री को ठहरना चाहिये यह प्रयाग हिंदुवों का बडा तीर्थ है यहां पर त्रिवेणी गंगा और अैलफर्डपार्क किला देखने के लायक हैं ॥

कौशांबी नगरी

कौशांबी नगरी इलाहावाद से ३२ मील है सवारी का बंदोवस्त इलाहावादमें करलेना चाहिये और खाने वा पूजनकी सामग्रीका सामान पांच रोज का इसही जगह से लेलेना चाहिये कौशांबी में एक मन्दिर है जो के पहाड खोद कर बनाया हुवा है एक धर्मशाला है उस में ठहिरे और यहां श्रीपद्मप्रभ स्वामी के चार कल्याणक हुये हैं दर्शन कर के इलाहावाद रेल

के स्टेशन पर आना चाहिये और टिकटकान्ह-
पुर का लेना चाहिये किराया रेल तीसरा दरजा
१॥-) डौढा २॥) फासला मील १२० रेल २।
८-११॥-१५-२१ बजे चलती है ॥

कान्हपुर (Cawnpore)

इस शहर में तीन जिन मन्दिर और एक धर्मशाला है एक बडामन्दिर जरनलगंज में है और एक नई सडक पर लोइया बाजारमें है और धर्मशाला नई सडक पर सब्जी मण्डि के पास है यहांपर यात्रीको ठहरनाचाहिये यहां परकपड़े के बनाने के कारखाने देखने केलायक हैं और चमडेकासामानयहांपरबहुतअच्छाबनताहै चौंक बाजार में श्याम के चार बजे बडी रौनक रहती है यहांसे रवानाहो करफरुखाबादलाइनवालेस्टे शन परआकर कायमगंज Kaimgunj का

टिकट लेना चाहिये किराया रेल तीसरा दरजा १।) फासला मील १०६ है रेल ९॥-२०॥ बजे चलती है।

फरुखाबाद

यह बड़ा शहर रास्ते में आता है देखने के लायक है यदि फरुखाबाद की सैर करनी होवे तो कान्हपुर से पहले फरुखाबाद का टिकटलेवे फिर फरुखाबाद से कायमगंजका टिकट लेवे॥

कंपिला

कायमगंज से कंपिला छै मील है कायमगंज में एक मन्दिर और थोडे घर श्रावकों के हैं यहां से गाडी किराया करके कंपिला जाना चाहिये और सामग्री पूजन व खाने का सामान अपने साथलेजानाचाहिये कंपिला में एकमंदिर

और एक धर्मशाला है उस में यात्री को ठहरना चाहिये यहां पर श्री विमलनाथ स्वामी के चार कल्याणक हुवे हैं यहां से लौट कर कायमगंज के स्टेशन पर आकर टिकट हाथरस का लेवे किराया रेल तीसरा दरजा ॥।≠) फासला मील ८३ है रेल २॥–१८ बजे चलती है ॥

हाथरस (Hathras)

यहां दो जिनमन्दिर हैं एक मंदिरबहुतबड़ा है उसके अन्दर तमाम सुनहरा काम हुवा हुवा है इस बड़े मन्दिर के नीचे धर्मशाला है इस में ठहरे हाथरस से टिकट फिरोजाबाद का लेवे टूण्डले पर रेल बदलती है किराया रेलतीसरा दरजा ॥/) डोढा ॥।_) फासला मील४० है रेल ३।–१६।–बजे चलती है॥



फिरोजाबाद (Ferozabad)

फिरोजाबाद में मन्दिर वा चैत्यालय ८ हैं चन्द्रप्रभ स्वामी के मन्दिर के पास धर्मशाला में ठहरे यहां चार अंगुष्ठ ऊंची एक हीरे की प्रतिमा है जो डब्बे में वन्द कर के तालों के अन्दर रहती है यात्रि की परिक्षा कर के दर्शन करवाते हैं और एक बहुत बडी प्रतिमा स्फटि की है चैत्र में हर साल रथयात्रा होती है यहां से गाडी भाडे करके शौरीपुर की यात्राको जावे॥

शौरीपुर

यह स्थान फिरोजाबाद से २९ मील है यह नेमिनाथ स्वामी की जन्म नगरी है इस समय इस का नाम वटेश्वर है यहां एक मन्दिर है यहां के दर्शन कर के फिरोजाबाद वापिस आवे

फिरोजाबाद से टिकट आगरे का लेवे किराया रेल तीसरा दरजा ।✓)। डेढा ।≠)। फासला २६ मील है रेल ७॥-१३।-२२ बजे चलती है ॥

आगरा (Agra)

स्टेशन से एक मील बलनगंज में जैनमंदिर के पास धर्मशाला है इस में ठहरे इस शहर में १३ मन्दिर और ९ चैत्यालयहैं यहां पर जैनियों के बहुत घर हैं ताज बीबी का रोजा बादशाही किला देखने लायक है आगरे से कुछ मीलों के फासले पर सुना है अमरसिंह राजपूत का नौमहला है पतालगा कर देखना चाहिये आगरे से टिकट मथुरा का लेवे किराया रेल तीसरा दरजा ।≠)॥ फासला ३४ मील है ॥

मथुरा (Muttra)

यह हिंदुवों का बड़ा तीर्थ है यहां पर जिन-

मंदिर व चैत्यालय पांच हैं घीमण्डीमेंबडे मंदिर के पास धर्मशाला में ठहरे शहर से एक मील चोरासी स्थान पर एक मन्दिर है इस को इस समय के जैनी जंबूस्वामी का मोक्ष स्थानक कहते हैं लेकिन जम्बूस्वामी के चरित्र प्राचीन मूलजैन ग्रंथ में जम्बूस्वामी का निर्वाण राज ग्रही यानि पञ्चपहाडी पर लिखा है सो आचार्य कृत ग्रन्थ कहावट के आगे झूठा नहीं हो सकता मथुरा से ५ मील बृन्दावन है चाहे रेल में चाहे यक्के में जावे ॥

बृन्दावन (Bindraban)

यहां पर हिंदुवों के अनेक बडे बडे लाखों रुपयों की लागत के संगमरमर के काम के मन्दिर देखने के लायक हैं रात को जब ठाकुरों की आरती होती है यह मौका देखने के

लायक है, यहां से सैर कर के मथुरा आवे मथुरा से टिकट गवालियर का लेवे किराया रेल तीसरा दरजा १।≡)॥ फासला मील १११ है रेल ८॥-१०॥-१९ बजे चलनी है।

गवालियर (Gwalior)

इस शहरके दो हिस्से हें एक लशकर दूसरा शहर गवालियर रेल के स्टेशन से दो मील चंपाबाग में दो धर्मशाला हें उस में यात्रियोंको ठहरना चाहिये लशकर में वीस मन्दिर और चैत्यालय हें और गवालियर में अठारां मन्दिर व चैत्यालय हें लशकर में दो मन्दिर बहुत उमदा बने हें यहां पर एक छोटा पर्वत आठ मील के गिरदे में है इस के ऊपर गवालियर का किला बना है इस के भीतर जैनके बडेबडे प्राचीन मन्दिर हें जरूर देखने को जाना चाहिये

यहां पर राजा ग्वालियर का फूलबाग इन्द्रभवनमहल व मोतीमहल व नौलखाबाग देखने के लायक हैं देखने की इजाजत लेलेनी चाहिये ग्वालियर से टिकट सोनागिर का लेवे किराया रेल तीसरा दरजा ॥)डोढ़ा ॥=) फासला मील ३८ है रेल १२-१६।-२४ बजे चलती है ॥

सोनागिर (Sonagir)

यहां पर एक धर्मशाला रेल के स्टेशन के पास है सोनागिर रेल से २ मील है सवारी के लिये छोटे छकडे जिनमें कि तीन चार आदमी बैठते हैं रेल के पास वाली धर्मशाला के करीब मिलते हैं किराया फी छकडा ॥) आने है और १घंटे में सोनागिर पहुंचादेते हैं सोनागिर छोटासागाव है और पर्वतके किनारे से मिलाहुवा

है यहां पर एक धर्मशाला तेरापन्थीयों और दो वीसपन्थयों की हैं और पांच मन्दिर तेरां पन्थी वा नौ मन्दिर वीस पन्थी आम्नाय के है और सोनागिर पहाड के ऊपर ६७ मन्दिर हैं इस पर्वत पर से नन्दकुमार अनंगकुमार आदि ले साढे पांच करोड मुनि मोक्ष गए हैं कुल मन्दिरों के दर्शन करने में ३ घण्टे औरफेरी करने में भी १ घण्टा लगता है यहां पर हर साल फागन के महीनें में वडा मेला होता है और यहां पर सामग्री वा खाने का सब सामान मिलता है सोनागिर से टिकट झांसी का लेवे किराया रेल तीसरा दरजा ।–) फासला मील २३ है रेल २॥–१३।–१८॥ बजे चलती है ॥

झांसी Jhansi

यहां पर दो मन्दिर और दो चैत्यालय हैं

और एक सहस्त्रकूट धातु का है झांसी से डेढ मील पुराने बाग में एक मन्दिर प्राचीन है यहां जरूर दर्शन करना चाहिये और एक मन्दिर सदरबाजार छावनी में है यहां से टिकट ललितपुर का लेवे किराया रेल तीसरा दरजा ॥।) डोढा ॥ =) फासला मील ५६ है ॥

नोट-ललितपुर से बुन्देलखण्डकी यात्राशुरू होती है जिस को यह यात्रा न करनी हो वह झांसी से सीधा टिकट भोपाल का लेवे ॥

ललितपुर Lalitpur

ललितपुर स्टेशन से २ मील है शहर में मन्दिर के पास धर्मशाला में ठहरे इस शहर में तीन मन्दिर और एक चैत्यालय है एक मन्दिर रेल से थोडी सी दूर है ललितपुर से एक हफ्ते का खाने का सामान व पूजनकी

सामग्री साथ लेकरगाडीभाडेकरकेचन्देरी और थोवनजीकीयात्राकोजावे पहिलेचन्देरीको जावे

चंदेरी

ललितपुर से चन्देरी २१ मील है रास्ता पथरेलीसडक का है गाडी मजदूर किराया करे रास्ते में दो दो चार चार मील पर ग्राम आते हैं उन में अनेक जिनमन्दिर हैं सो दर्शन करता हुवा जावे ललितपुर से १३ मील पर एक बहुत वडी नदी वेदवती आती है वीच में पत्थरों पर पैर फिसलता है सो किसी वाकिफ मजदूर के सहारे से पारहो कर चन्देरी पहुंचे चन्देरी में तीन जिनमन्दिरहैंएक जिनमन्दिर में २४ तीर्थंकरोंके २४ जिनमन्दिर बडे मनोग्य बने हुए हैं जो जो रंग तीर्थंकरों का था उन

ही रंगों की २४ प्रतीमा चोवीस मन्दिरों में बैठे योगचारचार फुट ऊंची विराजमान हैं चन्देरी के पास एक पहाड में कई प्रतीमा खोदकर बनाई हैं उन में एक प्रतिमा १४ गज ऊची है यहांके दर्शनकर थोवनजी कीयात्राकोजावे

थोवनजी

चंदेरी से थोवनजी १२ मील है रास्ताजंगल व झाडियों काहै एक आदमी चंदेरी से रास्ते का वाकिफ साथ लेवे मार्ग में जो जो ग्राम आवे उन में दर्शन करता हुआ थोवनजी जावे थोवन जी में १६ जिनमन्दिर बडे मनोग्य बने हुए हैं जिनमें बडीबडी अनेक प्रतीमाबीसबीस हाथ तक की ऊंची विराजमान हैं यहां जंगल है यहां से एक कोस ग्राम है उस में ठहिरे

थोवनजीके दर्शन करके ललितपुर वापिसआवे फिर ललितपुर से पपोराजी की यात्रा को जावे

पपोराजी

ललितपुर से पपोराजी ३५ मील हैं सो ललितपुर से गाडी भाडे. कर के चार दिन का खाने का सामान वा पूजन की सामग्री लेकर रास्ते में आने वाले ग्रामो में दर्शन करता हुवा टीकमगढ पहुंच टीकमगढ में १० मन्दिर हैं यहां से पपोराजी दो कोस है सो टीकमगढ से पांच छे रोज का खाने का सामान बहुत सारी पूजन की सामग्री लेकर पपोराजी के दर्शनोंको जावे पपोराजी में ७० जिनमन्दिर बडे. बडे. शिखरबन्द हैं यहां प्रतिवर्ष चैतवदी में बड़ा मेला होता है यहां से दोनागिरी की यात्रा को जावे

दोनागिरि

पपोराजी से दोनागिरि ३५ मील है सो पपो राजी से तीन मील चलकर रास्ते में पठा ग्राम आता है इस ग्राम से एक आदमी रास्ते का जानकर और चार दिन का खाने का सामान वा सामग्री साथ लेकर रास्ते में ग्राम दर ग्राम दर्शन करता हुवा दोनागिरि जावे इस समय दोनागिरिजी को सदेश कहते हैं इस दोनागिरि पर्वत से गुरुदत्तआदि मुनि मुक्ति गए हैं यहां एक जिनमन्दिर है और चैत्रबदी में प्रतिवर्ष बडा मेला होना है यहां के दर्शन करके ४ मील मलारा ग्राम जावे ॥

खजराहा

मलारा ग्राम से खजराहा की यात्रा कोजावे

फासला मील ६३ है रास्ते के ग्रामों में दर्शन करता हुवा खजराहा जावे खजराहा में २१ मन्दिर प्राचीन कई करोड़ रुपये की लागत के बडे, बडे, शिखरबन्द कोरनी के काम के हैं यहां प्रतिवर्ष फाल्गुणवदी ८ से १५ दिन तक मेला रहता है इन मन्दिरों में बडी बडी ऊंची प्रतिमा बिराजमान हैं शान्तिनाथ के मन्दिर में ५ गज ऊंची प्रतिमा विराजमान हैं यहां से थोडे से फासले पर हिन्दुवों के १६ मन्दिर करोडों रुपये की लागत के कामदार देखने लायक हैं खजराहे के दर्शन कर के ६३ मील वापिस मलारा ग्राम आवे ॥

नैनागिरि

मलारा से नैनागिरि ५४ मील है सो रास्ते

के ग्रामों में दर्शन करता हुवा दलपतपुर पहुंचे यहां से एक हफते का खाने का सामान पूजन की सामग्री और रास्ता जानने वाला एक नोकर संग ले यहां से ६ मील जङ्गल झाडियों के रास्त से नैनागिरि जावे इस नैनागिरिसे वर दत्त आदि ५ मुनि मुक्ति को गए हैं यहां १५ जिनमन्दिर बने हुएहैं प्रतिवर्ष कार्तिग में मेला होता है नैनागिरि के दर्शन करके रास्ते केग्रामों में दर्शन करता हुवा यहांसे२०मीलदमोह जावे

कुण्डलपुर

दमोह से कुण्डलपुर २१ मील है सो दमोह के मन्दिरों के दर्शन करके रास्ते के ग्रामों में दर्शन करता हुवा पठेरा ग्राम जावे,पठेरा से खाने का सामान वा पूजन की

सामग्री लेकरयहां से दो मील कुण्डलपुर जावे यहां पर्वत पर बडे बडे ५० जिनमन्दिर हैं और नीचे तालावपर १२ मन्दिर हैं कुल मन्दिर दो मील में हैं इसपर्वत पर महावीरस्वामीकेमन्दिर में बैठेआसन महावीरस्वामी कीप्रतिमाचारगज ऊंची है सो कुण्डलपुर के दर्शन कर के २१ मील वापिस दमोह आवे दमोह रेल का स्टेशन है सो दमोह से टिकट भोपालका लेवे किराया तीसरा दरजा २।=) फासला मील १८१ हैं रेल ६ बजे चलती हैं वीनापर रेल बदलती हैं

भोपाल (Bhopal) —

यह शहिर बहुत बडा है यहां एक तालाव दुनियाभर में देखने लायक है यहां के मन्दिरों के दर्शन कर औरसैरकर यहां से टिकट उज्जैन का लेवे फासला मील ११४ किराया तीसरा

दरजा १॥/) है रेल २१॥ बजे चलती है ॥

उज्जैन (Ujjain) ——

यह शहिर वहुत बडा है कई जिनमन्दिर हैं इस शहर में श्रीपाल मैनासुन्दरी हुए हैं यहां के दर्शन करके टिकट अजन्दका लेवे किराया तीसरा दरजा।) फासला मील २२ है रेल ५ १२। वजेचलतीहै फतेहावादपररेल वदलतीहै।

अजन्द Ajnod

यहां एक मन्दिर है यहां पर सब सामान खाने वा सामग्री कामिलताहै यहां से गाडी भाडे करके वडवानी जावे वडवानीयहांसे१२मीलहै॥-

वडवानीजी

वडवानीमें दो धर्मशाला हैं इनमें ठहिरयहां सेपूजन की सामग्री त्यार करकेलेकर वडे सुवह

चले चार मील ऊपर चलकर सोला मन्दिर मिलते हैं जो कि नये बनेहैं इन के दर्शन करने चाहियें यहां से एक मील आगे चूलगिरि पर्वत है रास्ते में पहाड में उकरी हुई वीस वीस हाथ की उंची इन्द्रजीत और कुम्भकर्ण की प्रतिमा आती हैं इन के दर्शन कर के चूलगिरि के दर्शनोंको जावे चूलगिरिपर एक मन्दिर प्राचीन वनाहुआ है इस में बहुत प्रतिमाहैं इस पर्वत से इन्द्रजीत और कुम्भकर्ण दो मुनि मोक्ष गए हैं यहां से पूजन कर के वडवानी वापिस आवे और वडवानी से अजन्द के स्टेशन पर आकर टिकट इन्दौर का लेवे किराया तीसरा दरजा ≡) डेडा ।) फासला १८ मील है ॥

नोट–एक बडी धर्मशाला १६ मन्दिरों के पास पहाड पर भी है अगर वहुत संग हो तो

वहां भी ठहर सकता है वहां ठहरने में यात्रा बड़े आराम से होती है, हम जब लाहौर से यात्रा करने गए तो पहाड़ पर १६ मन्दिरों के पास ही ठहिरे थे ॥ इन्द्रजीत और कुम्भकर्ण की प्रतिमाओंकी टाङ्गों के पत्थर विलकुलगिर पड़े हैं जिस से टांगें खण्डित होगई हैं। धन वान् जैनी यात्रियों को चाहिये कि बजाय भण्डार में देने के उन की मंरम्मत करावें। शोक की बात हैकि इतना रुपया भण्डार में चढ़ावे का चढ़ता है परन्तु मरम्मत कोई नहीं कराता पस भण्डार में जो रुपया जमा होता है वह किस कामके लिये है॥ इस विषय में हम उन जैनियों से सवाल करते हैं, कि जिनके पास भंडार का रुपया जमा है, उस रुपैये से तीर्थों की मरम्मत क्यों नहीं कराई जाती,

क्या जमा करके तीर्थों ने कोई लड़के लड़की का विवाह करना है, वा दुकान खोलनी है नहीं तो वह रुपया क्या किया जावेगा जो उस से मरम्मत नहीं कराई जाती ॥

— इन्दौर (Indore) —

यह वडा शहिरहै यहां महाराजा हुलकर का राज्य है धर्मशाला में ठहिरे इस नगर में ९वडे वडे जिनमन्दिर हैं एक चैत्यालय में तीन चौ-बीसी की७२प्रतिमा स्फटककी हैं यहांके मंदिरों के दर्शन करे और नगर की सैर करे ॥

बनेडा

यह एक जिनमन्दिर इन्दौर से १६ मील पर जंगल में है इस में बहुत बडा समूह प्रतिमा ओं का है इन्दोर से आने जाने की तेज गाडी भाडेके वनेरा कर के दर्शन कर के वापिस इ-

न्दौर आवे और इन्दौर से टिकट सनावद Sanawad का लेवे किराया तीसरा दरजा ।≈) ड्योडा ॥–) फासला ५२ मील है रेल ७॥। २०। वजे चलती है ॥

सिद्धवरकूट

सनावद में एक मन्दिर है यहां से सिद्ध वरकूट क्षेत्र ६ मील है खाने का सामान और पूजन की सामग्री यहां से तीन चार रोज का लेलेना चाहिये और गाडी यहां से भाडे कर के ओंकार ६ मील जाना चाहिये और इसी शहर में ठहरना चाहिये यहां से पूजन की सामग्री और वाराआने के पैसे वा धोती डुपट्टा लेकर चलना चाहिये ओंकार से थोडी दूर नर्मदा नदी है नाव में बैठ कर उतरते हैं यहां से आध

मील काबेरी नदी है उस को उतर कर स्नान करलेना चाहिये और सामग्री पूजनकी धोलेनी चाहिये और पंथागाव से जो सामनेहै एक आदमी साथ लेलेना चाहिये यहां से सिद्धवरकूट पाव मील है इस पर्वत से साढे तीन करोड़मुनि और दो चक्रवर्ती दस कामदेव मोक्ष गए है यहां पर एक मन्दिर और एक धर्मशाला है यहां ओंकार हिन्दुओं का बडा तीर्थ है इस मन्दिर में हिन्दुवों के एक ऋषि की नग्नमुद्रा जैन रूप में प्रतीमा है जो तासबी हिन्दुजैनियों को नग्न मुद्रा का इलजाम लगाकर अनेक झूठे तोहमत लगाते हैं इस से वह खुद ही झूठे होते हैं क्यों कि इस से साबित होता है कि पहले इन के यहां भी ऋषि लोग नग्नतप करा करते थे ओंकारके नीचे नर्मदा नदी में अथाह जल है जब

किसतियों में बैठ कर पार जाते हैं तो तमाशा देखने को जल में पैसे फैंकतेहैं जब हम लाहौर से दर्शनों को गए तब किश्ती पर पार जाते हुवे जल में पैसे फैंके सो पैसे के साथ साथ ही मलाहों के लड़के जल में बीस बीस हाथ नीचे चले जाते हैं और जाते जाते पैसेको पकड़ लाते हैं ओंकार से होकर सनावद आना चाहिये और सनावद से टिकट खांडवे (**Khandwa**) का लेवे किराया रेल तीसरा दरजा ।≈) फासला ३४ मील है रेल ॥–१२॥ बजे चलती है

खांडवा

यह शहर बहुत मशहूर है यहां के मन्दिरों के दर्शन कर के और शहर की सैर करके यहां से टिकट अकोले (**Akola**) का लेवे किराया

तीसरा दरजा १॥।) डोढा २॥-) फासलामील १६४ हैं रेल ३-४-१४॥ बजे चलती है ॥

नोट-जिस को अन्तरिक्ष पार्श्वनाथ कारंजयजी और भातकुली की यात्रा न करनी हो वह खांडवे से टिकट सीधा अमरावती का लेवे अमरावती से मुक्तागिरि की यात्रा को जावे फिर लौट कर अमरावतीहांसे रेलमेंसवार होवे

अकोला

इस शहर में ३ जिनमन्दिर और २० चैत्यालय हैं यहां के दर्शन कर गाडी भाडे कर के अकोला से १९ कोस अन्तरिक्ष पार्श्वनाथ के दर्शनों को जावे ॥

अन्तरिक्ष पार्श्वनाथ

यहां पर एक जिनमन्दिर श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकर का है इस में एक डेढ हाथ

ऊंची श्री पार्श्वनाथ स्वामी की प्रतिमा अधर विराजमान है यानि जमीन से एक अंगुल ऊंची आकाश में तिष्ठे है यहब डा भारीअतिशय क्षेत्र है बोल कबूल वाले अनेक यात्रिआवें हैं इस नगर में ५० चैत्यालय और हैं यहां के दर्शन कर के यहां से २० कोस कारंजयजी के दर्शन करने को जावे ॥

कारंजयजी

यहां पर ३०० चैत्यालय और ३ बहुत बडे जिनमन्दिरजी हैं यहां एक मन्दिरजी में २१ प्रतिमा चांदी की ४ स्वर्ण की १ हीरे १ मूंगेकी एक पन्नेकी ४ गरुडमणी की और धातुपाषाण की हजारों हैं यह सब चौथे काल की हैंइन के इलावे तीन सहस्त्र कूट चैत्यालय तीन हाथ

लंबे चौडे पांच हाथ उंचे सांचे में ढाल कर बनाए हुए हैं इन में एक हजार आठ मूर्तीसांचों मे साथ ही डाल कर बनाई हैं इन के दर्शन करकेयहांसे१७कोसभातकुलीकेदर्शनकोजावे ॥

भातकुली

यहां एक मन्दिरजीमें ऋषभदेव स्वामीकीचौथे कालकी प्रतिमा अतिशय संयुक्त है बोल कबूल वालों का परचा देती है दूर दूर के यात्री बोल कबूल चढान आवे हैं यहां के दर्शन करके ११ कोस एलचपुर जावे ॥

एलचपुर

इस नगर में छे बडे मन्दिर और कुछ चैत्यालय हैं एक मन्दिर में एक प्रतिमा मूंगे की हैं यह शहर मुक्तागिरि पहाड के नीचे है यहां

के दर्शन कर के मुक्तागिरि पहाड की धर्मशाला में जाकर ठहरे ॥

मुक्तागिरि

इस पर्वत पर २६ जिनमन्दिरहैं एक मन्दिर जमीन के नीचे भोंरे की तरह है उस में दो प्रतिमा खडे योग चार चार हाथ ऊंची अति मनोग्य चौथे काल की हैं इस पर्वत से साढ तीन कोटि मुनि मोक्ष को गए हैं यहां हमने सुना है कि कभी कभी कोई देव रात के समय पीसी हुई केसर की वर्षा करता है। और एक भील ने यह भी कहा था कि मुक्तागिरि से १० वारह कोस पहाड में हजारों प्रतिमा का समूह खण्डित है इस समय कोई जैनी भी वहां नहीं जाता संघ के न रहने

के कारण हम जा नहीं सके शीघ्र लाहौर को चले आए सो दरयाफत कर के यदि यह बात सच्च है तो संग को होसला कर के वहां भी जाना चाहिये शायद चौथे काल में लोग मुक्तागिरि की यात्रा को वहां ही जाते हों और वह भी सिद्ध क्षेत्र हो मुक्तागिरि से दर्शन करके ३० मील अमरावती (Amraoti) आना चाहिये रास्ते में परतवाडे की छावनी में भी दर्शन करे॥

अमरावती।

स्टेशन के पास धर्मशाला में ठहरे इस शहर में ५ मन्दिर और ४०० घर जैनियों के हैं एक मन्दिरमें नीचे भोंरे में बड़ी बड़ी प्रतीमा विराजमान हैं एक मन्दिर में १८ प्रतिमा स्फटककी १ मुंगेकी एक स्वर्णकी २ हीरेकी एक चांदीकी

और धातुपाषाणकी बहुतहैं यहांजरी केकिनारों के डुपटेबहुत बिकतेहैं यहां केदर्शनकरके अमरावती स्टेशन से टिकट नागपुर (Nagpur) का लेवेफासला ११४मील किराया रेल तीसरादरजा १≡) है रेल १-१०-२१। बजे चलती है ॥

नागपुर

इस शहिर में १४ जिनमन्दिर और पांचसो घर जैनियों के हे यह शहर देखने के लायक है पंचायती मन्दिर का धर्मशाला मे ठहिरे यहांके दर्शन कर के सेर कर क नागपुर से टिकट काम्पटी (Kamptee) का लेवे फासला मील ९ है किराया रेल ⁄)॥ है ॥

रामटेक

कम्पटी में एक मन्दिर है यहां के दर्शन कर के गाडी भाडे कर के काम्पटी से १५ मील

रामटेक की यात्रा को जावे यह अतिशयक्षेत्र है बारह मास बोल कबूल चढाने को यात्री आते हैं यहां आठ जिनमन्दिर हैं जिन में अनेक मनोग्य प्रतिमा बिराजमान हैं एक मन्दिर में तीन मुर्त्ति बहुत बडी शान्तिनाथ स्वामी की हैं उन में एक दश हाथ ऊंची है यहां के दर्शन करके काम्पटी वापिस आवे काम्पटीसे वापिस होने को टिकट मनमार (munmar) स्टेशन का लेवे फासला ३६७ मील है किराया रेल तासरा दरजा ३॥।॥) डोढा ५॥।) है रेल ३-१२।-१५॥ बजे चलती है ॥

मांगीतुङ्गी

मनमार स्टेशन से मांगीतुङ्गी २४ कोस है सो यहां से गाडी भाडे कर के मांगीतुङ्गी को

जाव रास्ता पहाडी है झाडी जंगल रास्ते में जियादा हैं मांगीतुङ्गी पर्वत के ऊपर दो मन्दिर हैं एक चन्द्रप्रभु स्वामी का दूसरा पार्श्वनाथ स्वामी का इन के आगे जल के कुण्ड भरे हैं ये मन्दिरजी पहाड खोदकर बनाये हैं और प्रतिमा भी पहाड में उकेरी हैं इस पहाड के नीचे एक मन्दिर जी सुधबुध का है सुधबुध नामी एक राजा हुवा है उस ने यह मन्दिर बनवाया है सो यह मन्दिर भी चुनाई का नहीं है पहाड खोदकर बनाया है और मूर्ति पहाड में उकरी हैं पर्वत नीचे से एक है ऊपर दो चोटी हैं इस वजेह से बड़ा शोभायमान दिखाई देता है और दो मन्दिर जी पर्वत से और नीचे हैं इन में भी प्रतिमा बहुतमनोग्य हैं और यहां पर तीन धर्मशाला हैं इन में हजारों यात्री ठहर सकते

है इस पर्वतकी तीन परिक्रमा है और बीच की परिक्रमा में एक गुफा है इस पर्वत की चढाई बहुत विकट है पौडी टूटसी गई है किसी जैनी को पौडी ठीक करा देनी चाहियेजबहमलाहार सेमांगीतुङ्गी गए तो सुना था कि एकपुजभंडार का बीसहजारका धन और एक किसी की स्त्री लेकर भाग गया भंडार मे चन्दा इन का यह नतीजाहै किपोडी आदि मार्ग को भी ठीक नहीं कराते इस पर्वतसे रामचन्द्र हनुमान सुग्रीव गवय गवाख्य नील महानील आदि निन्नानवें करोड मुनि मोक्ष गए है सो यह महा अतिशय वान् क्षत्र है यहां से यात्रा कर के मनमार के स्टेशन पर वापिस आना चाहिये और मनमार से टिकट नासिक **Nasik** का लेवे फासला मील ४६ है किराया रेलतीसरादरजा।≈)डोढा

॥≋) है रेल ॥-२॥-१०-१३॥-बजेचलती है

नासिक और गोदावरी

नासिक स्टेशन पर सवारी बहुत मिलती है यहां से शहर पांच मील है यहां एक मन्दिर दिगम्बर आम्नायका है यहां पञ्चवटी में धर्मशाला में ठहरे यह शहर गंगाके किनारे पर है यह हिंदुवों का बडा तीर्थ है इस गंगाका नाम गोदावरी हे यहां हजारों कोस से हिंदु स्नान करने को आते हैं नासिक से गाडीभाडे करके गजपन्थजी की यात्रा को जावे॥

गजपंथजी

नासिक से ४ मील सिरोहीग्राम है यहां पर एक मन्दिर और एक धर्मशाला है इसी जगह यात्री को ठहरना चाहिये यहां से स्नान करके पूजन की सामग्री धोके लेकर चले,यहां से श्री

गजपन्थ का पर्वत एक मील है और चढ़ाई पर्वतकी १ कोस की है पैडियां बनी हुई हैं इस पर्वत के ऊपर से सात बलभद्र यादवनरेन्द्र आदि आठ करोड मुनि मोक्ष को गए हैं इस पर्वत पर दो मन्दिरजी पहाड खोद कर बनाये गये हैं और प्रतिमा भी उसी में उकेरी हैं पहाड के ऊपर मन्दिरों के पास जल का कुंड है यहां से दर्शन कर के नासिक के स्टेशन पर आवे और टिकट पूना (Poona) का लेवे किराया रेल तीसरा दरजा १॥) डोढा २॥=) फासला मील१६८ है रल २॥-११॥-१५॥ बजेचलती है

पूना

यहां पर दो मन्दिर जी दिगम्बर आम्नाये के हैं और रेल के पास धर्मशाला है उसमें ठहरे और अगर जियादा आदमी होवें तो येतालपेंठ

बाजार में ठहरें जो के दो मील है यहां पर श्वेताम्बरियोंका पंचायती बडा मन्दिर है और इसी के पास दिगम्बरी बडा मन्दिर है और दूसरा मन्दिर मीठगंजमें है इन के सिवाय एक मन्दिर और पांच चैत्यालय हैं यहां पर चित्र-कारीका बडा करखाना हैयहां से टिकट बारसी (Barsi) का लेवे किराया रेल तीसरा दरजा १≡) डोढा १॥|–) फासला मील ११५ है रेल २।–७॥–१७। बजे चलती है ॥

कुन्थुगिरि

पूना से रवाना होकर बारसी के स्टेशन पर उतरे यहां पर एक मन्दिर है यहां से गाडी किराया कर के कुन्थुगिरि जावे यहां से कुन्थु-गिरि २५ मील है पूजन की सामग्री और खाने

का सामान यहां से लेजावे रास्ता कच्चीसडक का है जोजो गांव रास्ते में आते हैं सबमें चैत्यालय हैं श्री कुन्थुगिरि पर्वत से श्री देशभूषण कुलभूषण दो मुनि मोक्ष गए हैं इस पर्वत के ऊपर छे मन्दिर शिखरबन्द दिगम्बर आम्नायके हैं और नीचे एक छोटा मन्दिर है इन मन्दिरों में मूर्तीयां बहुत हैं प्राचीन और महा मनोग्य हैं यहां से यात्रा कर के बारसी के स्टेशन पर आकर टिकट शोलापुर (Sholapore) का लेवे फासला मील ४९ है किराया रेल तीसरा दरजा ॥) डोडा दरजा ॥≈) है रेल ।–६। –१२–बजे चलती है ॥

नोट–यदि जैनबद्री मूडबद्री देश की यात्रा नहींकरनी होवे तो बारसी से वापिस लौटने को टिकट बम्बई का लेवे ।

शोलापुर में चैत्यालय व मन्दिर १३ हैं इन मन्दिरों में बडी बडी मनोग्य प्रतिमा हैं इन के दर्शन कर के सेठ हीराचन्द नेमी चंद की कोठी से जैनबद्री मूडबद्री का सारा हाल दरयाफत कर लेवे जोजो चीज जरूरत हो यहां से लेवे शोलापुर से टिकट आरसीकेरी (Arsikere) का लेवे फासला मील ४०७ है किरावा रेल तीसरा दरजा ४।)॥ रेल २।-८-१५। बजे चलती है हाटगी गाडाग और हुवली पर रेल बदलती है॥

जैनबद्री

आरसीकेरी से दो दिन खाने का सामान और एक नौकर जो उस देश और हमारी दोनों

बोली जानता हो साथ लेकर गाडी भाडे कर के जो जो ग्राम रास्ते में आवें उन में दर्शन करता हुवा आरसीकेरी से ३० मील जैनवद्री जावे उस देश में जैनवद्री को श्रावण विगलोर कहते हैं जैनवद्री नगर के पास एक पर्वत के ऊपर श्री गोमठस्वामीकी मूर्ति २६ गज ऊंची चौथे काल की अतिशय संयुक्त खडे आसन तिष्ठे हे इस का रक्षक कोई देव है इस प्रतिमा का न तो साया पडता है न कोई गरदा वगैरा लगता है न पक्षि आदि इस के ऊपर बैठ सकते हैं जिस पर्वत में यह प्रतिमा जी तिष्ठे है इसी पर्वत पर ६ मन्दिर जी और हैं इस पर्वत के सामने एक पर्वत और हैउस पर १६ मन्दिर हैं और पास ही ७ मन्दिर जैनवद्री नगर में हैं और ३ मन्दिर नगर के पास एक तालाव पर हैं

इन सब मन्दिरो में बहुत बडी बडी अवगाहना की चौथे काल की चौबीसीसंयुक्त अनेक प्रतिमा हैं मन्दिरों के आगे ऊंचे ऊंचे मानसथंभ बने हुए हैं इस जैनवद्री नगर में अनेक जिनशास्त्र ताड पत्रों पर करनाटक की भाषा में लिखे हुए हैं सिद्धांतशास्त्र इस जैनवद्री नगर में ही हैं जो प्रति दिन पढे जाते हैं उस देश के निवासी कहते हैं कि पहले यह गोमठस्वामीकी प्रतीमा प्रत्यक्ष नहीं थी केवल २२५ वर्ष हुए हैं कि राजा को स्वप्न होकर प्रगट हुई है यहां के दर्शन करके मूडवद्रीको जाना चाहिये मूड वद्र यहां से गाडी के मार्ग आठ दिन का रास्ता है रास्ते में दो दो चार चार कोस पर अनेक ग्राम आते हैं जिन में कई कई जिनमन्दिर हैं बडी बडी जिनप्रतिमाओं के समूह हैं सो मार्ग के

मन्दिरोमेंदर्शन करतेहुए मूडवद्री जाना चाहिये

कानरग्राम

यह ग्राम जैनवद्री और मूडवद्री के मार्ग में मूडवद्री से १२ कोस उरे है इस ग्राम में भी श्री गोमठ स्वामी की एक मूर्ति १३ गज ऊंची अतिशय संयुक्त एक पहाड के ऊपर उद्यान में तिष्ठे है और ८ मन्दिरजी मानस्तम्भ संयुक्त हैं इन मन्दिरों में अनेक जिनबिम्ब चौवीसी संयुक्त महा मनोग्य बडी बडी अवगाहना के तिष्ठे हे जिन के दर्शन से बडा ही आनन्द प्राप्त होता है यहां के दर्शन कर के यहां से १२ कोस मूढवद्री जावे ॥

मूडवद्री

इस नगर में १८ जिनमन्दिर हैं इन में एक

मन्दिर जी सात करोड रुपये की लागत का है इस मन्दिर जी में दो हजारसे जियादा धातुपाषाण के प्रतिविम्ब बडी बडी अवगाहना के महा मनोग्य अतिशय संयुक्त विराजमान हैं इस मन्दिर जी के तीन कोट हैं और यह तीन मंजिल ऊंचा है और इस में २२ खण अन्दर जाकर दर्शन होते हैं तीनों मञ्जिल में प्रतिविम्ब ही प्रतिविम्ब विराजमान हैं इस मन्दिर जी में एक प्रतिविम्ब श्री चन्द्रप्रभ स्वामी का पांच हाथ ऊंचा खडेयोग स्वर्ण का है और एक सहस्त्रकूट चैत्यालय तीन फुट चौडा तीन फुट लंबा ८ फुट ऊंचा दसमन स्वर्णका ढला हुआ है जिस में एक हजार आठ मूर्ति साथ ही ढली हुई हैं और इस मन्दिर जी में ५०० प्रतिविम्बस्फटकके हैं दूसरेमन्दिरजीमेंभीधातुपा

षाणकीचौबीसीसंयुक्तअनेकप्रतिमा विराजमान हैंजिनमेंएकप्रतिमा श्रीपार्श्वनाथस्वामीकी सात हाथऊंचीहैओएकचैत्यालयश्रीनन्दिश्वर द्वीपका धातुमई पहले मन्दिर वाले के बराबर है इन मंदिरोमें हीरा पन्ना नीलम पुषराज गोमेदकमुगा मोती गरुडमणि आदिक रत्नों की २४ प्रतिमाहें और ताड पत्रों पर लिखे हुए श्री जयधवल महा धवल विजयधवल यह महा सिद्धांत शास्त्र जी हैं इन शास्त्रों और प्रतिमाओं के दर्शन बडी मुशकीलसे होते हैं इन मन्दिरों के मुंतजिम तीन श्रावक रहते हैं अलग अलग तालों की एक एक ताली तीनों के पास रहती है जब किसी को दर्शन करवाने होवेंतो तीनों इकट्ठे होकर अपना अपना ताला खोल कर दर्शन करवाते हैं सो परदेशी यात्रि को उस की

बहुत परीक्षा कर के उस को दर्शन करवाते हैं बाकी १६ जिनमन्दिरों में भी हजारों प्रतिबिंब बडी बडी अवगाहना के विराजमान हैं मंदिरों में वाजेबाजे हैं त्रिकाल पूजन होय है चौथे काल कैसा समय बरत रहाहै दर्शकोंका वहांसे आने को चित्त नहीं करे हैइनमन्दिरोंके दर्शनकर के मूडवद्री से ९ कोस कारकूल नगर जावे ॥

कारकूल

इस नगर में पर्वत के ऊपर एक प्रतिबिम्ब श्री गोमठ स्वामी का १६ गज ऊंचा महा मनोग्य अतिशय संयुक्त विराजमान है और जिस पर्वत पर यह प्रतिमा विराजमान है इस के सामने दूसरे पर्वत पर एक मन्दिर जी तीन तीन प्रतिमा श्यामवर्ण खडे योग चारों तरफ

विराजमान हैं और पर्वत के नीचे एक तालाव है इस तालाव पर भी एक मन्दिर महा खूब सूरत है और १२ मन्दिर नगर में है सो यह बहुत लागत के हैं यहां के दर्शन करके यहां से वापिस आवे॥

वापिस आने का मार्ग

१ एक रास्ता तो यह है कि कारकूलसे मूडवद्री आवे मूडवद्री से जैनवद्री आवे जैनवद्री से ३० मील आरसीकेरी के स्टेशनसे टिकट बंबई का लेवे कल्याण जंगशन से बम्बई स्टेशन ३४ मील है अगर प्लेग वगैरा के डर से बम्बई न जाना होवे तो कल्याण से सीधा वडोदे कोचला आवे यानि आरसीकेरी से टिकट वडोदे कालेवे

२ दूसरा रास्ता यह है कि कारकूल से ९ कोस मूडवद्री आवे मूडवद्री से २२ मील वग-

लूरबन्दर पर अग्नबोटमें सवारहोकर बम्बईजावे यह रास्ता सबसे नजदीक और कमखरचका है

३ यदि और भी दर्शन उस देश में करने होवें तो कारकूल से २५ कोस वारगनगर है वहां दर्शनों को जावे कारकूल से चार कोस मदरापटन ग्राम है इसमें एक मन्दिरमें प्राचीन प्रतिमाओं का बहुत बडा समूह है आगे मार्ग के ग्रामों में दर्शन करता हुवा वारंग नगर जावे वहां एक कोस तक अथाह जल के वीच में एक मन्दिर जी है किस्ती परजाते हैं इस मन्दिरजी में महामनोग्य चौथेकाल की प्रतिमाओंका बडा समूहहै इसके दर्शनकरे औरभी उस देशमें अनेक मनोग्य स्थान दर्शन करनेके लायक हैं सो जो आसानी से होसके वहांके भाइयोंसेदरयाफत करके दर्शन करके वापिस कारकूल आवे।

यदि इन की या इन में से किसी स्थानक की सैर करनी होवे तो बंगलूर से अगनबोट में सवार होकर रामेश्वर जावे वहां से अगनबोट में लंका जावे यहां से अगनबोट में मदरास जावे यह सब स्थानक समुद्र के मार्ग नजदीक ही हैं मैसूर और मदरासकी सैर रेलद्वारा भी हो सकती है आरसीकेरी से रेल द्वारा २१४ मील मैसूरहै मैसूरसे ३१३ मीलमदरासहै मदरासमे सीधेरास्तेबंगलोरहोकर ३२५मीलआरसीकेरीहै मैसूरयामदरासया बंगलोरसे रेलमें जाकरथोडी दूरही अगनबोटमें सेतुबन्दरामेश्वर रह जाता है लंकाभीयहांसे अग्नबोटमेंतीसरेदिनजापहुंचतेहैं

बम्बई शहर (Bombay)

स्टेशन से एकमील भूलेश्वर है यह जगह

शहर के बीच में है और ठहरने को आराम की जगह है यहां से दिगम्बरी मन्दिर भी नजदीक है और एक चैत्यालय है शहर बहुत बडा है इसमें श्वेताम्बरी मन्दिर अजायबघर टौनहाल किले की इमारतां समुद्र और जहाजों की सैर देखने लायक हैं यहां सब किस्म का सामान सौदागरी,कपडा, मनयारी,करयाना,कसेरट का मिलसकता है बडा दिसावर है यहां से टिकट सूरतका लेवे किराया रेल तीसरा दरजा २≡) डोडा ३॥≈) फासला मील १६७ है रेल ७॥-१४॥-२१॥-२२ बजे चलती है ॥

सूरत (Surat)

यह शहर बहुत बड़ा है देखने के लायक है यहांकी स्त्रियें देवांगना समान रूपवती मशहूर हैं इस नगर में ६ जिनमन्दिरहैं इनके दर्शनकर

यहांसे टिकट बडोदेका लेवे किराया रेल तीसरा दरजा १-) डोडा १।)फासला मील ८० है रेल ४॥-८-१६-बजे चलती है ॥

बडोदा (Baroda)

बडोदे में रेल के पास २ बडी धर्मशाला हैं उन में ठहरे यहां से दो मील नवीपोल में पानी दरवाजे के पास दिगम्बरी मन्दिरहै और दूसरे मन्दिर वाडीवाजार में हें यह महाराजा बडोदे की राजधानी है राज का महल और सोने चांदी की तोपें गेंडे वगैरा जानवर देखने लायक हैं यहां से सवारी किराये कर के छै रोज का खाने का सामान और पूजन की सामग्री साथ लेकर यहां स पावागिरि की यात्रा को जावे पावागिरि बडोदे से ३० मील है ॥



पावागिरि

यहां पर एक मन्दिर दिगम्बरी आम्नायका है और एक धर्मशाला है इस में ठहरे वहां से स्नान कर पूजन की सामग्री ले यहां से छह मील पावागिरि पर्वत पर जावे यहां से श्री रामचन्द्र जी केदो पुत्र लव अंकुश और लाड देशकाराजा पांच करोड मुनि मोक्ष गये हैं इस पर्वत के ऊपर एक मन्दिर श्री पार्श्वनाथ स्वामीकाहै मन्दिरजी के पास देवी का मन्दिर है जिस की पौडीयों की दीवार में जिनप्रतिमा इंटो की जगह चिन रखी हैं जैनियों को महा-राज बडोदे को अरजी देकर यह अविनय हटानी चाहिये यहांके दर्शन करके बडोदे के स्टेशनपर वापिस आकर टिकट अहमदाबाद का लेवे

किराया तीसरा दरजा ॥) डोढा १) फासला मील ६२ है रेल ४॥-७-१२।-१९॥बजेचलती है

अहमदाबाद (Ahmedabad)

यह शहर बहुत वडा है दिगम्बर आम्नाय के ३ मन्दिर और २ चैत्यालय हैं इन के दर्शन करे स्टेशनके पास धर्मशाला में ठहरे शहर की सैरकर यहांसे टिकट सोनगढ (Songad) का लेवे किराया तीसरादरज १॥=)फासला मील १६६ है रेल ९॥-१६।-बजे चलती है ॥

शत्रुञ्जय जी

सोनगढ के स्टेशन पर घोडे गाडी और बैल गाडी बहुत मिलती हैं यहां से सोनगढ १ मील और पालीताना १५ मील है घोडागाडी का ३ घण्टे का रास्ता पालीताना तक है शहर से उरे

नदीके किनारे दिगंबरी बडी धर्मशाला है इसमें
ठहरे यहांपर एक मंदिर दिगम्बर आम्नायका
है यहां से स्नान कर के चले और सा-
मग्री पर्वत पर जाकर धोलेवे पर्वत पर एक
मन्दिर दिगम्बर आम्नायका है और तीन
हजार श्वेताम्बरी आम्नायके हैं और दिगंबरी
मन्दिर में शान्तिनाथ भगवान्की प्रतिमा महा
मनोग्य और अतिशयवान् है पालीताना से
श्री शत्रुंजय पर्वत दो मील के करीब है और
चढाई पर्वत की चार मील की है इस पर्वत से
युधिष्ठिर भीम अर्जुन और आठ करोड मुनि
मोक्ष गये हैं यहां दर्शन कर के पालीताना
आकर सोनगढ आना चाहिये और टिकट भाव
नगर का लेना चाहिये किराया रेल ।) है और
फासला२०मीलहैरेल७-९॥-१८॥-बजे चली है

भाव नगर। Bhav Nagar

भावनगर में घोगादरवाजे के पास एक मन्दिर दिगम्बर आम्नायका है यहां पर चार पांच आदमियों के ठहरनेकी जगह है और इसी के पास श्वेताम्बरी धर्मशाला है यह शहर समुद्र के किनारे पर है यहां पर म० पी० रामजी कम्पनी के यहां श्री गिरनार वा शत्रुंजय पर्वत की फोटो की तसवीर मिलती है यहांसे जूनागढ का टिकट लेवे किराया रेल भावनगर से जूना गढ तक १॥।-)॥ है और फासला १२० मील है रेल ८॥।-१७॥-२१ बजे चलती है ॥

जूनागढ (Junagad)

यहशहर रेलसे एकमील है स्टेशनपर सवारी बहुत मीलती है शहर में दिगम्बरी मन्दिर के पास धर्मशालामें ठहरे यहांपर नवाव साहिब

का राज्य है नवाब का मकान गेंडे बाग में शेर आदमी के कद समान बन्दर पिछले नवाबों के मकबरे पुराणे किले के अन्दर वह बावली जो नेमिनाथ स्वामीके बरातियों को जल पिलाने के वास्ते खोदी गई थी देखने केलायक हैं मन्दिर के दर्शन और शहरकी सैर कर के जूनागढ से ४ मील पहाड के नीचे एक धर्मशाला है उस में जाकर ठहरे खाने का सामान वा पूजन की सामग्री जूनागढ से साथ लेजावे क्योंकि तलहटी में कोई चीज भी नहीं मिलती ॥

गिरनारजी

श्री गिरनार पहाड़ की तली में दो मन्दिर दिगम्बर आम्नायके और एक बडी धर्मशाला है इस में ठहरे धर्मशाला के पास गिरनार

पर्वतपरचढनेके लियेएकबडा फाटकलगा है और इसीफाटकसेपक्कीपेडयां शुरूहोजाती हैं यात्रीको पांचबजेतक स्नानकर के त्यार होजाना चाहिये औरसामग्री अपने साथ लेजानाचाहियेपर्वतपर चढने के लियेफाटककादरवाजापांचबजेखुलता है और इस फाटक पर एक मुन्शी रहता है यह यात्रियोंसे फी यात्रीएक आना लेकर पासदेता है यहां पर नवाब साहिब जूनागढ ने यात्रीयों पर महसूल लगा रखा है यात्रीको पहिले रोज पास लेलेना चाहिये क्योंकि पर्वत पर चढते वखत फाटक परपास देखा जाता है और बगैर पास पहाड पर नहीं चढने देते जितनी बन्दना करने का इरादा होवे उस वखत तक वह पास अपने पास रखना चाहिये और यात्री को पांच बजे पर्वत पर चढाई शुरू कर देनी चाहिये

तलहटी से चलकर पहाड पर दो मील चढने के वाद एक फाटक आता है और यहां बहुत से मकान और २२ मन्दिर श्वेताम्वरी बने हुए हैं यह मुकाम सोरठ के महल के नाम से मशहूर है यहां पर ही पुजारी व माली आदि रहते हैं यहां से थोडी दूर चल कर दो मन्दिर दिगम्वर आम्नायके आते हैं यात्रियों को इसी जगह सामग्री धोकर पूजन करना चाहिये सामग्री धोने के लिये जल वा वरतन यहां सव मिल जाता है और मन्दिर के पास ही राजुल जी की गुफा है इस में राजुल जी ने तपस्या करी है और यहां इसी में राजुल जी की मूर्ती है वडा आनन्द होता है यहां से डेड मील चढ कर ज्ञान कल्याणक की चौथी टोक पर पहुंचते हैं यहां पर श्री नेमिनाथ भगवान् को केवल-

ज्ञान हुवा है रास्ते में अम्बिका देवी का मन्दिर आता है यहां से चलकर के निर्वाण कल्याणक के पांचवे टोंक पर पहुंचते हैं यहां से श्री नेमिनाथ स्वामी मोक्ष गये हैं यह मुकाम चौथी टोंक से डेढ मील है और टोंक पर जाने में जियादा उतराई चढाई पडती है पर्वत ऊंचा और सिधा खडा मालूम होता है यात्रीको घबराना नहीं चाहिये क्योंके ऊपर तक पैडयां बन गई हैं रास्ता बहुत सुगम हो गया है दर्शन कर बडा हर्ष प्राप्त होता है इस पर्वत से श्री नेमिनाथ स्वामी प्रद्युम्नकुमार शंभुकुमार अनिरूधकुमार आदि बहत्तर करोड सातसौ सात मुनि मोक्ष गये हैं यहां दर्शनकर के तपकल्याणक के टोंक पर जाते हैं मोक्ष स्थानसे तप स्थान ४ मील है रास्ते मेंगउमुखी वा साधु का

मन्दिर आता है तप कल्याणक सहस्त्रवन के जंगल में है यहां इस बन में से बहुत उमदा सुगन्ध आवे है यहां से दर्शन कर के दूसरेरस्ते ४ मील धर्मशाला को वापिस आते हैं यात्रा को आनेजाने में ७ घण्टे लगते हैं पैडयां बन जाने से रास्ता बहुत उमदा और सुगम हो गया है पर्वत पर जाने के लिये डो-लि और मजदूर लडकों को लेजाने के वास्ते मिलते हैं किराया यह है सोरठ के महल तक ३।) केवल ज्ञानके टोंकतक ३।।।) मोक्षकल्याण तक ४।।) सहस्त्रवन तक ३।।।) और मजदूर ।।) से १) तक यहां से दर्शन कर के जूनागढ के स्टेशन पर वापिस आकर यहां से टिकट मह-साना (Mehsana)के स्टेशन का लेवे रास्ते में गाडी बदलती है किराया रेल महसानातक

३।≡) है और फासला २५१ मील है और मह-
साना से टिकटखरालू (Kheralu) का लेना चाहिये
किराया रेल खरालू तक ।) फासला २१ मील
है जूनागढ से रेल १० बजे चलती है ॥

नोट—जब हम लाहौर से गिरनारजी के दर्श
नों को गए तो मालूम किया कि पिछले जमाने
में मोक्षकल्याणक के दर्शनों को दूसरी चोटीपर
जाया करते थे जहां रास्ता खण्डित होजाने से
इस समम कोई जैनी भी नहीं जातासो यात्रियों
को बूढ़े भीलों से पता लगाय कर उस पर चढ
ना तो नहीं चाहिये क्योंकि रास्ता विकट है
प्राणों का खतरा है परन्तु दूर से उस को सीस
निवाय नमस्कार जरूर करना चाहिये ॥

सोमनाथ का मन्दिर (Somnath Patan)

यह दुनियां भर में हिंदुवों का बडा तीर्थ

था यहां इतने हिंदु तीर्थ करने जाते थेकिकेवल तीन सौ मनुष्य उन यात्रियों का सिर मूण्डते रहते थे ग्रहण के दिनों में तो यहां वीस लाख हिंदु इकट्ठा हो जाताथा यह मन्दिर ५६ सतूनों पर था तमाम सतून व दिवारां -जवाहिरात से जडी हुई थीं सो महमूद ने सन् १०२६ ईसवी में इस पर हमला किया और जो दरवाजे के सामने पांचगज ऊंचा हिंदुवोंका ठाकुर था उस को तोडा उस में से इतनी जवाहिरात निकली जो अरवों रुपयों की थी महमूद ऊंटों पर लादकर लेगयाथा सो जिसको इसमंदिरजी की सैर करनी हो जूनागढ से वैरावलVeraval का टिकट लेवे वैरावल जूनागढसे ५१ मीलहै किरायारेल ॥≈)है सोमनाथकामंदिर वैरावल के पास है हैरावल समुद्र के किनारे पर है

इस की सैर कर के जूनागढ वापिस आकर टिकट महसाने का लेवे ॥

द्वारिका (Dwarka or Jigat)

जिस को द्वारका जाना हो वेरावल जोसोमनाथ के मंदिर के पास है यहां से अगनबोट में जावे एक दिन का रास्ता है चाहे जूनागढ़ से महसाने को जाते हुए बीच में जूनागढ़ से १६ मील पर जटलसर स्टेशन आता है जटलसरसे द्वारका को रेल जाती है सो जटलसर से ७८ मील पुरवंदर का टिकट लेवे किराया रेल १=) है पार बन्दर से जरासा दूर द्वारिका है दो घण्टे मे अगनबोट में जा पहुंचते है फिर द्वार का से पोर बन्दर आकर टिकट जटलसर का लेवे जटलसर से टिकट महसाने का लेवे महसाने से टिकट खरालू का लेवे ॥

तारंगाजी

खरालू के स्टेशन पर सवारी के लिये बैलगाडी बहुत मिलती हैं फासला खरालू से तारंगाजीतक आठ कोस है रास्ते में चार कोस पर एक पुलिस की चौंकी आती है वहां से यात्रियों की हिफाजत के लिये गाडी के साथ धर्मशाला तक एक सिपाही जाता है उसको ।)॥। आने देने होते हैं यह गाडी पहुंचाकर चला आता है रास्ता जंगल का है धर्मशाला पहाड़ के नीचे है और इसी जगह १ दिगम्बरी मन्दिर है और तीन टोंक हैं उन का दर्शन किया जाता है और धर्मशाला से पर्वत पर यात्रियों के साथ एक आदमी जाता है उस को दो आने दिये जाते हैं यह आदमी यात्रीयों क

दर्शन करा के वापिस धर्मशालामें लाताहै इस पर्वत से वरदत्त वरांग सागर आदि साडे तीन करोडमुनि मोक्ष गये हैं पर्वतकेऊपरएकमन्दिर है वापसी में गार्डी के साथ फिर सिपाही आता है और ।)॥ दिये जाते हैं यहां से लोट कर खरालू के स्टेशन पर आकर टिकट महसानी का लेवे और महसाना से टिकट आबूरोड का लेवे किराया रेल तीसरा दरजा ॥) फासला ७२ मील है रेल २।-१२॥-१९॥-वजेचलती है

आबूपहाड Abu Road

रेल के पास एक कसवा सराडी है बाजार में रेल से थोडी दूर एक धर्मशाला है और इस धर्मशाला के दरवाजे के ऊपर एक श्वेताम्बरी मन्दिर है इस में दो प्रतिमाजी दिगम्बरी आ-

म्नायकी हैं यात्रीयों को इसी धर्मशालामें ठहरना चाहिये रेल पर सिवाय मजदूर के और सवारी नहीं मिलती है यहां से आबूपहाड १७ मील है सवारी के लिये रिकशा यानी हाथगाडी वा बैल गाडी वा घोडा मिलता है किराया यह है रिकशा ६) बैलगाडी ५) और घोडा १।) २) ४) रुपैये हैं और यात्रीको १॥–) राजासिरोही का टैकश फी यात्री देना होता है आबूपहाड पर देलवाडा में दिगम्बरी वा श्वेताम्बरी मन्दिर के पास धर्मशाला है उस में यात्रियों को ठहरना चाहिये यह जगह पहाड के दरमियानमेंहै यहां दो दिगम्बरी मन्दिर और श्वेताम्बरी चार मन्दिर हैं इनमें से एक मन्दिर के दरवाजे के ऊपर दिगम्बरी व श्वेताम्बरी प्रतिमा शामिल हैं और दिगम्बरपांचप्रतिमा न्यारी विराजमान

हैं यहां श्वेताम्बरी मन्दिर सुफेद पत्थर के बने हैं इन में से एक बहुत उमदा बना है जिस का हाल देखने से मालूम होसकता है और कर्नेल टाड साहिब इस की बावत यहलिखते हैंकीयह मन्दिर हिंदुस्तान में सब से उमदा बना हैऔर ऋषभदेव के नाम से मशहूर है इस के बनाने में अठारा करोड रुपैया खर्च हुया है और ५६ लाख पहाड पर जमीन बरा बर कर ने में खरच हुआ है। और यह मन्दिर चौदह वर्ष में बन कर त्यार हुवा है यह मन्दिर एक जैनी बानलशाह अहनीलवारा पटना निवासी ने राजा सिरोही से जमीन मोल लेकर बनाया है और उस जमीन पर जितनी जमीन ली गई थी बरावर रुपैया विछा कर उसकी की मत दी गई है, मन्दिर के दरवाजे पर बोनल-

शाह की तसबीर बनी है और इन में से दूसरा मन्दिर नेमिनाथ के नाम से मशहूर है वकाया दो मन्दिर छोटे हैं इस पहाड पर हजारों बंगले अंगरेजोंके हैं यहांकीआबहवाबहुतअछी है यहां से रवानाहोकरआबूरोड स्टेशन पर आवे और जोधपुर मेडता बीकानेर साम्भर की सैर करने को आबूरोड से टिकट मारवाडजंकशन का लेवे किराया रेल तीसरादरजा १-) फासला मील ९७ है अगर जोधपुर वगैरा की सैर नहीं करनी होतो सीधा आबू से अजमेर का लेवे॥

मारवाड जंकशन Marwar Junction

यह स्टेशन आबूरोड और अजमेर के बीच में है यहां से जोधपुर बीकानेर को दूसरी रेल जाती है जो सांभर होकर अजमेर और जयपुर के बीच में जो फुलेरा स्टेशन है उस में जामिल

ती है केवल ४) रुपये रेल का किराया खर्चने सेइन सब शहरों की सैर हो सकती है मारवाड जंकशन से जोधपुर स्टेशन ६४ मील है किराया रेल तीसरा दरजा ॥≈)॥ है ॥

जोधपुर (Jodhpore)

यह बड़ा शहर है यहां पर महाराजा जोधपुर के महिल अद्भुत देखने के लायक हैं जोधपुर से टिकट मेडता का लेवे फासला मील ६४ है किराया रेल तीसरा दरजा ॥≈)॥ है ॥

मेडता (Merta)

यह जैमल का वसाया हुआ बडा नगर है यहां से टिकट बीकानेर की लेवे फासला मील १०३ है किराया रेल तीसरादरजा १–)। है ॥

बीकानेर (Bickaneer)

यह राजपूतों का पुराना शहर है देखने के लायकहै यहां के मारवाडी बडे धनवान् हैं यहां

की स्त्रियों का पहिरावा देखने लायक है यहां सावन की तीज को स्त्रियों के झूलने का बडा मेला होता है यहां से मेडते वापिस आवे और मेडते से टिकट सांभर का लेवे फासला मील ८८ है किराया रेल तीसरा दरजा ॥।≈)। है

सांभर (Sambhar)

यहां सांभर नमक की खान देखने लायकहै यहां से रेल में या यक्के में चार मील फुलेरा स्टेशन पर जावे ॥

फुलेरा (Phulera)

अगर अजमेर चित्तौड उदयपुर कांसैर और केसरियानाथ की यात्रा करनीहोवे तो फुलेरे से टिकट अजमेरका लेवे किराया रेल तीसरा दरजा ॥) फासला मील ४९है औरअगर उधर जाना मन्जूर नहीं है तोटिकट जयपुर कालेवे

अजमेर (Ajmer)

अजमेर में स्टेशन के पास सराय में ठहरे इस शहर में १० मन्दिर जी हैं इन के दर्शन करे सेठ मूलचन्द वाला शहर का मन्दिर ऐसा खूबसूरत बना है कि स्वर्ग लोक ही रचरखा है इस शहर से ४ मील पुष्कर जी हिंदुवों का तीर्थ है देखने लायक है ख्वाजाखिदर का मकबरा अजमेर में देखने लायक है इस में वह नकारों की जोडी रखी है जो चित्तौड का नाश कर जैमलफते की अकबर लाया था ढाई दिन का झूपडा भी देखने लायक है किसी जैनी महासेठ ने यह जिनमन्दिर बडा कीमती अपनी ढाईदिन की कमाईमें बनाया था खस्ता हाल पडा है यह सबचीजें देखने लायक हैं यहां से टिकट चित्तौडगढ़ का लेवे किराया रेल

तीसरा दरजा १≶) फासला मील ११६ है ॥

चित्तौड (Chitorgarh)

चित्तौड में बडा किलाहै नीचे चित्तौडी वसे है चित्तौडी में से राज के करम चारी से किले के देखने का पास लेकर किला देखे अंदर जैमल फतेकी कचहडी का मकान राणियों का नौमहला सूर्यकुंड तालाव कालीदेवी का मंदिर गउमुखी से जलझरता,एक तालाव के बीच में पद्मनी का मंदिर राजा भूरे वादल रत्नसेन के मकान देखने के लायक हैं, जव हम लाहौरसे गए तो किले में कई जगह जिन प्रतिमाओं के फूटेहुएचिन्ह देखे थे सोकिले की सैर करकेचित्तौडिमें मंदिरों के दर्शनकर यहां से टिकट उदयपुर का लेवे किराया रेल तीसरा दरजा ॥≶)है फासला मील ६२ है ॥

उदयपुर (Udaipur)

इस शहर में कई जिन मंदिर हैं इन के द-
र्शनकरे कई मीलोंमेंएककुदरती तालाव है इस
कापानी अथाहै वीचमें महलवनेहुए हैं किशति
यों पर जाकर सैर करते हैं राजा के महल
शम्भू निवास और वागदेखने लायकहैंवाग में
वहुतसी जिनप्रतिमा खंडित रखी हैं जब हम
लाहोरसे उदयपुर गए तो सुनाथा दस पंदरह
कोसपर एक पहाड में हाजारों जिनप्रतिमाखं-
डत हैं यात्रियों को यह स्थान भी देखकर
पतालगानाचाहियेकि यह क्यास्थानहै उदयपुर
से गाडी किरायेकरके कसरियानाथ जावे ॥

केसरिया नाथ।

उदयपुरसेकेसरियानाथ ३० मील पहाडों के
वीच में है रास्ते में भीलों की चौकी हैं जो फी

यात्री -)लेकर अपनीचौंकीसे दूसरी भीलों की चौंकीपरपहुँचा आवतेहैं इसी प्रकारफीयात्रि-फीचौंकी भीलोंकोदेते हुए उदयपुरसे केसरिया नाथ को आते जाते हैं केसरीयानाथ में कई जिनमंदिर हैं परन्त जिसको केसरिया नाथ कहते हैं वह एक मंदिर में श्याम वर्णकी प्रति-मां वैठेयोग इस समय के वैठे मनुष्य प्रमाण है यह वह प्रतिमा है जो रावण ने पूजन करने को अपने विमानमें स्थापन कर रखी थी जिस को रावण के मारे जाने के वाद श्रीरामचंद्र जी लंका से ले आए थे, अव यह निकृष्टकाल के प्रभाव कर पहाडों के बीच में तिष्ठे हैं यहां से अनेक धनवंतों ने इसको लेजाना चाहा परन्तु देव अतिशयसे कोई न लेजासका इस के रक्षक देवहैं वोल कबूल वालोंको साक्षात् परचामिले

है यह दिगंबर आम्नायकी है एक श्वेताम्वरी सेठ ने कुछ इसके नाम का कवूला था जब उसकी मनशा पूर्णहोगई तो वह एक लक्षरुपये की दोआंखें हीरेकी इस के चढाने के वास्ते लाया सो उस को स्वप्नहुआ कि यदि जराभी तुमने मेरेदिगंवरअंग में खललडालातोकुल का नाशहो जावेगा तव न चढासका, सुभेके वकत निरालेप दिगंबर स्वरूप में दिगवरियोंको दर्शन होता है फिर केसर का लेप होताहै सेरों केसर प्रतिदिन लगाया जाता है मेलेके दिनों में कई कई सेर केशर चढ जाता है परन्तु वहां केसर बहुत महिंगा मिलता है, बहुत केसर चढने से इस का नाम केसरियानाथ है श्याम को सुनहरे जेवर से श्रृंगार होता है जिस मेंलाखों रुपये के हीरे वगैरा जवाहिरात जडेहुए होते हैं

इस प्रतिमा के लाखों भील सेवक हैंजो काला बावा कहकर इस को मानते हैं और बोल कबूल चढाते हैं हजारों कोससे यात्रि बोल कबूल चढाने आवें हैं इस जगह बहुत से घर जैनी ब्राह्मणों के हैं यहां महाराजाउदयपुरकाराज्यहै महाराजा की तरफ से इसके नाम जागीर है हरवकत राज की तरफसे हथियार बंद पहरा रहताहैयहांके दर्शनकर केवापिसउदयपुरआकर टिकटजयपुरकालेवेफासलामील२६३हैकिराया रेलतीसरादरजा२॥।)है रेल१२बजे चलती है।

जयपुर (Jaipur)

रेल के स्टेशन से आध मील धर्मशाला है इस में ठहरे दो मन्दिर इस धर्मशाला के पास हैं यहां से १ मील शहर है शहर मेंसांगानेर दरवाजे एक नथमल की सराय है इस में ठहरने

से बहुत आराम मिलता है क्योंकि यहां से मन्दिर नजदीक है इस शहर में शिखरबन्द मन्दिर वा चैत्यालय२००हैं,श्रावकोंके ५ हजार घर हैं कुल हिन्दुस्तान में जैनधर्म की बडी नगरी यहीहै यहां पर महाराजाका रामनिवास वाग अजायबघर देखने लायक हैं यहां पर संग मरमर के खलोने व मेज चौकी फूलदान वगैरा वहुतमिलते हैं यहांसेटिकट,हिंडोंनरोड का लेवे फासलामील७६हैकिरायारेलतीसरादरजा॥≋)॥ है रेल २॥।-६॥-१४-१९॥-बजेचलती है।

चांदनपुर

हिंडौनरोड स्टेशन के पासधर्मशालामें ठहरे यहां से १ मील मंडावर ग्राम है इस कारण से इस स्टेशन को मण्डावर का स्टेशन

भी कहते हैं यहा से ३२ मील चांदन ग्राम है यहां पर जंगल में एक गउ प्रति दिन जाकर खडी होजाया करती थी स्वयमेव उस का दूध उस जमीन पर झिरजाता था लोगोंने जो खोदा तो एक प्रतिबिम्ब चौथेकाल का निकला खोदतीदफेजरा प्रतिमाके कानपर कहीं का निशान हो गया तब वहां जिनमन्दिर बना कर वह प्रतिमा स्थापन कर दई कलयुगी बे इलम पण्डितों के कहने से नई प्रतिमा वना कर शिखर में स्थापन करी है उस को अलग एक कोठडी में रख छोडी है प्रतिष्ठा हुई हुई प्रतिमा कान के जरा छीजाने से दोषित नहीं हुवा करती यह प्रतिमा परम पूज्य है इस का सेवककोईदेव हैजोबोलकबूल वालोंको तत्काल परचा देता है हजारों ग्रामों के अन्यमती बोल

कबूलका चढावा चढाने आते हैं चैतशुदी १५ से वैशाख बदी२ तकबडा भारी मेला होता है यहां से दर्शन करके हिंडौनरोडके स्टेशन पर वापिस आकर टिकट भरतपरका लेवे फासला मील४१ है किरायारेल तीसरा दरजा ।≶) डोडा ॥=)। है रेल ॥-१०॥- बजे चलती है ॥

भरतपुर (Bhartpore)

यह शहर देखने के लायक है यहांका किला मशहूर है यहां के दर्शन वा सैर कर के यहां से टिकट देहली का लेवे आगरा और मथुरा के स्टेशन पर रेल वदलती है ॥

देहली (Dehli)

इस शहर में मन्दिर वा चैत्यालय २४ हैं किले के अन्दर बादशाही मकान वा शहर वाजार चांदनी चौक वा बादशाही मकवरे वा

१०मीलपर कुतब की लाट देखने के लायक है यहां से टिकट मेरठ शहरका लंबे फासला मील ४१ है किराया तीसरा दरजा ।≈)॥। डोडा ॥=)। रेल२॥-१०।-१३-१८-२३।बजेचलती है

मेरठ (Meerut)

यहां ४ जिनमन्दिर है १ शहर में २ छावनी सदर बाजार में १ तोबखाने में यहां के दर्शन कर के यहां से गाड़ी भाडे कर के हस्तनागपुर जावे यहां से हस्तनागपुर २० मील है ॥

हस्तनागपुर

यहां पर एक बडा मन्दिर है और यात्रिय के ठहरने के लिये एक बडी धर्मशाला है यहां हर साल कार्तिक शुदी चौदस को बडा मेला रथ यात्रा का होता है यहां पर श्रीशान्तिनाथ कुन्थुनाथ और अरनाथ तीन तीर्थंकरों का जन्म

हुआ है यहां से डेढ मील बशंवा गांव है वहां एक मन्दिर है वहां से भी सामान खाने आदि का मिलसकताहै यहां से दर्शन कर के स्टेशन खतोली आकर सहारनपुर का टिकट लेना चाहिये किराया तीसरा दरजा ॥~)॥डोडा॥।)॥ मील५०है रेल ३-१३।-१७। १२।बजेचलतीहै

खरच

यात्रा करने में एक यात्रि रेल के तीसरेदरजे की गाडी में सफर करने वाले का किराया खुराककाकुलखरच पूर्वदिशा की यात्रा के करने में ६०) रुपये होते हैं बुन्देलखण्ड की यात्रा सहित ९०) दक्षिण दिशा कीयात्रा सहित १४०) जैन-बद्री मूलबद्रीकी यात्रा सहित १७५) रु०खरचपडते हैं पुण्य दान करना असबाब खरीद कर लाना डोडे दरजे में सफर करना नौकर संग लेजाना यहखरच अलग है कई आदमी मिल कर जाने से व एक रसोईमें खाने से खरचकम होताहै

इति दूसरा अधिकार संपूर्ण भया

—o—

जैनतीर्थयात्रा

तीसरा अधिकार

अब हम कुछ देसी दवाईयां लिखते हैं

जन्म घुण्टी

सरना दो तोले, बडीहरडें एक तोला तिरवी छै मासे गुलवनफशा एक तोला मलहटी छै मासे गुलाब के फुल एक तोला मुनक्का एक तोला सौंफ एक तोला इन्द्र जो एक तोला पलासपापडा एक तोला मरोडफली एक तोला नासपाल की टोपी छै मासे कालानमक दो मासे दनदन दाना छै मासे सुहागा तीन मासे अजवैन देसी एक तोला मुसब्बर दो मासे अम्बलतास पांच तोले

समझावट—सुहागेको खील कर के डालो, अम्बलतास का गुदा पांच तोले डालो उस में बीज न हो तीरवी न सोत को कहते हैं सो वक्कलो डालो बीचकी लकडीमत डालो बक्की के ऊपरको अरदाई छीलडालो सिरफ सफैद वक्कलोडालो

मुसबर एलवे वा कहते हैं इन सब चीजों का खूब कूट कर मिलाकर रखछोडो जब बच्चे को कवज जानो इस में से छै मासे थोडे से पानी में किसी बरतन में पका कर छान कर उस में जरासी कोरी खाण्ड या मिसरी या पताशा मिलाकर छोटे चमचे या सीपी से बच्चे को थोडोथोडोदोतीनबारकरके घण्टे घण्टे या दो दो घण्टे के बाद देनी चाहिये ताकि उस के खपजावे एक साथ देने से बच्चा उगल देता है यह अवल दरजे की जन्म घुण्टी है जो बच्चे को पैदा होने के समय दी जाती है यह बच्चे को छै वर्ष की उमर तक दी जाती है यह बच्चे की खांसी पेट के दरद और चुरणों को भी दूर करती है जिस स्त्री की गोद में बच्चा हो उसे तीर्थ जाने के समय थोडी बनाकर जरूर साथ लेजानी चाहिये ॥

बच्चे के दरद की दवा

जिस वक्त बच्चेके पेट में दरद होना शुरु होजाताहै तो बच्चा रोने लगता है बच्चे की माता उस को यूंही रोता जान कर जब वह चुप नहीं रहता तो उस पर खफा होकर उसे मार मार कर सुलाना चाहती है पासके वेवकूफ औरतें कहने लगती हैं कि इसे तो आज परियोंकी झपेट हो गई

हैसोयह सबमलतीहै चैसीस्त्री सख्त बिमार होजानेसे बच्चाको खोबैठीतो हैं जब बच्चे कोऐसी हालत होवे उसे जरासीदेसी चजवायन चकले या सिल या खरलमें पानीको साथरगड कर छान कर चमचा या कड़छी वगैरा में गरम कर के जब जरा ही गरम रहे पिलादेनी चाहिये इस से फौरन दरद दूर हो जाता है चजवायन दरद हटाने को बडी दवा है चजवैन की साथ जरासा काला नमक मिलाकर खाने से बडे मनुष्य का भी दरदहटसकताहै चजवायन बडीहाजमाकरनेवाली दवाईहै

मूंह आच्छा करने की दवा ॰

वंसलोचन तीन मासे सीतलचीनी तीनमासे सतगिलो तिनमासे सतमलहटी तीनमासे इलायची छोटी तीनमासे सेलखडी तीनमासे काफूरचीनीयां ढेडमासे कत्था सुफेद तीन मासे ढालका धुवां तीनमासे ॥

समभावट—वंसलोचन तवासीरको कहते हैं सेलखडी संगजराहतको कहते हैं सीतलचीनीकबाबचीनी कोकहते हैं ढाखकाधूवा यह चौमासे में जंगलो में या मकानके कोठोंपर उगती है इस का कालासा धूवां पसारीयो के होता है लाहौर में बहुत होता है इससे मूह फौरन अच्छा होजाता है कपूर

चीनया खाने वाले कपूर को कहते हैं जो खुसबूदार केले से निकसता है यह ही डालना चाहिये इस के वरखिलाफ एक रसकपूर होता है यह संखयेसे भी बढ कर जहर होता है कोई वे समझ यह न डाले उपरली सब दवाईयों को कूट कर कपडे में छानकर खरल में पीसकर खूबबारीक करलेवे जिसबच्चेकामूंहआयाहोवेतोउस के मूहमेंजराजरासी दो दो घण्टेवादडालता रहे है इस से फौरनमूंह आया हुवा अच्छा होजाता है अगर मौसम गरमी का होवे तो इस की साथ इतनी दवाई और करे॥

मेंहदी के पत्ते एक तोला जीराशफेद छै मासे कापूरचीनीयाछै मासे ॥

इन तीनों दवाइयों को एक कोरे मिट्टी के कुल्जेयानि बरतन में आधसेर पानी में भगो छोडे पांच सात घण्टे के बाद जब पानी में दवाई का असरआजावे तो इसमें से आधा आधा चमचा इस पानी का भी छान कर कभी कभी बच्चे के मूहमें डालता रहे इस से कैसा ही मोंह आया हुया हो फौरन अच्छा होजाता है रातको यह बरतन ओस में रखदेना चाहिये यह एक बार की भेई हुई दवा कई दिन तक काम दे सकती है यह दवाइयें बडे छोटे मरद इस्त्री जिन का मूंह

आगया हो सब के वास्ते हैं फौरन मूंह अच्छा कर देती हैं पियास को भी दूर करती हैं परन्तु यह पानी वाली दवाई गरम ऋतु में ही करनी सरदमें नहीं करनी यह बहुत सरद है सरद ऋतु में सिरफ वह वसलोचन वाली कुटी हुई दवाई ही काम में लानी चाहिये केले की पीस भी कुछ फायदा करती है कूवों में जो हंसराज उगा रहता है यह भी रगड़छान कर इस का पानी भी बच्चे के मूंह में डालने से बच्चे का मूंह अच्छा हो आता है सुहागा कच्चा ही पीस कर शहद में मिलाकर वार वार बच्चे के मूंह में लगाने से भी मूंह अच्छा होजाता है इन दवाइयों से क्या बच्चा क्या स्त्री क्या पुरुष सब बडे छोटों का मूंह आया हुवा अच्छा होजाता है यह सब के वास्ते हैं मूंह में जखम या छाले पडे हुए इन दवायों से फौरन अच्छे होजाते हैं॥

दिल की गरमी दूर करने की दवा

कवलगट्टा एकतोला धनिया १तोला सुफेद जीराएक तोला छोटी इलायचीका छिलक दोमासेगुलवनफसा एकतोलानीलो फरएकतोला विहदाना दो मासेखतमी छै मासेखसखसइमासे।

समझावट—कवलगट्टे को सुफेदगिरि डाले ऊपर का

छिलका और बीच का सबज पिस्ता फैंकदेवे इसका सबजपिता बहुत नाकिस होताहै हरगिज खाना नहीं चाहिये खस वह है जिस से टटियां बन्धती हैं इस सब दवाइयों को आध सेर पानी में भगो छोडे तीन चार घण्टे के बाद जब दवाई का असर पानी में आजावे तम को किसी लकडी से खूबहला वे फिजिस र बच्चे को गरमी का ताप लगगया होय पियास बहुत है या सखत बुखार होवे उस के मुंह मे घण्टे दो दो घण्टे बाद एक एक चमच डालता रहे इस से बच्चे का फौरन बुखार हटजाता है पियास दूर होजाती है बच्चा सर सबज होजाता है परन्तु यह दवाई मौसम गरमी को है सरद ऋतु में हरगिज न देनी बरखा काल में भी न देनी बहुत ठण्डोहै यह दवाइ इन बिमारियों में छोटे वडे स्त्री, पुरुष बडी गुणदायक है पियास को हटाती है बुखार की अग्निको शान्त करती है बच्चे को दवाइव बहुत न देनी और बलगम वाले बच्चे को न देनी ॥

चुरणे दूर करने की दवा

बाजे बच्चों के चुनडों में कोडे काटनेलगते है सोचूरने दूर करने को बच्चों को जरासो रसौत पानी मे घोल कर

सोपी या चमवा से प्रतिदिन कुछ दिन तक देने से चुरने दूर होजाते हैं परन्तु रसौंत बहुत ठण्डी है गरमी में देनी चाहिये सरदी में नहीं पांचमात वर्ष के बच्चे को चुरने दूर करने को एक माशा कमेलादही में मिला कर प्रतिदिन कई दिन तक खिलाना चाहिये जिस बच्चे के फोड़े फुनसी बदन मेंहोवे उस को रसौंत पिलाने से सब फोड़े वगैरा जातेरहतेहैं असली रसौतकांगड़ेसे आती है लाहौरमें भी बहुतमिलतीहै

बच्चे की मुतफ़रिकदवा

शरद ऋतु में बच्चे को जब सरदी होजाति है नाक बहने लगता है तो जरासा पान जरा से पानी में रगड़ कर गरम कर के देने से अच्छा होजाता है पानकी साथ जरासी अजवायन भी रगड़कर देदेते हैं बाकी बच्चेकीखांसी बुखार दूर करने को दवाई अंगरेजी में डाकटरी इलाज में लिखेहैं असल में बच्चों का इलाज हर बिमारी का डाकटरी में है वैद्यों और हकीमों पर बच्चों का कुछ इलाज नहीं है थोड़ी कितावां कालीकर रखी हैं बाजी स्त्रीयें बच्चो को अफीम देदेती हैं। यह बड़ी गलती है अफीम बच्चेको सख्त नुक-सान पहुचाती है। क्योंकि अफीम आला दरजे की काबिज

है कवल सब बीमारियों की माता है। जिस को बचपन में अफीम दी जावे वह बडी उमर में भी सदा बीमार रहता है इसलिये बच्चों को अफीम हरगिज नहींदेनी चाहिये ॥

चूर्ण हाजिम (पाचन)

अंजबील (सोंठ) एक तोला। पोदीना एक तोला। बडी इलायची ६ मासे। दालचीनी २ तोले। नमक लहौरी (सैन्धा) ६ मासे। नमक सौचल (काला) २ तोले। नमक मनयारी ८ मासे। फिलफिल स्याह (कालीमिर्च) ६ मासे। फिल फिल दराज (पिपल) ६ मासे। बादियान (सौंफ) १० मासे। सुहागा बिरयां यानि भुना हुआ। ४ मासे। जीरासुफैद ८ मासे। जीरास्याहकशमीरी८मासे। हीग बिरयांयानिभुना ६ मासे। शोरा कलमी डेढ १॥ तोला। अनारदाना २ तोले। जरिश्क २ तोले। अमाकका छिल का२तोलेनौशादर८ मासे॥

इन सर्व दवाइयों को खूब बारीक कूट कर कपडे यां बारीक तारकी छननी में छानकर किसी बोतल में भर कर रख छोडे जब कभी बदहजमी मालूम हो तो खाना खाने के थोडी देरी के बाद दो मासे वगैर पानी के इसी तरह सूका खा लिया करे या जब कभी तबीयत खराब मालूम हो तो

जरासा मुंह में डाल कर खा लिया करें यह आला दरजे का हाजमा और तबीयत खुश करने वाला चूर्ण है ॥

नोट—जरिश्क लाल किसमिस की शकल का खट्टा होता है सुम्माक मसर के दाने की शकल का सुरख रंग का खट्टा होता है सुम्माक के अन्दरकी गुठली फेंक देनीचाहिये केवल छिलका दो तोले डालना चाहिये सुहागा, और हींग भुनकर गेरना चाहिये यदि छोटे नगरो में सम्माक और जरिश्क न मिल सके तो कागजी नीबू का रस छान करचूर्ण में इतना डाले कि वह खूब तर हो जावे इस को धूप में नहीं सुखाना चाहिये आपही बोतल में पड़ा पड़ा सूकजावेगाछिल्का खाने में भी कुछ दोष नहीं है यदि नींबूभीन मिलसके तो दो तोला टाटरीडाललेवेटाटरी असलीकेसत कानाम हैयह सुफेद रंग की बिलायतसे बहुत आती है जिसकोआम लोगनिम्बूका सत कहते हैं यह निम्बू का सत नहींहै असली का है ॥

चूर्ण दस्तावर

सरवा एक तोला बड़ी हरड़े की छाल एक तोला सुहा गा छै मासे काला नमक तीन मासे सुहागेको खील कर उस की साथ हरड़े सनाय कालानमक सब चीजे खूब बारीक कूट

कर रख छोडे जब जरा कवज मालूम होवे रात को सोने के वकत गरम पानी के साथ इस मे से छे मासे खालेवे सुभे को दस्त खुलकर आजावेगा दो तीन दिन प्रति दिन खाने से सारा कवज जाता रहेगा ॥

खमीरा मुरब्बा व मुरब्बे की हरड

खमीरा मुरब्बा असली कशमीर मे आता है वह फशा के जेठे फूल का गुलकन्द होता है रात को गरम दूध के साथ दो तोले खालेने से सुभे को दस्त खुल कर आजाता है सोने के वकत मुरब्बे की एक बडी हरड खा कर ऊपर से गरम दूध पीले ने से सुभे को दस्त कुलकर आजावेगा। गरम दूध के साथ खा सकते हो।

पेट का दरद दूर करने की वटी

सौंठ एक तोला पोदीना एक तोला हींग तीन मासे सौंफ एक तोला इलायची बडी एकतोला जीराकशमीरी एकतोला तीनों अजवायन तीनतोले चित्ता एक तोला पीपल एक तोला दालचीनी एक तोला नौसादर छे मासे काला नमक डेड तोला पीपलामूल एक तोला कालीमिरच एक तोला ॥

हिंगको भून लेवे इन सब दवाइयों को खूब वारीक

कूट कर कागजी नीम्बू के रस में दो चने परमाण गोलियां बनाकर सुकाकर रख छोड़े जब पेट में दरद हो बगैर पानी के यानि सुकोही दो वटी खालेवे फौरन दरद अच्छा होजा- वेगा पैपर मैंट या इलायची का तेल पतासे या बाल को मिसरी में डाल कर खालेने से भी दरद दूर होजाता है ॥

दांतों को मजबूत करने वाली दवा

कत्था एक तोला रत्नजोत एक तोला माजू एकतोला सोहनमखी एक तोला रूमीमस्तगी एक तोला फटकड़ी एक तोला छालकीकर एक तोला सोंठ एक तोला बड़ी हरड़े की छाल एक तोला कालीमिरच एकतोला नमक लाहौरीछैमासे पीपल एक तोला सुपारी एक तोला ॥

इन सब चीजों को बारीक कूट कर रख छोड़े सुभे ही प्रतिदिन दांतों के मलाकरे इस से दांत बहुत मजबूत रहते हैं कुछ मसूढे वगैरा फूलने नहीं पाते ॥

ढाढ का दरद दूर करने की दवाई

नीलाथोथा एक तोला मिस्सी छै मासे फटकड़ी छैमासे नमकलाहौरी छै मासे नौसादर छै मासे काली मिरच ३मासे नीले थोथे को आग में फूक लेवे फिर सब दवाइयों को

खूब वारीक कूट कर रख छोडे रातको सोती दफे दांत दाढों के मलकर नीचे मूंह कर के राल छोड देवे एक घण्टा तक मूंह से राल गिराता रहे फिर थूक कर सोजावे न तो इस के बाद कुछ खावे पीवे न कुरला करे दो तीन दिन ऐसा करने से दाढका कैसा ही दरद हो दूर होजाता है जो इस दवा को आठवें या पन्दरवे दिन रात को मललिया करे उस के दांत बहुत वृद्धावस्था तक भी बने रहेंगे यह दांत ढाढो का दरद दूर करने को बडी दवाई है ॥

खुसक खांसी दुर करने की दवाई

विहदाना दो मासे खतमी छै मासे नसोडी छै मासे गुल बनफशा छै मासे रेशाखतमी तीन मासे ॥

इन सब दवाइयों को रात को पाव भर पानी में भिगो कर सुभे ही मलकर छान कर दो तोले मिसरी डाल कर सुभे ही पिया करे इसी प्रकार सुभे को भेई हुई श्याम को पियाकरे गरमियों में भगोकर पीवें सरदियों में पकाकरपीवे

मिसरी और कालीमिरच हरवकत मूंह में डाली रहने से उस का रस निगले जाने से भी खांसी जाती रहती है ॥

खुसकखांसी नसोडो की चटनी चाटते रहनेसे हटजातीहै

बलगम वाली खांसी शरबतजूफा चाटतेरहनेसे छूटजातीहै ॥

वलगम वाली खांसी दूर करने की दवा

गुलबनफशा ६मासे उनाब ११ दाने जूफा ३ मासे मलहटी ३मासे पशावशां याने सूका हुआ पहाडी हंसराज ६मासे गाजवान ३ मासे ॥

इन सब दवाइयों को पका कर छान कर इस में दो तोले मिसरी डाल कर रात को सोती दफे पीवे इसी प्रकार सुभे को पीवे इस दवा को पांच सात पुडिया पीनेसे बलगमी खांसी जाती रहती है अधरक के रस को शहद में मिलाकर खाने से भी खांसी जाती रहती है ।

खांसी की गोलीयां

धतूरे के बीज १तोला रेवन्दखताई ८ मासे सोंठ २ मासे किकर का गून्द दो मासे अफीम २ मासे केसर दो मासे ॥

केसर तो पानी डाल कर कूब खरल करे फिर उसी में अफीम भी रगड लेवे फिर सारी दवाइया उसीमें खूबबारीक कूट कर मिलाकर ऐसी कर लेवे जिसकी गोली बन सके सो इस की गोली उडद के दाने से छोटी यानी मसर के दाने प्रमाण बांधकर सुकाकर एक शीशी में रख छोटे खरल चढ़

बट्टा हाथों को खूब धोडाले क्योंकि धतूरा जहर है और इन गोलियों को ऐसी जगह रखे जहां बच्चेन लेसकें क्योंकि यह धतूरा जहर की गोली है जिस को बलगमी खांसी हो या जुकाम हो या मगज से रेशा (बलगम) पडता हो आंखों से पानी बगताहो तो एक गोली सुभे एक सोते वकत रातको पानी से खालिया करे और जिसको खांसी खुसकहो लुआब बिहदाने के साथ खाया करे यानि बिहदाने को पानी में भीगो कर उस के लुआब की साथ खाया करे यह गोलिया बलगम मगज का पानी खांसी रफे करनेको बडी फायदे मंद हैं अगर जियादा खानीहोंवे तो एक खुराक में दो गोली से जियादा न खावें जियादा दवाई जहर का असर करेगी बडे, बच्चेकी खुराकआधी गोलीहैछोटेबच्चेकी चौथाईगोली है॥

खांसी की दवाई

खोवान का सतदोरती पताशे में खाने सेखांसी जाती है ॥

मगज को ताकत देने वाली दवा

मगजकद्दू के मासे मगजतरबूज के मासे मगज खीरा के मासेमगजबादामके मासे पिस्तताके मासे मिसरी दो तोले मगजककडी केमासे दूध पावभर (२० तोले) घी दो तोले॥

इन सब चीजों को पानी के साथ कुंडी में खूब रगड़कर उस में दूध घी मिमरी डाल कर गरम कर के जब जरासील निवाया रहे तो पीलेवे, इस प्रकार प्रतिदिन सभे के वकत दस बारह रोजबराबर पीने से मगज मेंबडी ताकतआती है जिन तालेबिलमों या बाबू लोगोंके लिखने पढनेकर मगजकमजोर होजातेहैं उन केलियेइस दवाई का पीवणा बडागुणदाईहै ।।

बलगम दूर करनेकी दवा।

उनाब१०दाने गुलवनफशा ५ दिरम गुलनीलोफर३ दिरम नसोढे ५० दाने खतमी ५ दिरम खबाजी ५ दिरम, बीहदाना २॥ दिरम, पोस्त के अनपछ डोडे १२ दिरम गाजबान २ दिरम मुलहटी दो दिरम ॥

इन सब दवाइयों को रात को डेढ सेर पानी में भिगो कर रख छोडे सभे को मठी मठी आग की आचपर खूबपका वे जब पक कर आधसेर पानी रहजावे उतार कर ससलकर छान लेवे और फिर इस में आधसेर मिसरी डाल कर पकावे जब वह तार देने लगे तो उतार कर इस में ॥

बादाम की गिरि १० दिरम कद्दू की गिरि ५ दिरम खीरे की गिरी ५दिरम तरबूजकी गिरी ५दिरम नशासता १

दिरमधौरगौदकीकर१दिरम गौद कतीरा१ दिरम शकरतगार आधादिरम वरक चांदी ६० अदद ॥

यह सर्व दवाई हमामदस्ते में वारीककूटकरउस में मिला देवे फिर जब यह दवाई सूक जावे तो उठाकर रख छोडेरात को सोने के वकत इस को एक तोला खाया करे इस दवा से मगज से पानी या बलगम का गिरना फौरन दूर हो जाता है बड़ी मुफीद माजून है । एकदिरम साढे तीन मासेका होताहै

जुकाम दूरकरने की सूघनी

कशमीरीपत्ता पाच तोले कायफल दो तोले इलायची छोटी तीन मासे इलायची बड़ी तीन मासे लौग टोपी वाले २ मासे केसर एक मासा जावत्री एक मासा जायफल एक दाणा ॥

इन सब चीजों को खूब वारीक कूटकर कपडे में छान कर बहुत महीन कर के रख छोडे जब किसी को जुकाम हो उसेजरासी देदेवेइसकोतीनचार वार सूघनेसे मगजका सारा पानीनिकल कर जुकामदूरहो जाता है यह मुफीदसूघनीहै ॥

जुकाम का इलाज

जब जुकामहोवेतोखूबकालीमिरच मूहमें चवाकर लालछोड देवे ऐसाकईवार करेजुकाम में न्हावे नहीं एकदिन सुभेको

धनियांएकतोलामगज बादामएकतोलामगजकदूएकतोला खसखास १ तोलाइन दवाइयोंको खूब पानीसे रगड करछान कर इस में मिसरी डाल कर पांच तोले गेहूं का नशासताया मैदा पांच तोले घो में आग पर भून कर जब मैदा सिक जावे उस में वह रगडी हुई छानी हुई दवाइ गेर कर हलवा बना कर खाव फिर श्याम के तीन बजे तक न तो पाणी पीवे न कछु खाव तीन बजे के बाद कुछ खावे पीवे असा करने से जुकाम बिलकुल खुसक होजाता है ॥

मरोड़ बन्द करने की दवा

खसखास एक तोला अनीसून एक तोला अज-वायन देसी एक तोला जीरा स्याह कशमीरी एक तोला छाउवेर सवा तोला ईसबगोल एक तोला अफीम एक मासा ईसबगोल और छाउवेर को आग के कोयले डाल कर जरा भून लेवे फिर सिवाय ईसबगोल के सारी दवाईयें कूट कर बारीक करलेवे फिर इस में ईसबगोल साबत ही मिला देवे फिर जिस को मरोड आकर बार बार दस्त आते हों आंव पडती हो तो सुभे के वकत छे मासे इस दवाईको सरदपानी के साथ खालेवे इस प्रकार दो तीन दिन खाने से फौरन

मरोडे बन्द होजाते हैं अफीम कच्ची पुराणी सुकी हुई यानि कचकडा डालना चाहिये । अथवा—

सौंफ को जरा आग के कोयले से अध भूनीसी कर कोरी खांड में मिला कर पानी की साथ फक लेने से भी मरोड छूट जाते है ॥

शीतनाशन बटी

पीपल एक तोला सौंठ एक तोला लौंग एक तोला जावत्री एक तोला जायफल एक तोला अकरकरा एक तोला केसर छै मासे ॥

इन सब चीजों को खूब बारीक कूटकर फिर इस में सबजपान इतने कूटे जो इसकी जो बटीया बनसकें सो चने प्रमाण वटी बना छोडे जब कभी किसी को शरद ऋतु में शीत या सरदी होजावे तो पान में रख एक गोली खालेवे इस से फौरन सरदी जाती रहेगी अगर रातको सोतीदफेयह दवाई खाई जावे तो फौरन सरदी जाती रहे यह महान् गरम है इन को गरमी में कोई न खावे

खूनसफाई की दवाई

चोबचीनी दस तोले रेवन्दचीनी दसतोले सीतलचीनी

दस तोले दालचीनी दस तोले, उशवा दस तोले मुण्डीबूटी दस तोले मुलहटी दस तोले अनन्तमूल दस तोले॥

इन सब दवाइयों को कूट कर पानी में भिगो देवे दो दिन भीगी रहे फिर इन का पांच सेर अरक खिचवा लेवे इस अरक को पांच पांच तोले दोनो वक्त पीया करे इस से खून सफा होजाता है॥

खूनसफा की दवाई

नीलोफर ६मासे उनाव ७दाने सरफा ६ मासे मुण्डीबूटी ६ मासे शाहतरा ६ मासे खतमी ६ मासे सन्दल सुफेद ३मासे खवाजी ५मासे आलबुखारा ७दानेबनकशा ६मासे।।

इन सब दवाइयों को आधसेर पानी में भगो कर रात को ओस में रख छोडा करे सभेरी मलकर छानकर इस में दो तोले मिसरी डालकरपीयाकरेइस सेखूनसफाहो जाता है

गुलाब

गुलबनफशा एक तोला गुलनीलोफर १ तोला आलू-बुखारा १०दाने कासनी एक तोला अमलतास का गुदा सात तोले शीरखिशत ५ तोले मगज कद्दू छेमासे तिरबी ३ मासे गौदकतीरा आधमासा अर्कनीलोफरदसतोलेवेदमुशक१०तोले

यह सब दवाइयां पसारी से अलग अलग लावे रातको छेडपाव पानी में गुलबनफशा गुलनीलोफर और आलुबखारा किसी पत्थर या रांग या लकडी के या चीनी के बरतन में भिगो देवे और काशनी भी कूटकर इसी मे भगोदेवे फिर सुभे को उठ कर इन दवाइयों को खूब मथ कर इन का पानी छाण लेवे फिर उस पानी मे अम्लतास भिगो देवे और तोरवी के ऊपर को जरदी चकू से छील डाले और बीच की लकडी भी फेंक देवे केवल सफेद वकली तीन मासे और वह कतीरा गून्द इन दोनो को हमामदस्ते में खूबबारीक करलेवे और वेद मुशक और नीलोफर मे श्रीरखिसत भिगो कर रखछोडे फिर एक घण्टे के बाद जब शीरखिस्त उसअरक में घुलजावे तो अरकको छान लेवे फिर कूण्डी में मगजकदूडाल कर इस अरक से रगड कर इस अरक में मिलादेवे और वह जो अंवलतास भिगो रखा है उसे खूब मलकर किसी छलनी में छानलेवेफिरउसछानी हुई दवा मेंवहमगजकदूकी घोटी हुई दवा भी मिलादेवे फिर इस दवाइ के ऊपर वह दवा जो तिरवीगून्द को कूट छान कर रखी हैउसकोबुरबरा कर इस सारी दवाई मे मिला देवे फिर जिसको जुलाबदेना हो उस को इस दवाइ में से दो तिहाइ पिला देवे और

तीसरा हिस्सा रख छोड़े जिस को दवा पिलाई है उस को कुरला करवा देवे फिर दवापिलाने से ४ घण्टे बाद उस को कलका बनाया हुवा बरफ कूट कूट कर अरक गाजबान में मिलाकर पिलाना शुरू करे आध आध घण्टे बाद या घण्टे घंटे बाद उसको बरफ पिलाता रहे ज्यूं ज्यूं बरफ पिलावेंगे त्यूं त्यूं दस्त आने शुरू होवेंगे तीन बजे शयाम के बाद जब खूब दस्त हो चुकें तो वेद मुशक आधपाव शरबत नी-लोफर तीन तोले इन में आधपाव पानी डाल कर तीनमाशे ईसबगोल की फकी देकर ऊपरसे यह शरबत पिलादेवे फिर इस के एक घण्टा बाद खिचडी खाने को देवे,देशी जुलावों में इससे बढ कर कोई जुलाब नहीं परन्तु यह मौसमगरमी में देना अगर सरदी में देना होवे तो बरफ नहीं देना जुलाब के ऊपर उसी प्रकार खालिस अर्क गाजवान देना परन्तु अरक गाजवान उमदा हो अगर उस में पानी मिला हुवा हो तो उस के देनेसे दस्त बन्द होजावेंगे किसो मोतबिर अता रसे अरक वगैरा खरीदना चाहिये बहुत से अतार दवाइयां में बडो वेइमानी करते हैं अरक की जगह पानी में दवाईयों का जोहर डाल कर बेचते रहते हैं सो ऐसे अतारों का वंश नहीं चलता और जिस को यह जुलाब दिया जावे यदि वह

जुलाब कैयकर देवे तो जो तीसरा हिसा बचा रक्खा है वह उसे फिर पिलादेवे या दस्त न आवें या थोडेआवें तौभी मदद के वास्ते पिलादेवे अगर जुलाब के न होवे और पाच छे दस्त होजावें तो बाकी दवा उस को मत देना फेंक देनी चाहिये परन्तु यह जुलाब उस को देना जिस को बलगम का जोर न हो बलगम वाले को यह नही देना यह जुलाब तो खास कर बुखार आने वाले को देने से फोरन उस का बुखार टूटजाता है अबल तो देते ही टूटजाता है वरने दूसरे तीसरे दिनतो जरूर बुखार जाता रहता है पित्त के मिजाज वाले को तो यह जुलाब अमृत है गरीब आदमी शोरखिस्त की जगह खांड डाल सकता है ॥

जुलाब

ग्यारजफेकरा एकमासे तिरबी सुफेद सातमासे गारीकून एकमासा मस्तगी एक मासा तुर्बेकागुद्दा (अहमहंजल) छे रती कालादाना (हबुलनील) चार मासे कीकर का गोंद छे रती गोंदकतीरा चार रती नमक लाहोरी एक मासा ॥

इन सब दवाइयों को खूब वारीक कूटकर पांच तोला

शरबत बनफशामें मिलाकर खाजावे ऊपर से गावजवान और सौंफ का अरक मिलाकर दो तीन घूंट पीलेवे फिर तीनचार घण्टे के बाद जब पियास लगे या दस्त आने से ठहर जावें तो यही दोनों अरक गरम कर के पीता रहे जब दस्तआ चुके दो तीन बजे तीन मासे ईसबगोलकी फकी लेकर ऊपर से तीन तोले शरबत नीलोफर पाव भर वेदमुशक या पानी में डालकर पीलेवे फिर थोडी देरबाद खिचडी खावे यह जुलाब बलगम वाले को बडा फायदेमंद है या सरदी की मौसम मे उमदा है परन्तु मौसम गरमी मे पित्त के मिजाज वाले को या बुखार वाले को नही देना ॥

(मल्हम)

पावभर वेरोजा आगपर जरा गरम करलेवे फिर उस में एक तोला नीलाथोथा बारीक पीस करमिलाकररखछोडेजहां फोडाहोवहांइसमलहमकाफोयाबनाकरलगादेवे थोडे हीदिनों में फोडे फुनशी दूर होजावेंगे। फाहेके बीच में कैंचीसेजराशा सुराखकर देवेताकिजखमकीमलामतउस मेसेनिकल सके॥

मल्हम

कत्था एक तोला मुरदासग एक तोला कमेला के

मासे महदी के पते सुके हुए एक तोला नीलाथोथा तीनमासे कापूर छै मासे संग जराहत एक तोला सुफेदा एक तोला नीम का बकल एक तोला ॥

इन सब दवाइयों को खूब बारीक कूटकर खरल करके इतने मखन में मिलावे जो पतला मल्हम बनजावे जिस जगह फोडा फुनसीहो उसपर दिनमें को कईवार लगाता रहे सारे फोडे फुनसी चन्दरोज में जाते रहेंगे शरीर सुन्दर होजावेगा सुफेदा उमदा असली हो यह बिलायत से एक जाति की धातु फुकी हुई आती है ॥

आंखों का लेप

रसौत फटकडी छोटी हरडे कपूर अफीम इन सब चीजों को थोडी थोडी किसी पत्थर के चकले पर घिसकर रात को सोते वकत आंखों के ऊपर लेप करलेवे इस से आंखों की सुरखी वटती है दुखती हुई की सोजस फौरन दूर होजाती है ॥

आंखोंपर वांधने की टिक्की

खट्टे अनार का छिलका एक तोला कीकर की पत्ती एक तोला लोधपठानी छै मासे फटकडी तीन मासे ॥

इन सबको कूटकर इस में जरासा पानी मिलाकर टो टिकी बनाकर एक घण्टा पाणी के भरे हुए घड़े पर रख छोड़े फिर दुखती हुई आंखों पर बांध कर सोजावे इस से आंखों की सुरखी कम होजाती है सोज भी कम होजाती है

आंखों का घरडा

रसौंत एक तोला छोटी हरड़े ६ मासे फटकड़ी ३ मासे अफीम डेढ मासा ॥

इन को पानी के साथ खूब खरल करलेवे दोनों वकत दूखती हुई आखो में एक एक सलाई भरकर डालाकरे इस से आंख अच्छी होजाती हैं ॥

आंखों में जिसत

जिसत की खील को बहुत बारीक पीस कर डालने से आंखों के रोहे दूर होजाते हैं दवाई डालती दफे जिसत का रोहोपर सहज से मल देना चाहिये ॥

गर्भ रहने का दवा

जिस स्त्री को हमल न ठहरता हो एक पनवाड का बीज सुभे ही ठण्डे जल के साथ प्रतिदिन निगल जायाकरे कुछ दिन ऐसा करने से हमल ठहर सकता है ॥

लंघन

वैद्यों पर बदहजमी दूर करने का अच्छा इलाज नहीं ग्'हो काष्ठ वरतते हैं जब किसी की बदहजमी दूर नहीं होती तो उसेलघनकरवातेहैंयानीउसको १५ दिन तकभोजन देनाबन्द करदेतेहैं सो लंघन कराने वालों को१०० में से ९९ तो जरूर मारदेते हैं इसलिये किसी बिमारी में भी मरीज को लघन नही कराना जो वैद्य लघन बतावे यह समझ लो वह कहताहै इस मरीज को मारदो सो ऐसे वैद्यों को फौरन अपने घर से बाहिर निकाल देना चाहिये फिर उस से बातभी नहींकरनी चाहिये सख्तसेसख्तबदहजमी कोडाक्टरघण्टों में खोदेतेहैं बदहजमी काइलाजडाक्टरोंकाकरनाचाहियेबद-हजमीकेचिन्ह भूकका न लगना खट्टीडकार खानाभोजनमूह मेउछल कर खाना वगैरा वगैरा है लंघन कभीभी नहींकरना चाहिये बदहजमी में सोडा वाटर रोटी खानेसे दो घण्टेबाद पीना चाहिये मिठाई बिलकुल नहीं खानी चाहिये ॥

फोडे का इलाज

फोडे पर गुलाबास के पत्तों पर मिठा तेल लगाकर उन को आगपर जरा गरम कर के बाधे दो तीन दिन बांधने से

फौरन कैसा ही फोडा हो फट जावेगा और इसी से सारी राद बाहिर निकल जावेगी फिर जब राद की सफाई हो लेवे तो गरम पानी में १५ तथा वीस बुन्द कारबुलिक आयल (carbolic oil) डालकर उस से जखम धोकर उस के ऊपर आइडोफारम (Iodoform) छिडक कर ऊपर कारबुलक आयल में रुई का फोया भगोकर रखकर पट्टी बांध दिया करे यह दवा दोनोंवकत करे ऐसा करने से कैसा ही जखम जाता रहता है॥

बच्चे का मुंह पेट

जिस बच्चेका मुंह पेट दोनो चलतेहों अगर मौसम गरम है तो उसे जरासा दरयाईनारयल जरासा जहरमोहरा घस कर दोनोंमिला कर चमचेमें दिनमें सुबे श्याम दुपहर, तीन वार दिया करे तो वह फौरन अच्छा होजावेगाअगरयह बिमारी सरदीमें होवे तो डाक्टरी इलाजकरे बच्चोका इलाज डाक्टरका ही करे जो सिरफ दूध फेंकता हो उसे सिरफ दरयाई नारयल रगडकरदेवे बहुता दूध फेंकना बुराहोताहै अगर एक दो वार जरा से दूध उगले तो कुछ डर नही थोडासा दूध गेरना मुफीद है इससे बच्चे की छाती हलकी होजाती है बलगम निकल जाता है॥

कान का इलाज

कान मे से राद बहती हो या दरद हो तो डाक्टर से कान पिचकारी से धुलवा कर दवा गिरवानी चाहिये इस बिमारी में वैद्य हकीमों के पास नही जाना चाहिये ॥

पिचकारी

अगर किसी को किसी बिमारी की हालत मे दस्तावर दवा देने से भी दस्त न आवे तो फौरन डाक्टर से गुदा के रास्ते पिचकारी करवा देनी चाहिये फौरन दस्त आजावेगा पचकारी समान कोइ मुफीद वस्तु नही अगर कोई ऊचे से गिर पडे और गस आजावे तो पहले ना उसे अंग्रेजी दवा अमोनिया सुघावे फिर उस के जरुर पिचकारी करवा देनी चाहिये जो पिचकारी से डरते है वह गलती पर हैं पिचकारी बडी गुणदाई है ॥

घाव की दवा

अगर किसी के चाकू वगेरा लगजावे या गिरपड़ने से शरीर मे जखम होकर खून जाने लगे तो फौरन उस के ऊपर सगजराहत यानि सेलखडी बारीक पीस कर उस के ऊपर बहुत सी धरकर दवा कर ऊपर से पट्टी बाध देनी

गिलो को खूब कूटकर यह सर्व दवा श्याम को पानी में भीगोकर ओस में रख छोडे सुभे को खूब मलकर छान कर इस में २ तोले मिसरी डाल कर पीवे इसी प्रकार सुभे की भगोइ हुई श्याम को पीवे अगर गिलो सबज न मिले तो ६ मासे सूकी ही डाल लिया करे अगर खांसी बलगम न होवे तो यह नुसखा करे ।।

गुलबनफशा ८ मासे इमली २ तोले अलुबुखारे ७दाने गुलाब के फूल ३ मासे गाजवान ३ मासे कासनी ६ मासे ॥

इन को पहली ही तरह भगोकर छान कर मिसरी डाल कर दोनों वकत पिया करे अगर बुखार सरदी में होवे और अंग्रेजी दवा न मिल सके तो यह दवा करे ॥

गुलबनफशा ८ मासे पशावशा ६ मासे गाजवान ४ मासे उनाब ७ दाने सौफ ३ मासे मुनका ११ दाने गुलाब के फूल ३ मासे मकोइ डोडो ६ मासे मलहटी ३ मासे गिलोय ६ मासे

इन सब दवाइयों को पकाकर छान करदो तोले मिसरी डालकर पिया करे ॥

भुरता

अजवाइन देसी ६ मासे हरडे छोटी २ अदद गिलोय ६

मासे चोरायता ६ मासे पीपल ४ रती कालानमक ४ रती ॥

इन सब दवाइयों को खूब रगड छान कर अग्नि में मट्टी के ठीकरे गरम कर के इस में बुझा कर सुबे ही प्रति दिन पीया करे इस से पुराणा बुखार भी दूर होजाता है ॥

बुखार में पीने की दवाई

शरबत नीलोफर २ तोले शरबत बनफशा मलवा २ तोले शकंजबवी २ तोले वेदमुशक ५ तोले अरककाशनी५तोले

इन में ठण्डा पानी डाल कर तीन मासे खूबकला को मुख में डाल कर ऊपर से यह दवा पिया करे अगर वरफ मिले तो इस में वरफ भी डाल लेवे यह दोन वक्त पीया करे परन्तु गरमी में पीवे सरदी में नहीं खूबकला को किसी बरतन में डालकर उसे धोकर उस में एक वरक चांदी का मला लेना चाहिये इस को मुह में डालकर ऊपर से यहदवा पीवे अगर बुखार में कवज होवे तो उसे फौरन जुलाब देवे अगर दस्त जियादा आते हों तो यह दवा करे॥

मरबा वीह दो तोले इस को साथ दो वरक चांदी के मिला कर खा कर ऊपर से शरबत नीलोफर पांच तोले रबत फालसा २ तोले इस में वेदमुशक केवड़ा ठंडा पानी

बरफ डालकर पीवे गरमी के बुखार में घीयाकदू को फांक को पानी में भगो भगो कर खूब पैरों के मालिस करे सिरपर मखन रखे दवादव जो दिल के गरमी दूर करने की भगोवां दवा है वह बेदमुश्क और पानी बरफ डालकर पीयाकरे, बेद-मुश्क केवडा यह पानी की तरह शीशे के शीशे पी डाले बल्कि इसमें थोडा थोडा जहरमोहरा भी रगडकर मिलादेवे अगर छातीमें दिल धडकता हुवा नजरआवेतो जरासा काफूर चंदन गुलाबके अरक केसाथ रगडकर उसमें कपडेकीजरासी टाकी भगो भगो कर दिल के ऊपर रखे पाच पाच मिन्ट में यह कपडा एक उतार कर दूसरा ठंडा रखता जावे इस प्र-कार घण्टा दो घण्टा सख्त गरमी के वक्त दिन में करे यह करे सब इलाज गरमी के ऋतु का है खियाल रखे कि गरमी के बुखार में बैद्य का इलाज मत करना अगर बैद्य का इलाज करोगे तो मरीज को हाथ से खोबैठोगे सिरफ यूनानी हकीम या डाक्टर का करो और बुखार में जिस की जीभ स्याह पडजावे उसे काल के मुख में बैठा समझो उस के इलाज में रुपयों की थैलिया खोल कर दवाइयों और हकीमोंकी फीस में लगा दो तब वह बचेगा यह बहुत सख्त बुखार होता है बीहदाने की पोटली बेद मुश्क में भगो भगो कर चूसतारहै

बुखार वाले को साबूदाना पकाकर दूधमें या पानी में खाने को जरूर देना चाहियें अगर साबूदाना भी न खाया जावे तो वारलीं को खूब पानी मे उबाल कर उस का पानी ठंडा कर के देना चाहिये यह पानी भी बडा ताकतवन्द होताहै और दूधतो दोतीन चार वार जरूर पिलानाचाहिये। वैद्य हकीमों के कहे से दूध बन्द करना न ीं चाहिये और किसी होशयार हकीम या डाक्टर को बुलाकर उस का इलाज करना चाहिये क्योंकि बुख र सैंकडों किसम का हो ता है इस के सैंकडो नुसखे हैं जैसी मौसम हो जैसी मरीज की तासीर हो उस की उमर के मुताविक ताकत के अनुसार हैसीयत के लायक हकीम सोच कर देते है गरमी के बुखार में कागजीनिंबू चूंसे मीठे नीबू चूसे वरफ तो इतनी खावे जितनी खई जावे यह कलकी वरफ महा सरद है जो इसे गरम बताते हैं वह नातुजरबेकार है सो ना तजरवेकारों का कहना मानना सखत गलती है जो वरफ को गरम बतावे मौसम पोह महा में उसे खूब वरफखुवावे उस के नंगे शरीर के वरफ बांधे फिर उस से पूछे कि बता वरफ गरम है या सरद,पस वरफ महा सरद है मौसम गरमी में बुखार वाले को वरफ का देना गोया उसको सरजीवनबटी और आवह-

यात का देना है और बुखार अगर न उतरे तो डाक्टर की दवा लिखकर फौरन उतार देना चाहिये अगर फिर हट कर चढ जावे तो कुछपरवा नहींफिर उतार देना चाहिये उतरने चढने वाले बुखार में इनसान को बहुत जोखों नहीं होतो।

धुन्द दूर करने का अंजन

सिक्के की गोलीजो बन्दूक में चलाते हैं यह चली हुई गोली पंसारियों के बिकती हैं सो दस तोले गोली लेकर एक लोहे के कडछे में डालकर आग पर रख देवे जब वह तैजावे तो जमीन में जरासा गढा खोद कर उस में ऐसी सहज से गिरावे जो साफ सिक्का तो उस में जा पडे मैल मैल कडछे में रह जावे सो जो मैल कडछे में बचे उसे फैंक देवे फिर वह साफ करा हुवा सिक्का कडछे में गेर कर फिर तावे और एक तोला गधक रगडकर पास रखलेवे एक आदमी तो उस सिक्के को नीँब की लकड़ी से हिलाता जावे और एक आदमी उस में वह पीसी हुई गन्धक जरा जरासी चुकटी से फैंकता जावे सो ज्यों ज्यों उस में गन्धक डाल डाल कर फेरो जाओगे वह जलकर काला होजावेगा जब वह बिलकुल जलजावे और सिक्के का रवा उस में नजर न आवे तो आग पर से उतार

कर फिर भी नींबकी लकडीसे उसे जलदी जलदी चलाते रहो फिर थोडी देर के बाद ठंडा होजाने पर किसी खरल में डाल कर उस में तीन मासे पीपल (मघ) डालकर खूब खरल करे फिर जब यह बारीक होजावे तो इस में गुलाबका अरक डाल कर खरल करे इस तरह १५ दिन तक उसे दो दो चार चार घण्टे प्रतिदिन किसी नौकर या मजदूर से रगडवाता रहे जब करडा होवे तो और गुलाब का अरक डाल लिया करे १५ दिन के बाद उस को खरल कर जब वह खूब सूक कर बारीक होजावे तो उसे एक शीशी में भरकर रख छोडे, यह एक उमदा किसम का अंजन बन जाता है जिस की नजर मोटी पडगई हो या आखोंसे पानी जायाकरता हो या आंखो में खारिश हो या पडवाल हो या रचौंधा पडता हो इस को सोते वकत सलाई से डालकर सोजाया करे तो यह सारी बिमारियां इस अजन से जाती रहेंगी यह जरा लगता है सो लगने की परवाह नहीं करनी चाहिये,जितना पानी आख से इस के लगने कर निकल जावेगा उतना हो अच्छा है इस को डाल कर नीचे मूह कर के बैठा रहना चाहिये ताकि आंखों से पानी जो टपकताहै टपक लेवे और इतनी बातोंका खयाल रखे कि इस अजन को नींब की लकडी की अपनी

बालकर उस पर बनावे और नीव की लकडी ही से फेरे लकडी को फेरती दफे जोउस का कोयला जलकर उस में मिलजावे उसे उसीमें पीस दवे निकाले नहीं और इक्कीस दिन डाल कर फिर बन्द कर देना चाहिये फिर पांच सात दिनके बाद डाले हमेशा के डालने का आदी न होवे यह बहुत तेज अजन है थोड़े ही दिन में फायदा कर देता है और छोटी उमर के बच्चों की आख में भी न गेरे क्योंकि यहतेज है यह कुछ दिन डालने से फोले को भी काट डालता है जिस को ममीरे का सुरमा कह कर बहुत से लोग अपनी थैलियां पुरकर रहे हैं वह सुरमा इस अजन के आगे कुछ भी कदर नहीं रखता यहएक बहुत बढियाअजन है यह काले रग का अजन है अगर इस को सुरख रंगका किया चाहो तो बनाती दफैबजाय गन्दक के कलमीशोरा काम में लाओ ॥

फोला काटने का अंजन

एक मट्टी की कुज्जीमे छै मासे हरताल कूटकर रख कर ऊपर एक डवल पैसा रख देवे फिर उस के ऊपर छैमासे हरताल रखकर कुज्जीका मुंह बन्दकर के ऊपर खडियामट्टी लगादेवे फिर श्याम को दस सेर उपलों के बीच में रख कर

आग लगादेवे सुभे को उसे कुज्जी में से निकाल लेवे अगर इस के फूकने में कसर रहे तो फिर पहली तरह हो उसेफूके जब फुक जावे जो उसे गुलाब के अरकमें १५ दिन तक पहले अंजन की तरत खरल कर के शीशी मे डाल कर रखछोडे. इस अंजन को रात को सोते वकत कुछ दिन तक डालने से फोला कट जाताहै यह एक बडा वेश कीमती मुफीद रग का अंजन हैयह फकोरी नुसखे सिरफ हमने पर उपकारताके अर्थ बतायेहैं वरने कौनबतालाहै,सिरसका बीज प्रतिदिनरगड कर आख में डालने से भी फोला जाता रहता है हाथीका नखून या गधेकीदाढ रगड कर डालनेसेभी फोलाजाता रहता है॥

लौंग का तेल

रेत १०० तोले विरोजा ४० तोले लौंग ४० तोले यह तीनों वस्तु एक मट्टी के घडे में डाल कर उस के ऊपर एक मट्टी का ऊधां पियाला या कुज्जा या कुल्हडी या लोटा यानि करवा उस घडे के मूंह पर रखकर गाजनी मट्टी पानीमें भगो कर उस में कपडे की लंबीलंबी लीर फाड कर उस गाजनी में तर कर के उन दोनों के उस जगह लपेटे जहां उन दोनों के मुह मिलते हों, यह लीर लपेट कर दोनों के मूंह आपस

में जोड़ देवे फिर गाजनी को घडे और उपरले वरतन के चारों तरफ खूब मोटी मोटी लीप देवे फिर उसको उठा कर साया में सूकना रख देवे तीन चार दिन में वह सूक जावे तो और बहुतसी गाजनी मट्टी कूटकर पानी में भगोकर उस घडे की तली और पेट पर गाढी लीप देवे फिर जब तीन चार दीन में वह सूक जावे तो लौंगों का तेल निकाल लेवे इतनी बात का खियाल रखे कि मट्टी का घडा कोरा न हो पानी का वरता हुवा हो यानि जिस में महीनों पानी भरा गया हो यानी यह घडा पानी के पलघडे का पुराणा होना चाहिये ताकि तेल न पीजावे अगर कोरा होगा तो सारा तेल वही पीजावेगा और ऊपरका ढकने वाला वरतन भी अगर कोरा होवे तो उसमें भी कई दिन तक पानी भरा रहना चाहिये फिर उसे घडे के मूह पर जोडे औरऊपर ले वरतन का मूह असा हो जो उस के अन्दर घडे का मुंह खूब अडकर आजावे और जब जोडने लगोतो उस के ऊपर ले कुण्जे के पेट में एक छेक बढईसे वरमे से करवादेवो फिर वह कुण्जाउसघडे के मूहपर जोडो जब गाजनी वगैरालगाओ तो यह छेक बन्द होने न पावे जब यह गाजनीवगैरा सूक कर मूह जुड जावे तो चूल्हेके ऊपर उस घडेको सीधा मत

रखो कोडारक्खो ताकि आग उसके पेट के लगे इतना कोडा भी मतकरो जो दवा उबल कर नीचे मुंह में आजावे, इतना इतना कोडा रखो जो बराबर मे जरा मुंह का पासा ऊपरको ही रहे और ऐसे अन्दाजे से कोडा रखो कि वह जो कूजे में छेक है वह नीचे को रहे और वह चूल्हे के मुकाबिल में न रहे बलकी पासे की तरफ रहे यानी घडे को चूल्हे पर इस कदर पडावो जो उस का मुंह चूल्हे के पासे वाले तरफ नीचे रहे और वह छेक जमीन की तरफ रह,फिर उस छेक के नीचे एक बरतन काच का या चीनी का जमीन पर ऐसे अंदाजे से रखो जो उस छेक में को तेल टपक टपक कर उस बरतन में पडे और घडे के नीचे चूल्हे में आग जलादो परन्तु आग बहुत तेज मत जलाओ थोडी मामूली जलाओ सो जब वह दवा अन्दर गरम होगी तो घण्टे दो घण्टे के बाद उस मे से उस छेक के रस्ते वह तेल टपकना शुरु होगा जो बून्दें उस कटोरे में पडती जावेंगी सो आठ सात घण्टे में सर्व तेल निकल आवेगा फिर उस तेल को किसी शीशी में रख छोडो जो तेल शीशीमे ऊपर तिरेगा वह असल लौंग का जानो जो नीचे पानीसा दीखेगा वह बिरोजे औरलौंग का मिला हुवा है यह तेल अवलदरजे का है जो लौंग का तेल रूपया

दो दो रुपये तोला विकता है वह असली नहीं है असली यह है इस के गुण के आगे इस का दाम सौ रुपये तोला भी कुछ दाम नहीं जिस की डाढ में दरद हो जरासो सीख पर रूई लगाकर उससेजरासा डाढ पर लगाकर राल छोड देने से दरद बन्द हो जाता है जिस को अधडग मारजावे पान में तीनबून्द खुलाते तीन बारवेर खाने से ही अधडग जाता रहताहै जिस की टांगों में या कही दरद होवेतो पांच तोले असली तारपीन का तेल लेकर उस में यह लौंगका तेल तीन मासाडाल कर हिलाकर पाच सात दिन मालिस करने से सब किसम का शरीर का दरददूर होजाता है गठिया दूर होजाती है सन्नि-पात वाले को पान में तीन बुन्द देनेसेसन्निपात दूर होजाता है यह तेल अनेक मरजों का नाश करन हारा है ऐसो ऐसो दवाई अनेक रुपये खरच ने से भी कोई किसी को नहीं बताता परन्तु हमने परोपकारता के निमित्त बताई हैं निका लती दफे इतना खियाल रखना की आंच बहुत मिठी जरा जरा बालना तब निकलेगा तेज आंच से अवल घडा फूट जावेगा या दवाई जल जावेगी या उवाल आकर छेक में आजाने से सब दवा खराब होजावेगी इसलियेयह तेल मिठी मिठी आंच बालकर निकालना अवल तो इस तेल को हर

कोई नहीं जानता अगर कोई जानता भी है तो नुसखा तो बताता नहीं सिरफ निकाल देता है सो वाजे वाजे लालची कहदेते हैंकि इसके नीचेतो केवल रेशम जलता है सोपचास पचास रुपये की दरयाई मंगवा कर दो चार रुपये कीउसकी तसली के वास्ते जला देता है बाकी सब आप उडा जाते हैं ऐसे छलियों सेबचना जो शरीर का दरद वाय वगैरादूरकरने को इस को लिखे ऊपर अनुसार मालिस करवावे तो जितने दिन मालिस करवावे न्हावे नहीं खूब कपडे पहने ता की पसीना आ कर बदन खुल जावे ॥

दस्तखुलकर आने की दवाई

गुलबनफशा एक तोला गुलाब के फूल छैमासे सौंफ तीन मासे सनाय ६ मासे तिरबी २मासे ॥

इन सब दवाइयों को खूब बारीक कूट कर इस में दो तोले मिसरी मिलाकर रख छोडे जब कबज जाने इस से रात को गरम दूध की साथ एक तोले खालेवे इस से सुभे का दस्त खुलकर आजावेगा ॥

हमल न गिरने देने की दवा

जिन स्त्रियोंका हमल गिर गिर पडताहै वह यहदवाखावें

गोंदकतीरा पांचतोले गोंद भिमरिया (सीविंयां) पांचतोले ताल मखाना ५ तोले जीरासफेद पांच तोले गाजर काबीज पांचतोले तज पांच तोले नशासता पांच ताले ॥

दोनों गोंद जरा कूटकर घी में जराभून लेवे और नशास्ते को घी में अलग भून लेवे फिर सारी दवाई कूटलेवे इन में पैंतिस तोले कोरी खांड मिलालेवे फिर इस में से एक तोला सुभे हो वकरी या गउके कच्चे दूध को साथ खाया करे और जब हमल रहजावे तौभी यह दवा न छोडे यह दवा बडी मुफीद है हमल बच्चे दानी में गरमी पहुंच जाने से गिर पडता है सो यह दवा गरमी को शान्त करती है कूवतबाह को ताकत देती है जिस स्त्री का हमल गिर गिर पडता हो उसे चाहिये जब हमल रहजावे तो यह दवा भी खावे और अकसर कर के पडी रहे या बैठी रहे बहुती फीरे नहीं बोझ बिल कुल नहीं उठावे शरीर को बहुत न हिलावे कोई गरम वस्तु न खावे कटी में एक मोटासा डोरा बतौर तागडी के बाध लेवे पुरुष का सेवन करना छोड देवे ऐसा करने से वरा वर बच्चा पूरे दिनों पर पैदा होवेगा और जिस मरद का बीर्य चीण होता हो उस के वास्ते भी यह दवा बडी मुफीद है इस से जरूर बीर्य का गिरना बन्द होजावेगा ॥

नोट—अगर इस दवा के देने पर भी स्त्री को हमल न ठहरे तो उस के पति को चाहिये वह हम से मिले फिर बाकी बात जबानी बतलाई जावेगी ॥

मल्हम

फनाईल(Fanail)एक तोला लुकआयल (Luck oil) सात तोले।

इन दोनों को मिलाकर किसी कांच या चीनी के बर-तन में रख छोड़ें जखम पर प्रतिदिन दोनों वकत लगायाकरे तो वर्षो का जखम भी इस से जाता रहता है ॥

दाद

दाद की सब में उमदा दवा जोंके लगवाना है क्योंकि यह फिसाद खून का है जोक लगवाए बदून इस का जाना कठिन है जो जोंके लगवाने से डरता होवे तो यह दवा करे जोतिशचीनी छै मासे चार तोले मखन को पानी में धोकर उस में छै मासे जोतिशचीनी पीस कर मिलालेवे इसे दादपर लगाया करे इस से दाद जाता रहता है यह दवा जरा लगती है सो लगने वाली दवा ही फायदा करा करती है ॥

मूह का सोजिश

बाजे वकत एक तरफ से या दोनों तरफ से मूह सूज जाता है सो वैद्य हकीम अनेक लेप या पीने की दवा देते हैं सो सब वेफायदा हैं इस बिमारी में फौरन ठोडी के नीचे ४० जोंक लगवा देनी चाहिये इतनी ही अगले दिन लगवा देवे इस से फौरन मूह अच्छा होजावेगा इस की यही दवा है अगर देरी करोगे और सोज गले के अन्दर चला गया तो जिन्दगी का खतरा है इस बिमारी में खटाई मिठाई बादी की वस्तु अचार दही मट्ठा वगैरा नहीं खाना॥

मसूडों का सोजिश

अगर मसूडे दाढ हिलने से सूजे हैं तो इसका इलाज डाक्टर से दाढ निकलवाना है हिलती दाढ फिर नहीं जमा करती फौरन निकलवादेनी चाहिये परन्तु डाक्टर की फीस का लालच नहीं करना चाहिये डाक्टर से निकलवानी चाहिये जराह अनेक तरह का नुकसान पहुंचा देते हैं बडा दुख करते हैं अगर दाढ में कीडा लगने से दरद है तौभी दाढ निकल वा डालनी चाहिये अगर यूं ही दरद और सोजिश है तो इस का इलाज जोंक लगवा कर खून निकलवाना है

क्योंकि यह भी खून को मरज है अगर गरमी से मूंह में जखम हैं तो मसाने की दवा जो पहिले लिखी है वह करो और अगर मूंह नहीं आया तो लौंग के तेल का फौया भरकर उस के मल कर लाल चुवा दो फौरन दरद दूर होजावेगा॥

कमेड़ा

यह एक बड़ी नामराद बीमारी है इस ने अनेक बच्चे खा खा कर घराने के घराने उजाड़ दिये हैं बाजी स्त्रियें बिचारी सोलह सोलह बच्चे जनकर भी वे औलादी ही नजर आती हैं। यह कमेडा क्या मानों एक जाति का भेड़िया है बच्चों को इससे बचानेमें बड़ी खबरदारी करनी चाहिये जब कभी खून को गरदिश करते हुए खुशकी या गरमी का जियादा सदमा पहुंचता है तो गरदिश में फरक पड़ने से फौरन बच्चे के मुख में झाग आकर बच्चा बेहोश होजाता है बहुत से बच्चे सोए के सोए रह जाते हैं हमारे मुलक में जब बच्चों को यह बिमारी आती है तो मूर्ख स्त्रियें उनको खूब कपडों में लपेट कर दबा कर बैठ जाती हैं कमेडे की हालत में मूंह से झाग आने के कारण मूंह बन्द हो जाता है खून की गरदिश कम होने के कारण

नाक से दम बहुत कमजोर आता है इधर तो बच्चे का दम कमजोर होता है उधर मुंह बन्द होता है ऊपर से स्त्रियें उस का मुंह खूब कपड़ों से ढक कर उसे गोद में लको कर बैठ जाती हैं बस दम रुकने के कारण वह मरा का मरा रह जाता है कपडों में जो लकोती हैं सो यह बीमारी सरदी से तो नहीं है यह तो खून की गरमी खुश्की से है इसलिये जब कभी किसी बच्चे को कमेडा आवे तो उस का मुंह हरगिज मत ढको अपने हाथ की अगुली बच्चे के मुंह में फौरन देदो ताकि उस के मुंह की जबाडी बन्द न होने पावे जबतक उसे होश न आवे मुंह से अगुली मत निकालो जब वह रोने लगे तब निकालो अगर बच्चे के दांतों से अगुली कट जाने का डर हो तो या तो पहले जरा सी कपड़े की कत्तर अगुली पर लपेट लो। नहीं तो किसी छोटी कड़छी या चमचे की डंडी या कलम आदि से ही मुंह खुला रखो। कमेड़ा आतेहीजरासा दूध सौलनिवाया करके यानि जरागरमकरकेचमचे से या तूतीयां रूई के फोए से उसके मुंह में डालदो दूध डालने में देर मत करो यदि दूध मयस्सिर न आसके तो जरा गरम कर के जरा सा पानी ही डालदो परत बहुत न डालना दो ३चमचे काफी

हैं यानी दो रुपये भर पानी काफी है, और एकसाथदबादब मत डालो क्यों कि उसवक्त उसका दम कमजोर होता है जब एक दफे का डाला हुआ उस के अन्दर चला जावे तब दूसरे मरतबे डालो इस मरज की सब में बढिया दवा एंटीपाईरीन (Antipyrin) है यह एक अगरेजी दवाई हैं बुखार दूर करने को भी दूध के साथ खिलाई जाती है जिस के बच्चे को कमेडे आते हों डाक्टर से या अगरेजी दवा वेचने वाले से लाकर एक शीशी में रख छोड़ जब कमेडा आवे झट में जरासा दूध गरम कर के एक चमचा दूध में यह दवाई मिलाकर बच्चे के मुंह में डालदो अगर बच्चा आठ दस वर्ष का होतो दो रत्ती यदि दो वर्षओर आठ वर्ष के बीच में हो तो केवल एक रत्ती मिलाओ और अगर दो वर्ष से कम उमर का हो तो केवल आध रत्ती ही मिलाओ परन्तु इस मौके पर देरी मतकरो झट पटकल से हो देदो, जिस बच्चे के अन्दर एक बार यह दवा लगगई तो फिर उस को कोई चिन्ता नहीं जरूर जरूर थोडी देर में वह रुदन करने लगेगा, और होश आजावेगी यदि बच्चे को थोडी देर तक सांस न आवे तो बच्चे को चार पाई पर लिटा दो दो आदमी बच्चे के दोनों पासे बैठ कर उसकी दोनों बाहें

ऊपर नीचे को हिलाते रहो यह न करना, कि बांह का हाथ वाला पासा हिलाते रहो नहीं पिछले बाजू समेत हिलाओ ताकि बांह के हलाने से बगल तक हरकत पहुंचे और खूब ऊंचे नीचे करो बांहों को इसप्रकार करने से फेफड़े को हरकत पहुंचती है फेफड़े को हरकत पहुचाने से जरूर दम आना शुरू होजाता है सो यदि इस प्रकार एक घण्टे तक बच्चे को बांह हिलाई जावे तो बच्चा जरूर सांस लेना शुरू कर देवेगा बिलायत में अनेक बच्चे दम रुकने से मरे हुए इस प्रकार तीन चार घण्टे तक बांहें हिलवा कर डाक्टर जिवा देते हैं॥

यदि ऐंटीपाइरीन न मिले तो ऐंटीफेब्रीन (Antifebrin) का इस्तेमाल करो। इस की खुराक भी ऐंटीपाईरीन जितनी देनी चाहिये॥

अगर यह भी न मिले तो ब्रोमाइड आफ पोटाश (Bromide of Potash) दो इस की खुराक एक वर्ष तक के बच्चे के लिये एक रत्ती और १ वर्ष से पांच वर्ष की उमरतक के बच्चे के लिये दो रत्ती और ५ से दश वर्ष तक की उमर के बच्चे के लिये तीन रत्ती देनी चाहिये यदि इन तीनों अंग्रेजी दवाइयों में से एक भी फौरन न मिले तो सुफैद रंग

की दूब (घास) जो अकसर करके खेतों में मिल जाता है लाकर उस के दो चार पत्ते एक काली मिरच के साथ रगड़ कर जरा से पानी में घोल कर छान कर जरा गरम कर के दे दो। यदि कुछ भी न मिले तो जरा जरा सा गरम पानी ही जरूर देना चाहिये परन्तु देर नहीं करनी चाहिये जिस वकत उस के मुंह में झगड़ आवें फौरन दूध या पानी को बीस तीस बूंदें मुंह में डाल दो खालिस दूध भी इस बिमारी के दूर करने को बड़ी दवाई है सफेद रंग की दूब इस मरज के रफे करने को एक बड़ी मुफीद जड़ी है यदि सुफैद न मिले तो हरी दूब ही रगड़ कर दे दो इस प्रकार इलाज करने से बच्चा फौरन अच्छा होजावेगा॥

अंग्रेज़ी दवाई

अंग्रेजी दवाई बड़ी पुर असर होती हैं, मिनटों में मरज खोती हैं यह दवाइयों के सत निकाले हुए हैं जितना फायदा देसी पाव भर दवा के खाने से होता है उतना फ़ायदा अंग्रेजी एक रत्ती दवा खाने से होता है देसी दवाइयों का फायदा या न फायदा कई दिन में मालूम होता है अंग्रेजी दवा तत्काल परचा देती है देसी इलाज और अंग्रेजी इलाज

में जमीन आसमान का फरक है अंग्रेजी दवाई सरजीवन बूटी हैं और खास कर बच्चों का इलाज अंग्रेजी ही करना चाहिये क्योंकि अंग्रेजी में ही बच्चों का हर बिमारी का इलाज है देसी वैद्य हकीमों पर बच्चों का पुर असर कोई इलाज नहीं है वैद्यों के पास बुखार उतारने की और दुखती हुई आंखे अच्छी करने की कोई दवाई नहीं हैं डाक्टरअरत मार कर बुखार उतार सकते हैं घण्टों में बडी भारी सूजी हुई आंखे अच्छी कर सकते हैं जर्राही में तो डाक्टर खुदाई दावा रखते हैं इसलिये जहां तक हो अंग्रेजी इलाज करना चाहिये सर्व में उमदा इलाज अंग्रेजी है उस से उतरकार युनानी है युनानी भी बडे बडे हकीम हुए है और हैं तपस की मौसममें बुखार का इलाजतो युनानी ही करना चाहिये इनकी दवा ठण्डी होने के कारण कलेजा तर होता चला जाता है गरमी का तावलगे और मोहर के बुखार वाले इनसान को सिरफ युनानी ही बचा सकते हैं बाकी वैद्यों का इलाज भूख में रोटी न मवसिर आने के समय दरखतों के पते खा कर गुजारा करने समान है यह लोग यातो काष्ठ वरततेहैं या धात सो काष्ठोंमें तो असरकम है औरजो मरीज धातु का कुसता खावैठते हैं उन के शरीर में अनेक बिमारी

हो जाति हैं मांस खराब होजाता है वह बहुत जलद मरजाते हैं इसलिये धातुका कुश्ता खाने समान कोई जुलम नहींइस पाठके पढ़ने वालों को धातु के कुश्तेका यावज्जीव त्याग कर देना चाहिये और जो भोले भाई कलयुगि नातजरबेकार पण्डितों के बहकाने से अंग्रेजी दवाइ का त्याग कर बैठते हैं यह उन की सखत गलती है क्योंकि सारी अंग्रेजी दवाइयों में दोष नहीं अनेक पवित्र हैं देसी दावाइयों में भी तो सारी अच्छी नहीं उन में भी तो बहुत बुरी हैं जैसे गऊ-लोचन किसतूरी मिमाई तिरयाक शहद वगैरा इसलिये पवित्र दवा के खाने में कोई दोष नहीं है रही छूआ की बात कि यह अंग्रेजों की बनाई हुई है सो काला नमक सतगिलो सत मलहटी जवाखार सत सलाजीत सत वैरजा शीरखिशत कत्था हिंग अनेक देसी दवाइयें ऐसे मनुष्यों की बनाईहुई आतीहैं जिनको हम छू भी नहीं सकते पसारी लोग गुलकंद डालने के समय फूलोंमें अनेक जीवमल देते हैं शरवतमुरब्बों में अनेक जीव लापरवाही की साथ मिला देते हैं उन को कौन नहीं खाता है। हलवाइयों के यहां मिठाइयोंमें अनेक मक्खी और जीव मिल जाते हैं गुड़ को चमार चमड़े के हाथों से बान्धते हैं कोरी खांड को सुकाते हुए उस

पर कुत्ते मूत जातेहैं चमार वगैर: पैरों से मलते हैं कौनसा पंडित है जो इन चीजों को नहीं खाता पस यह बाद विवाद करना नावाकिफियत है इस लिये अंग्रेजी दवा जरूर खानी चाहिये इस में कुछ दोष नहीं यह तो देवताओं का भोग है अब हम थोडे से अंग्रेजी नुखसे लिखते हैं इन में सर्व पवित्रदवा इस्तेमाल करी गई हैं इन सर्व दवाइयों में डाक्टरों ने बडे मनुष्य की खुराकका मिकदार लिखा है बच्चो को जितनी उमर कम हो उसे उतनी ही कम देनी चाहिये जब अंग्रेजी दुकानसे दवा खरीदो उस से दरयाफत करलो कि किस तरह देवें बिमारको उमर इतने साल की है उसे कितनी देवें और अंग्रेजी दवा बहुत तेज होती है मिकदार से जियादा नहीं देनी चाहिये और शिशिया अच्छी तरह सम्भाल कर उसमें से देनी चाहिये ताकि गलती से दूसरी दवा न दोजावे इन नुसखों में बहुत से नुसखे डाक्टर जयचन्द्रजैनी बीए एम बी० असिसटैंट टूकमीकालभगजेमिनर गवर्मिंटपन्जाब केहैं बाकी दूसरे डाक्टरोंके हैं कुछ वह हैं जोसकारी होसपिटल में वरते जाते हैं ॥

पूरी उमर वालोंकेलिये नुसखे

पेट का दरद दूर करने की दवा

R,

Liq. Morphia Hydrochlor	...	M X
Acid. Hydrocyanic Dil	.	M II
Olei Menthae Pip	...	M II.
Acid Sulph Dil	...	M X.
Spt Chloroformi	...	M. XV.
Tinct Capsici	..	M V.
Aquæ Menthæ pip	...	ad oz. I.

Every four hours till pain stops.

एक एक खुराक चार चार घण्टे के बाद पीवे ॥

दिमाग को ताकत देने की दवा

R

Pil Phosphori	.	Gr. SS.
Extract Nuc Vom	...	Gr. SS
Ferri. et Quin cit	.	Gr. II.
Ferri Phosphatis	..	Gr. I
Ext. Hyocyami		Gr I.

M. ft pil

One pill every night at bed time.

एक गोली रात को सोते वकत दूध या पानी के साथ प्रति दिन खावे ॥

भूख बढाने और हाजमा करने की दवा

R,

Tinct. Nuc. Vom.	.	M. V.

Acid Nitro Muriatic Dil	...	M. X.
Spt. Chloroformi	...	M XV.
Tinct Quassiæ	...	M XX.
Acquae Menthae pip		ad. oz I.

Twice a day after meals.

खाना खाने से आध घण्टा बाद दोनों वक्त एक एक खुराक पीवे ॥

बुखार रोकने की दवा

R,

Quin Sulph		Gr III
Mag Sulph	.	dr I
Acid Sulph Dil		M XV.
Aqua		ad. OZI.
M Ft. mist		

One ounce three times a day

बुखार उतर जाने के बाद एक एक खुराक सुभे प्रयाम दुपहर का यानि दिन में तीन वार पीनी चाहिये ॥

बलगमी खांसी दूर करने की गोलियां

R,

Pil Scilla Co. Gr V

Three times a day.

एक एक गोली तीन वार प्रति दिन पानी से खावे ।

दस्तावर गोली ।

R,

Resini Podophyli . . Gr. ½

Aloin		Gr $\frac{1}{2}$
Pil Hydrargyri	...	Gr II.
Pil Colocynth et Hyocyami		Gr. II

M. ft pil.

One pill to be taken at bed time

एक गोली सोते वकत गरम दूध या गरम पानी से खावे

खुशक खांसी दूर करने की दवा

℞.

Vini Ipecac		dr I
Vini Antimoniales		dr I.
Tinct Camphor Co	...	dr $1\frac{1}{2}$
Tinct Scillae		dr $1\frac{1}{2}$
Spt Ammon Aromat	..	dr II
Aquæ Camphor ad		oz VIII

M ft. mist

One ounce every six hours.

एक एक खुराक छै छै घण्टे के बाद पीवे ॥

तिल्ली दूर करने की दवा

℞,

Quin. Sulph		Gr V
Acid. Sulph. Dil	..	MX
Ext. Ergotinae Liquidi		MXXX
Aquae	.	ad. oz I

Three times a day

एक एक खुराक दिन में तीन बार पीवे ॥

बुखार उतारने की दवाई

℞,

Pot. Nitratis	...	dr II
Pot. Acetatis	..	dr I
Spt Etheris Nitrosi	.	dr III
Liq Ammon. Acetatis	.	oz I.
Aquae purae	ad	oz VIII

M ft mist.

One ounce every four hours

जब बुखार चढा हुवा होवे तो एक एक खुराक चार चार घटे बाद पीनी चाहिये इस से बुखार उतर जावेगा ॥

आंख और कान के दरद दूर करने की दवाई

R,

Atropine	..	Gr IV
Cocaine	..	Gr III
Aqua Destillata	...	oz I
Fiat Lotio	...	

Two drops to be put into the affected ear or eye twice a day

दो बूंदें दुखने वाली आंख या दरद वाले कान में सुभे और प्रयास को प्रति दिन डालें ॥

नींद लाने वाली दवाई

R,

Pot Bromidi	...	Gr. XV
Chloral Hydrate	...	Gr. XV.

Aqua . oz I
Draught, to be taken at bed time

अगर किसी को नींद न आती हो या जिसम में दरद सखत हो या बेचैनी हो तो सोती दफे एक खुराक इस दवा को पीवे तमाम तकलीफ मेट कर नींद लावेगी ॥

पेशाव कम करने की दवाई

R,

Liq Morphia Hydrochlor	MX
Tinct Belladonæ	MV.
Aqua ..	oz I

To be taken three times a day

एक एक खुराक दिन में तीन वार पीवे जिस का पेशाब बढ गया हो इस दवा के पीने से घट कर ठीक दरजे पर आजावेगा।

बायुका दरद दूर करने का मालिश का तेल

R,

Linimenti Ammoniæ	dr. IV
Linimenti Terebinthinæ .	dr. IV.
Linimenti Belladonæ .	dr. IV
Linimenti Camphori	dr. IV

इस तेल से जहां वायु का दरद हो प्रति दिन दो दफा मालिश करे ॥

दुखती आंखे अच्छी करने की दवा

R,	Zinci Sulphatis	.. Gr III
	Aquæ Destillatae	. oz I.

Two or three drops to be put into the sore eye twice a day

आंख पानी से धोकर दिन में दो वार इस दवा की दो या तीन बूंद दुखती हुई आंख में डाले।

दस्त बन्द करने की दवा

R,	Tinct. Kino	MX
	Tinct Catechu	MX.
	Tinct Hæmatoxyli	MX
	Mist cretæ	ad oz I

Make a mixture one such dose after every 6 hours

जिसको बहुत दस्त आते हों और बन्द न होते हों, तो इस दवा की एक एक खुराक छै छै घण्टे बाद पीवे फौरन आराम हो जावेगा॥

बुखार उतारनेकी पुड़िया

R,		
	Phenacetin	... Gr. X
	Beberinæ Sulphatis	. Gr V.
	Salicine	... Gr V.

Make one powder, use one such powder three times a day.

जिस का बुखार न उतरता हो तो पानी के साथ एक एक पुडिया दिन में तीन बार खावे कैसा ही सखत बुखार चढ रहा हो जरूर उतर जावेगा, इस दवा को खाकर जरा कपडा ओढकर पसीना लेना चाहिये ॥

आंखमें रोहे होजावें तो उनके दूरकरनेकी दवा

R,

Acid Boric		Gr X
Alum Sulph		Gr IV
Cocaine Hydrochlor	..	Gr. III
Aq Dist.	..	oz I.

Two or three drops to be put into the eye twice a day.

दो या तीन बूंद आंख में प्रति दिन दो वार डाले रोहे जाते रहेंगे आंख साफ रहेगी नजर के ठीक रखने को यह वडी उमदा दवाई है ॥

बुखार को तोडने की दवाई

R,

Cinchona febrifuge		10 grains.
Sulphate of Magnesia		½ ounce.
Sulphuric Acid dilute		½ drachm
Aqua	..	oz. II.

One ounce to be taken three times a day.

अगर बुखार में कब्ज भी होवे तो यह दवा दिन में तीन बार ढाई ढाई तोले पीवे तो दस्त भी आवेगा और बुखार भी टूट जावेगा ॥

तिल्ली दूर करने की गोलियां

R,

Cinchona febrifuge	4 grains.
Sulphate of Iron .	2 grains.
Arsenious Acid .	$\frac{1}{30}$ grain

Make into a pill with mucilage
One pill three times a day.

एक एक गोली दिन में तीन बार पानी से खावें।

हैजा दूर करने की दवा

R

Sulphuric Acid dilute	20 minims.
Sulphate of Iron	3 grains
Water .	2 ounces.

One ounce to be taken after every 6 hours

ढाई ढाई तोले छै छै घण्टे के बाद पीवे ॥

बदहजमी दूर करने की दवा

Liquor Strychnia ..	5 minims.
Spirits of Chloroform	10 minims.
Infusion of Rhubarb ...	½ ounce.

Soda Bicarbonate	10 grains
Peppermint water	. ½ ounce.

To be taken twice a day before meals.

एक एक खुराक दिन में दो वार खाना खाने से आधाघंटा पहिले पीवे ॥

बवासीर दूर करने को खाने की दवा

R,

Black pepper in fine powder	20 grains.
Sulphur in powder	. 20 grains

One such powder to be taken twice a day

एक एक पुडिया दिन में दो वार पानी के साथ खावे

बवासीर दूर करने का मरहम

R,

Gall and Opium ointment
For local application

मसों के ऊपर दिन में दो वार लगावे ॥

दमा दूर करने की दवा

R,

Tinct of Lobelia	. 20 minims.
Spirits of Chloroform	. 10 minims.
Iodide of Potassium	. 6 grains.
Bromide of Potassium	10 grains.
Water	... 2 ounces.

M. ft. M one ounce to be taken three times a day.

ढाई ढाई तोले दिन में तीन बार पीवे ॥

जलोदर दूर करने की दवा

R,

Tincture of Digitalis	15 minims
Tincture of Muriate of Iron	15 minims.
Sweet Spirits of Nitre	... 20 minims
Water	2 ounces.

M ft Mixt one ounce three times a day

ढाई ढाई तोले दिन में तीन बार पीवे

दाद और छीप दूर करने को पीने की दवा

R,

Liq Arsenicales	M.V
Aquæ puræ	. ad. oz I

Ft Mist

To be taken three times a day after meals

जिसके मुह पर वा बदन पर छीप वा दाद होवे तोखाना खाने के बाद एक एक खुराक प्रतिदिन तीन बार पीवे ॥

दाद और छीप दूर करने को लगाने की दवा

R,

Unguentum Chrysarobini.
For local application.

छीप के या दाद के ऊपर दिन में तीन बार लगावे ।

जुकाम दूर करने की दवा

R,

Pulvis Antimonialis .. Gr IV.
Pulvis Ipecacuahnæ co Gr VIII
Hydrargyri Subchloridi . Gr II.
M, Ft. pulv
To be given at night

रात को गरम पानी वा गरम दूध के साथ खाकर सो जावे ॥

कै बन्द करने की दवा

R,

Bismuthi subnitratis Gr X.
Acidi Hydrocyanici Dil M III.
Mucilaginis Tragacanthæ .. Q S.
Syrupi Zingiberis di SS
Aqua ... ad oz. I
M, Ft Haustus
Signa Let it be given after every two hours till the vomiting stops It can be giveu upto 3 doses

जब तक कै बन्द न होवे दो दो घण्टे के बाद एक एक खुराक पिलाते रहो ॥

कै करवाने की दवा

R,

Pulv Ipecac ... Gr. XX.

जिस को के करवानी होवे उसे यह पुड़िया गरमपानी के साथ खिलादेनी चाहिये जरूर के आवेगी

कमेडा दूर करने की दवा

℞,

Pulvis Rhei Co.	.	Gr. XX.
Gum Ammoniaci		Gr X
Balsam Peru	.	MX.
Balsam Tolu	..	Gr X
Syrupi Scillae	...	dr II.
Olei Anisi	..	MVI
Olei Anethi	.	MV
Infusi Senegae		dr IV
Aquae Camphori	.	dr. IV

M, Ft Mixture

Signa A Teaspoonful to be given every four hours.

एक ड्राम यानि साठ साठ बून्द चारचार घण्टे बाददेवे जब कमेडा उठे एक छोटा चमचा भरकर यानि ६० बूंद फौरन कमेडे वाले बच्चे को देवे ॥

पिशाब में चीनी आती हुई को रोकने कीदवा

℞,

Codeia	..	Gr. ½
Opium	..	Gr. I.

Ft. pill : One such pill to be taken three times a day.

एक एक गोली दिन में तीनबार पानी से खावे।

जियादा पियास दूर करने की दवा

℞,

Citric acid	. dr SS.
Glycerini	dr II.
Aquam Ad.	. oz XII.

M, Ft Mist

Half an ounce to be taken every hour

सवा सवा तोला घण्टे घण्टे के बाद पीवे।

सूजाक दूर करने की दवा

℞,

Olei Santali Flavi	dr I
Olei Cubebi	. dr I.
Liq Potassi	... dr II
Tinct Hyocyami	.. dr III.
Olei Cinnamomi	... MXX.
Infusi Buchu ad	... oz. VI.

M, ft. mist.

Signa 1 Ounce three times a day

ढाई ढाई तोले दिन में तीन बार पीवे।

खुजली दूर करने का मरहम

℞,

Sulphur	... OZSS.
Pot. Carb	... dr II.
Axungiæ	... OZII

M, ft. Oitt.

For local applieation.

जहां खारिश हो दिन में तीन वार लगावे ॥

गंठिया दूर करने की दवा

℞,

Pulv Guaici	... Gr. XV.
Mucilag. Acaciæ	. dr I.
Potassii Nitrat	... Gr. V.
Syrupi Papaveris	dr. SS.
Aq cinnamomi	. ad. OZI.

M. Three times a day.

एक एक खुराक दिन में तीन वार पीवे ॥

हेजा दूर करने की दवा

℞,

Pot Chloratis	.. dr. I
Acid Hydrochlor Dil	.. oz. SS.
Close the bottle shake and add :	
Aquæ puræ	. OZXXI.
Liq Calcis	OZII.
Acid Sulph Dil	... OZSS.
Liq Morphia	... dr. II.
M Ft Mist	.

One ounce after every 2 hours

ढाई ढाई तोले दो दो घण्टे बाद पीवे ॥

वलगमी खांसी दूर करनेकी दवा

℞,

Iothyol ... . MV.

Aqua . . ... oz.I
Three times a days
एक एक खुराक दिन में तीन वार पीवे ॥

बच्चों का इलाज ॥

दूध पीते बच्चों के मरोडे वाले दस्त बन्द करने की दवा

℞,

Dover's powder	¼ grain
Ipecacuahna powder	1 grains.
Aromatic Chalk powder	3 grains

One such powder three times a day.

अगर दूध पीने वाले बच्चों को मरोडे लगे हुवे होवें तो एक एक पुडिया माता के दूध में घोल कर चमचे या सीपी से दिन में तीन वार देवे तो बच्चा अच्छा होजावे ।

बच्चे के दस्त रोकने की दवा

℞.

Calomel	$\frac{1}{12}$ grain
Aromatic Chalk powder	2 grains

One such powder after every two hours.

अगर बच्चे को पतले बहुत दस्त आते हों तो दो दो घण्टे के बाद एक एक पुडिया माता के दूध में घोल कर देवे तो दस्त बन्द होजावेंगे ॥

बच्चों का कवज दूर करने की दवा

R,

Sulphate of Magnesia	4 grains
Sulphuric Acid dilute	2 minims
Sulphate of Iron ..	½ grain
Peppermint Water ..	1 drachm

One such dose three times a day

अगर बच्चों को कवज हो दस्त ठीक न आता होवे तो यह दवा एक एक खुराक दिन मे तीन वार देवे जरूर दस्त आने लगेगा ॥

बच्चों की खुशक खांसी दूर करने की दवा

R,

Ipecacuanha Wine	3 minims
Carbonate of Ammonia	½ grain
Mucilage	10 minims
Water ..	1 drachm

One such dose three times a day

एक एक खुराक दिन में तीन वार पिलावे ॥

बच्चों के चुरणे दूर करने की दवा

R,

Tincture of Muriate of Iron ..	5 minims
Sulphate of Magnesia ..	10 grains
Water ..	½ ounce

One such dose twice a day.

एक एक खुराक दिन में दो वार पिलावे

दस्तलाने वाली दवाई ॥

जब कबज हो रात को फरूट सालट (Fruit salt) एक तोला पानीमें घोलकर पीलेवे ऊपरसे गरम दूध पीलेवे सुभे को दस्त खुल कर आजावेगा या आधा डरामकैसकरा (Cascara)ढाई तोले पानी में मिलाकररातकोपीलेवेयासोडा बाइकारबानेट एक डराम टार्टरिकएसिड आधाडराम दोनों को अलग अलग पानी में घोलकर मिला कर पीले सुभे को दस्त खुलकर आजावेगा अगर मामूली जुलाब लेना होवे तो सुभे ही तीन तोले अरंडीका तेल (Castoroil) गरम दूध में डालकर पीलेवे या तीन तोले मगनेशिया (Magnesia) पानी में घोल कर पीलेवे या एक डराम पल्व जैलपकम्पाउण्ड आधा डराम यानि १५ रत्ती मूहमें डालकर ऊपर से गरम पानी पीलेवे अगर इस के बाद फिर पियास लगे तो सौंफ और गाजवान का अरक मिलाकर गरम कर के पीले इससे चार पांच दस्त आकर तबीयत साफ होजावेगी।

पक्की रोशनाई बनाने की तरकीब

लाख वीस तोले सज्जीएक तोला सुहागा एक तोला एक कडाई में तीन सेर पक्का पानी अग्नि पर पकना

रख देवे परन्तु आग बहुत तेज न बाले मिठी मिठी बाले जब पानी पकने लगे उस में लाख डाल देवे एक लकड़ी से हिलाता रहे फिर थोडोसी हो देरी बाद उस में सजी कूटकर डाल देवे जब पकते पकते लाखका रंग पानीमें आजावे तब उस में सुहागा कच्चा हो कूट कर डाल देवे फिर थोडो देर बाद उस में से कलम भर कर कागज पर लिख कर देखे जब कागज पर हरफ न फूटे उमदा लिखने लगे तब उतार कर छान लेवे फिर उस में काजल डाल कर रगडे जब काजल उस में मिलजावे तब बोतल लें भरकर रख छोडे यह उमदा रोशनाई है जब चाहे दवात में डाल कर लिखा करे इस श्याही में गूंद नहीं डालना अगर करडी होजावे तो जब पाणी डालना हो पका कर गरम गरम डाले ठंडा पाणी और कच्ची रोशनाई की कलम इस में नहीं डाल णी डाली जावे तोश्याही फटजावेगी ॥

घोडे का बचाव

बहुत से घोडे जब सबज चने यानि बूट (छोलिया) चलतेहैं तब मरते हैं बूट घोडे के पेट में जाकर जमा हो जाते हैं बन्द पडने से मरजाते हैं सो एक घोडे को दस सेर

कूट से इर गिज भी जियादा न देवे और बूटों को पानी में धोकर उनकी जडी काटकर फेंकदेवे उनके कडवा तेल मल कर फिर खिलाने चाहिये ऐसा करनेसेपेटमेंबोच्चानहींबंधता जब घोडा सफर करके आवे उसे आवतसार न तो न्हलावे न पानी पिलावे, जब वह घण्टे दो घण्टे में ठंडा होजावे अगर पानी वगैरा पिलाना होवे तो तब पिलावे ॥

घोड़े का मसाला

काङू बीस तोले, नमक स्याह पांचतोले, नमक लाहौरी पांच तोले, नमक मनयारी पाच तोले, नमकसाभर ५ तोले. नौसादर पांच तोले, सोए के बीज पाच तोले मिरच स्याह पांच तोले, लौंग पांच तोले, मोचरस ढाई तोले, हिंग लहस-निया ढाई तोले पलासपापडा पाच तोले, सोंठपाच तोले देसी अजवाइन दस तोले राई दस तोले मेथी दस तोले सुहागा पांच तोले कचरीदस तोले कालीजीरी पांच तोले बंडाल के छोडे दस तोले सौंफ दस तोले जीरा सफेद ५तोले इलायची छोटी ढाई तोले इलायचीबडी ५तोले कलोंजी ५तोले ।

इन सब दवाइयों को कूट कर रख छोडे इस में से पांच वर्ष तक वाले घोडे को पांच तोले छ वर्ष से नौ वर्ष वाले

को आठ तोले इस से जियादा उमर वाले को दस तोले थोडे मे चने के चून में मिलाकर पेडी बनाकर तीसरे या चौथे दिन दिया करे जब यह मसाला घोडे को देवे तो उसे काजाकरदेवे यानि उस के मुह में लगाम डाल कमर के ऊपर को उस की दुम में बांध देवे दो घण्टे इस प्रकार बन्धा रहे जिस घोडे को इस तरह यह मसालामिले वह खूब तेजचलेगा खूबखाये पीवेगा और तनदुरस्त मोटा ताजा रहेगा॥

घोड़े का जुलाब

राई दस तोले शकर वीस तोले राई को कूट कर गुड़ और राई को काक यानि दही के पानी में दो दिन सडावेफिर घोडे को नाल से देवे तो घोडे को फौरन जुलाब होगा ।।

घोड़े के दरद की दवा

खारी नमक पांच पांच तोले नौसादर पाच तोले जौखार पाच तोला सुहागा पाच तोले ॥

इन सब दवाइयों को कूट कर वीस तोले सिरके में मिलाकर नाल से देवे उस दिन घोडेको पानी न पिलावेअगले दिन पिलावे इस से घोडे का दरद फौरन दूर होजावेगा या

राई नमक सुहागा यह तीनों कूट कर सिर के में मिलाकर देवे इस से भी घांडे का दरद अच्छा होजाता है ॥



स्त्रीका गर्भ न गिरने देनेवालीदवा

viburnum Prunifolium

यह दवाई खुश्क भी होती है और तर भी होती है सो जिस स्त्री का हमल गिर गिर पडता होवे जब उसे गर्भ रहे तो दोनों वकत यह दवा खाया करे इस के खाने सेफिर हमल नहीं गिरेगाअगर दवाई तर मिली है तो ढाईतोलेपानी में इस की बीस बून्द डाल कर पिया करे अगर खुश्क है तो तीन रत्ती ढाई तोले पानी मे डाल कर पिया करे

विच्छू का जहर दूर करने का मन्त्र।

अगर किसी के विच्छू काट जावे तो फौरन जिस जगह काटा होवे उसके ऊपर राख रख कर जखम को अंगुली से दबावे फिर लोहे की कुछ वस्तु हाथ में लेकर जखम के ऊपर फेरता जावे और २१ बार यह मन्त्र पढे।

मन्त्र-ओंआदित्यरथवेगेन विष्णोर्बाहुबलेन च।
सुपर्णपक्षपातेन भूम्यांगच्छ महाविष ॥ १ ॥

झोपक्ष जोगपदत्तश्री शिवोत्तमप्रभुपदाज्ञा। भूम्यां गच्छ महाविष ॥

यह मन्त्र २१ बार पढे, डक के ऊपर से राख दूर कर यह दवा लगा देवे।

जमालगोटे को पाणी में घिसकर विच्छूके डकके ऊपर लगावे अथवा नशादर.हरताल पाणीमें घिसकर डकके ऊपर लगावे तो विच्छू का विष दूर होवे ॥

मसान दूर करने का यन्त्र

ऊन	२५	२५	वरी
वरी	२५	वरी	२५२
२५२	२५२	२५२	२५२
वरी	वरी	वरी	वरी

जिसको मसान की बिमारी होवे उसके गलेमें यह यन्त्र लिखकर बांध देवे फिर मसान का असर न रहेगा॥

॥ इति सम्पूर्णम् ॥

सूचीपत्र

हमारे पुस्तकालय में यह पुस्तकें बिकती हैं।

सूचीपत्र

हमारे पुस्तकालय में यह पुस्तकें विकती हैं।

श्रीपद्मपुराण भाषा वचनिका २२००० श्लोक ८) मोक्षमार्गप्रकाश २॥) आत्मानुशासन २) हिन्दी की पहली)। जैन बालकों का गटका)॥ एकीभावसंस्कृतभाषा)॥ निर्वाणकाण्ड भाषा)। सामायिक)॥ दशआरती)। विषापहार संस्कृतऔर भाषा)॥ भक्तामर संस्कृत और भाषा /) वैराग्यभावना)। शास्त्रोच्चारण)। ब्याहला नेमिनाथ)॥ बारहमासा राजिल /) प्रश्नोत्तर नेमिनाथ राजिल)॥ बारहमासा सीता)॥ शिखर माहात्म्य सार)॥ दर्शन कथा ≶) जैनपदसंग्रह प्रथमभाग /)॥ बाईसपरीषह)॥ चार पाठसंग्रह /) अठाईरासा)। इष्टछत्तीसी)॥ निर्वाणकाण्ड गाथा)। बारहमासा वज्रदन्त)॥ आलोचनापाठ)॥ पंचमंगल पाठ)॥ सहस्रनाम)॥। कर्मचरित्र ≶) संकटहरण)। पदसंग्रह दूसराभाग /) अध्यात्मपचासिका)। तत्वार्थसूत्र मूलसंपूर्ण /) पदसंग्रह तीसरा भाग /) १०५ भाषा जैन ग्रन्थों की नामावली /) जैनतीर्थयात्रा|।) इनके इलावे और भी पुस्तकें हैं ॥